वल्लकी

"गीत एवं कविता संग्रह"

श्रीमती कुसुम चौधरी
विजय कुमार सिंह

वल्लकी

Vallaki

"गीत एवं कविता संग्रह"

◆

श्रीमती कुसुम चौधरी
विजय कुमार सिंह

© अखिल पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स

इस पुस्तक अथवा इस पुस्तक के किसी अंश को इलैक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटो कॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य सूचना संग्रह साधनों एवं माध्यमों द्वारा मुद्रित अथवा प्रकाशित करने के पूर्व अखिल पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

प्रथम संस्करण - 2009.

प्रकाशक एवं मुद्रक :

अखिल पब्लिशर्स एण्ड प्रिन्टर्स

11, प्रथम तल, जिला परिषद् मार्केट, कोर्ट रोड, काला आम,
बुलन्दशहर - 203 001, उत्तर प्रदेश, भारत.
मोबाइल : +91-9412744467.

माँ

एवं

भारत-ऑस्ट्रेलिया मैत्री

को समर्पित

◆

Dedicated to

Mother

&

Indo-Australian Friendship

इस संकलन के प्रथम भाग में क्रम संख्या 2 से 38 आदरणीया जीजी श्रीमती कुसुम चौधरी (मेरी धर्मपत्नी की बड़ी बहन) धर्मपत्नी श्री महावीर सिंह की रचनाएँ संकलित हैं । इनका रचना काल वर्ष 1974 से 1999 है । अधिकांश रचनाएं विशेष अवसर को ध्यान में रखकर रची गयी हैं व युवा मन के लिये प्रेरणादायी हैं ।

मैं विशाल देश ऑस्ट्रेलिया व उसके उदारमना निवासियों को प्रणाम करता हूँ, जहाँ मेरी काव्य साधना आरम्भ हुई । मैं नेशनल मेज़र्मेन्ट् इन्स्टीट्यूट (NMI), सिडनी के सहृदयी साथियों का हार्दिक आभारी हूँ, जिनके साथ मुझे विचारों के आदान-प्रदान करने का सुअवसर प्राप्त हुआ ।

श्रद्धेय कविमन डॉ० निहाल सिंह 'अग्र' - नीरा भाभी, श्रद्धेय ब्रजपाल सिंह - सुधा भाभी, डॉ० सतवीर सिंह - अर्चना भाभी एवम् अजय-नमिता, सुजय-आशा, मानस-एकता, हिमाद्रि, सुलभ, ऋषभ, सुचेत, शिवांक ने सदा मुझे उत्साहित किया है । मैं सम्मान्या (स्व०) श्रीमती कुमार भाभी जी को अन्तरतम से नमन करता हूँ जो मेरी अनेक रचनाओं की प्रेरणा-स्रोत रहीं ।

श्रद्धेय राजवीर सिंह - पुष्पा जीजी, डॉ० के०पी० सिंह - ऋतु भाभी एवम् स्नेही डॉ० प्रकाश - डॉ० बीना (छोटी बहन), उमेश-शिवानी, आशीष-तृप्ति ने सदा मुझे रचनात्मक प्रेरणा दी है ।

मैं श्रम विभाग, उत्तर प्रदेश के सभी अधिकारियों एवम् साथियों का आभारी हूँ जिनसे मुझे अपार स्नेह व सहयोग मिला है ।

श्रद्धेय कविमन डॉ० जे०पी० शर्मा, श्री बी०पी० गुप्ता, श्री ए०के० मिश्रा, आदरणीय श्री बी०जे० सिंह, श्री कमल सिंह, श्री वी०के० जैन, श्री जे०बी० बंसल एवं स्नेही श्री बी०एन० दुबे व श्री एस०पी० मौर्य के सामीप्य से मैं सदैव लाभान्वित हुआ हूँ ।

मैं अपने मित्रगण नवीन जौहरी, तेजवीर सिंह, रज्जन बाबू, धर्मवीर सिंह, ब्रजमोहन अत्री, सुरेश चन्द्र वर्मा, दर्शन कुमार बंसल, रामेश्वर दयाल शर्मा, नरेश कुमार शर्मा, डॉ० प्रेमवीर सिंह से सदा प्रोत्साहित हुआ हूँ । इन सभी के साथ मैं अपने प्रिय मित्र स्वर्गीय अलताफ अहमद का भी हार्दिक आभारी हूँ जो अब हमारे बीच नहीं हैं, जिन्होंने मुझे सदैव सराहा ।

मैं आदरणीय श्री प्रमोद कुमार सिंह 'प्रणव' का आभारी हूँ जिन्होंने मेरी दो रचनाओं का अंग्रेजी में भावानुवाद किया है ।

अन्त में अपनी धर्मपत्नी चमन के लिए-

देखूँ मैं जिधर भी, मुझे दिखते हैं उजाले,
कुछ दीप मेरे साथ जलाए हैं किसी ने.....

संकलन में त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है । मैं सुधी पाठकों से अपेक्षा करता हूँ कि वे मेरा ध्यान इस ओर अवश्य आकृष्ट कराएंगे जिससे भविष्य में इनका निराकरण किया जा सके । ये रचनाएँ आप तक सम्प्रेषित हों, इस कामना के साथ व ईश्वर सभी को सुख, समृद्धि और शान्ति प्रदान करें, इस भावना के साथ अपनी बात को विराम देता हूँ ।

विजय कुमार सिंह
'अमर निवास'
पुलिस लाइन्स रोड,
बुलन्दशहर - 203 001
उत्तर प्रदेश, भारत

अनुक्रमणिका

1.	हम रात्रि की इस गहन कालिमा में	11
2.	आज मेहनत की बदौलत	13
3.	हमें करना है नवनिर्माण	15
4.	जीवित हैं आदर्श तुम्हारे	17
5.	मैं तो चलने का विश्वासी	19
6.	न जाने कहाँ ज़िन्दगी खो गई	21
7.	पंथ बुहार रही हैं अलकें	23
8.	स्वप्न पलकों को छल रहे मेरे	25
9.	मैं पीड़ाओं की आभारी	26
10.	स्वप्न आँखों में सजाए मैंने	28
11.	मैं खड़ी हूँ ज़िन्दगी के	29
12.	जब-जब भी इस वसुन्धरा से	30
13.	आज समय आ गया पधारो	32
14.	अखिल सृष्टि का एक रूप तुम	34
15.	कृष्ण कन्हैया मनमोहन बन	36
16.	आज़ादी की वर्षगाँठ की	38
17.	हम भारत के बाल सूर्य	39
18.	आज़ादी का पूर्ण सूर्य निकला	40
19.	बापू के बलिदान की, नेहरू के	41
20.	धरम बनके आए, करम बनके आए	42
21.	जब तक चमकते नभ में	44
22.	बागवां ने जिस चमन को	45
23.	ज़िन्दगी है आग पानी	46
24.	अमर सभ्यता के प्रतीक	47
25.	संकल्प एक है, उद्देश्य एक है	49

26.	हुआ है क़त्ले जिगर	50
27.	देवकी नन्दन दुख भय	51
28.	समय नहीं है दास किसी का	52
29.	कब तक मन को बहलायेंगे	54
30.	दीप ये अनुराग का जलता रहे	56
31.	ऐसी बहे प्रेम की धारा	58
32.	चाचा नेहरू आज तुम्हारा	61
33.	मैं जब इन गलियों में आऊँ	63
34.	फूल खिलते हैं बिखर जाते हैं	65
35.	पथ से कैसे हार मान लूँ	66
36.	अब रूप न जाने क्या होगा	67
37.	कुछ देर यहीं पर रुक जाना	69
38.	भारत के अमर शहीदों को	71
39.	क्या गाऊँऽऽ ? क्या गाऊँऽऽ ?	73
40.	माना कठिन लम्बा सफ़र	75
41.	कल की बातें क्या करें	76
42.	आ मेरे महबूब फिर से	77
43.	चाहतें भी क्या करें और	78
44.	ज़िन्दगी की दास्तां	79
45.	माना कठिन लम्बी डगर	80
46.	कभी भूले से किया तूने इशारा	81
47.	जब अंधेरे हों, नहीं साथ भी देता साया	82
48.	हमने माना हम ही नहीं बस	83
49.	यूँ ही इन आँखों को भर आते हुए	84
50.	गुनगुनाता एक भँवरा	85
51.	न ही शान-ओ, ना ही शौकत	86

52.	बिना तेरे दिन ये रातें	87
53.	मिलना बिछुड़ना नसीबा है अपना	88
54.	दीप छोटा सही उजाला है	89
55.	कभी तो हद से मुहब्बत	90
56.	दिल अगर तेरा हो	91
57.	कौन जाने मेरी चाहत में	92
58.	दिल दे रहा है सदा	93
59.	न ही शिकवा, न शिकायत	95
60.	इस तेरी दुनियाँ में या'रब	96
61.	जो चढ़े न उतरे फिर कभी	97
62.	रंग नये रंग नये, रंग चुने	99
63.	पास रहते हैं, मेरे ख़्वाब कई-1	101
64.	पास रहते हैं, मेरे ख़्वाब कई-2	103
65.	देखूँ मैं जिधर भी, मुझे दिखते हैं	105
66.	पर्ण पतझड़ पीत का सा	107
67.	सभी अपने हैं यहाँ, क्यों अकेले	109
68.	दस्तक देता दरवाज़ों पर, अनजाना	111
69.	तेरी मुस्करा कर बंदगी	113
70.	हौले हौले से मुस्करा दो जरा	114
71.	दीप आस के जला, गीत सजा	115
72.	उदास रात के घिरते इस अंधेरे में	116
73.	किसी बहार में महकी हुई तमन्ना	117
74.	हौले से आने की आहट	118
75.	Slowly and softly comes.	119
76.	मेरे अल्-बारी, मेरे अल् क़हहार	120
77.	एक यही इल्तिजा करे कोई	122

78. दिन हों या रातें काली 123
79. शंखनाद हो रहा, रात्रि कर रही 125
80. The conchshell blows 128
81. छेड़ जाता है दिल का तार कोई 130
82. जग रही थी जब किरन 132
83. मेरे दिल मेरे दिल रोता क्यों है 135
84. है शर्मसार वफ़ा अब तो 136
85. गा मेरे मन गीत गा 137
86. हाल अपना अज़ीब देखा है 139
87. इस दिल में बसीं यादें 140
88. मेरे साथिया मेरे हम सफ़र 142
89. जीआ कहे मत जा 143
90. कभी किन्हीं अँखियों में 145
91. झीना-झीना उनका आँचल 146
92. प्यार हो जाएगा, दिल ये खो जाएगा 147
93. उठ रहा हर ओर शोर 149
94. हो न ओझल किसी भी पल के लिए 151
95. कितनी रोशन हैं ये रातें 153
96. आ जा सुर में सुर मिला ले 154
97. नीड़ फिर से लौटते उड़ रहे 155
98. अब भी नाराज़ है मुझसे 157
99. सब के सब हैं शोक में 158
100. कोई न जाने इन अधरों का 160
101. बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ 161
102. कुछ मिला और कुछ मिल जाए 162

1. हम रात्रि की.....

हम रात्रि[1] की इस, गहन[2] कालिमा[3] में,
बस भोर[4] की एक, किरण माँगते हैं ।
सभी साथ मिलकर, करें तेरा वन्दन[5],
बस एक कृपा[6] की, नज़र माँगते हैं ।

भूखे न सोएँ, असमय[7] न रोएँ,
विपदाएँ[8] आएँ, तो धीरज न खोएँ ।
मैत्री[9] व करुणा[10], दया बन के निकलें,
आँखों में अपनी, वो जल माँगते हैं ।
हम रात्रि की इस, गहन कालिमा में.....

दुर्बल[11] को बल दो, सबल[12] हों विवेकी[13],
जो भी करें हम, रहे उसमें नेकी[14] ।
सद्कार्य[15] करने को, प्रेरित[16] करे जो,
ऐसा हमारा हो, बल माँगते हैं ।
हम रात्रि की इस, गहन कालिमा में.....

सम्यक्[17] हो दृष्टि[18], वाणी[19] में मृदुता[20],
बाहों में शक्ति हो, मन में हो दृढ़ता[21]।
हम स्वर्ग को, ले के आएँ धरा[22] पर,
उसका पता और खबर माँगते हैं ।
हम रात्रि की इस, गहन कालिमा में.....

जहाँ मानव[23] की गरिमा[24] का, गायन ध्वनित[25] हो,
सौहार्द[26], सद्‌भाव[27], सदा पल्लवित[28] हो ।
उल्लास[29], उत्साह[30], पंचम[31] में गाएँ,
ऐसा हमारा हो, जग[32] माँगते हैं ।
हम रात्रि की इस, गहन कालिमा में.....

1. रात ; 2. गहरी ; 3. कालापन ; 4. सबेरा ; 5. स्तुति, पूजन ; 6. दया ; 7. बे-वक़्त ; 8. विपत्ति ; 9. दोस्ती ; 10. संवेदनशील, अनुकंपा ; 11. कमज़ोर 12. ताक़तवर ; 13. भले बुरे का ज्ञान, समझ ; 14. भलाई ; 15. अच्छे काम ; 16. प्रेरणा देने वाला ; 17. सच्ची, उचित ; 18. निगाह, नज़र ; 19. वचन, बात ; 20. मुलायम, कोमलता, मधुर ; 21. मज़बूती ; 22. ज़मीन ; 23. मनुष्य ; 24. गुरूत्व, भारीपन ; 25. आवाज़ ; 26. मित्रता, हृदय की सरलता ; 27. अच्छा भाव ; 28. हरा भरा, विकसित ; 29. ख़ुशी , उमंग ; 30. उमंग, हौसला ; 31. पाँचवां स्वर (सा-रे-गा-मा-पा-दा-नि) सबसे मीठा स्वर ; 32. संसार ।

मई 2004
सिडनी

2. आज मेहनत की बदौलत.....

आज मेहनत की बदौलत[1], देश का इतिहास बदलो,
कह रही सुर भारती[2] माँ, अब मेरा शृंगार[3] बदलो ।

बदल दो अवसाद[4] का ये राज्य, आनन्दित स्वरों से,
बदल दो आलस्य का साम्राज्य, अपने श्रम कणों[5] से ।

आज आत्मिक[6] शक्ति से, जन-जन[7] हृदय[8] झंकार[9] बदलो,
आज मेहनत की बदौलत, देश का इतिहास बदलो ।

जो निराशा की घटाएँ छा रहीं, निज[10] देश पर हैं,
भुखमरी मँहगाई से जो बढ़ रहीं, स्वदेश[11] पर हैं ।

आज आशा भानु[12] बन तुम, टूटता विश्वास[13] बदलो,
आज मेहनत की बदौलत, देश का इतिहास बदलो ।

साहित्य और इतिहास में, भारत का गौरवगान है,
जननी[14] जन्मभूमि यह, स्वर्ग से महान है ।

स्मरण[15] करके तुम इसे, अपने क़दम की राह बदलो,
आज मेहनत की बदौलत, देश का इतिहास बदलो ।

उद्योग-धन्धों की कमी, तो है नहीं इस देश में,
सैंकड़ों मिल-कारखाने, आज भारत देश में ।

प्यारे श्रमिक अपनी लगन[16] से, आज भारत भाग्य बदलो,
आज मेहनत की बदौलत, देश का इतिहास बदलो ।

हैं समस्याएँ ये अगणित[17], हाथ फैलाए खड़ीं,
बेबसी मजबूरियों की बेड़ियाँ[18], पग[19] में पड़ीं ।

कर्तव्य[20] पथ[21] से आ रही, आवाज से अंदाज[22] बदलो,
आज मेहनत की बदौलत, देश का इतिहास बदलो ।

पक्षियों के मधुर स्वर से, गुंजरित[23] इस देश में,
खिले सुमनों[24] की सुरभि[25] से, सुवासित[26] प्रदेश में ।

हो रहे इस करुण[27] क्रन्दन[28] की, दु:खी आवाज़ बदलो,
आज मेहनत की बदौलत, देश का इतिहास बदलो ।

1. कृपा से ; 2. सुरों की देवी (सरस्वती) ; 3. सजावट ; 4. उदासी ; 5. मेहनत का पसीना ; 6. आत्मा की ; 7. लोग ; 8. दिल ; 9. झन-झन की आवाज़ ; 10. अपना ; 11. अपना देश ; 12. सूरज ; 13. भरोसा ; 14. जन्म देने वाली ; 15. याद करना ; 16. मेहनत, ध्यान से ; 17. जिसकी गणना न की जा सके ; 18. पैरों की ज़ंजीर ; 19. पैर ; 20. करने योग्य काम ; 21. रास्ता ; 22. तरीक़ा, ढंग ; 23. आवाज़ से युक्त ; 24. फूल ; 25. ख़ुशबू ; 26. सुगंधित ; 27. दु:खी ; 28. विलाप करना , रोना ।

27.04.1974

3. हमें करना है नवनिर्माण.....

हमें करना है नव-निर्माण[1], बनाना स्वर्णिम[2] हिन्दुस्तान,
हमें करना है नव-निर्माण, बनाना भारत देश महान ।

जहाँ-जहाँ अँधियारा देखो, ज्ञान प्रकाश वहाँ कर दो,
जल संकट हो जहाँ वहाँ, श्रम-बल[3] से दूर उसे कर दो ।
भूख गरीबी दूर करो, जन-जन[4] में खुशहाली भर दो,
प्रेम सुधा[5] बरसाकर नित[6], जन-मन को आनन्दित[7] कर दो ।
वीर प्रसूता[8] भारत माँ की, बनो वीर सन्तान,
कि जागो वीरों और जवान, हमें करना है नव-निर्माण ।

श्रमिकों के ही श्रम सीकर[9] से, बनें मिलों की दीवारें,
उत्पादन[10] नित बढ़े, दूर हो जाएं स्वयं संकट सारे ।
कृषक[11] स्वयं भगवान धरा[12] पर, तन-मन-धन अपना वारें,
अति प्रसन्न हो प्रकृति मनोहर[13], दिखलाती नित रंग प्यारे ।
स्वर्ण[14] भूमि ये रही सदा से, सकल[15] गुणों की खान [16],
कि जागो श्रमिकों और किसान, हमें करना है नव-निर्माण ।

टूटी झोंपड़ियों से आती, कातर[17] करुण[18] पुकार जहाँ,
करूणानिधि[19] के देवदूत[20], बन करो मधुर झंकार वहाँ ।
दीन[21] आत्मविश्वास खो चुके, पड़े हुए पददलित[22] जहाँ,
प्रेम और विश्वास जगाकर, करो शक्ति संचार[23] वहाँ ।
मानव हो तुम मानवता का, समझो अर्थ महान,
कि देती गीता ये ही ज्ञान, हमें करना है नव-निर्माण ।

राष्ट्र सम्पदा[24] रहे देश में, अन्य देश को जाए नहीं,
हड़तालों, ताले बन्दी का, मन में उठे विचार नहीं ।
नव-निर्माण हेतु जन-जन सब, बचत योजना अपनाएँ,
बिना किए परिवार नियोजन, बेकारी भी मिटे नहीं ।
हथकरघा[25] को प्रोत्साहन[26] दो, हो जन का कल्याण,
कि सुन लो भारत की सन्तान, हमें करना है नव-निर्माण ।

नव-युवकों को सबसे पहले, आगे क़दम बढ़ाना है,
छात्र-काल[27] में अनुशासन का, हर औचित्य[28] दिखाना है ।
प्रथा दहेज समूल[29] नष्ट हो, जीवन में अपनाना है,
कार्य क्षेत्र में ही अधिकाधिक, अपना समय लगाना है ।
नव-युवकों के सुदृढ़[30] करों[31] से, बनता देश महान्,
कि तुम हो भारत माँ की आन[32], हमें करना है नव-निर्माण ।

नारी दुर्बल[33] अंग देश का, फिर भी वे कल्याणी[34] हैं,
नारी से ही बोस, भगत सिंह, देशभक्त बलिदानी हैं ।
नारी ममता मूर्ति, किन्तु वे ही झाँसी की रानी हैं,
नारी से ही धर्म, अर्थ और काम बताते ज्ञानी हैं ।
नारी का सम्मान जहाँ है, वहाँ रहें भगवान,
अमर हो भारत माँ की शान, हमें करना है नव-निर्माण ।

1. नयी रचना करना ; 2. सुनहरा ; 3. मेहनत-ताक़त ; 4. प्रत्येक मनुष्य ; 5. अमृत ; 6. रोज़ ; 7. प्रसन्न, ख़ुश ; 8. नवजात बच्चे की माँ ; 9. मेहनत का पसीना ; 10. पैदावार ; 11. किसान ; 12. पृथ्वी ; 13. मन को हरने वाला ; 14. सोना ; 15. समस्त, सारे ; 16. खज़ाना ; 17. भयभीत, परेशान ; 18. दु:ख भरी ; 19. दया का सागर ; 20. देवता का दूत ; 21. ग़रीब ; 22. हीन अवस्था वाला ; 23. फैलाना ; 24. वैभव, धनदौलत ; 25. हाथ से चलने वाला कपड़े बुनने का यन्त्र ; 26. हिम्मत बढ़ाना ; 27. समय ; 28. उचित होने की अवस्था ; 29. जड़ से ; 30. बहुत मज़बूत ; 31. हाथ ; 32. गौरव ; 33. कमज़ोर ; 34. कल्याण करने वाली ।

27.04.1976

4. जीवित हैं आदर्श तुम्हारे.....

जीवित हैं आदर्श[1] तुम्हारे, श्रमिकों के हर श्रम-कण[2] में,
गूँज रही आवाज़ तुम्हारी, जन-जन के अन्तर्मन[3] में ।

श्रम के जल से सिंचित[4] पौधा, पतझड़ में भी हँसता खिलता,
श्रमिक वही जो श्रम को पूजे, श्रम में ही तो ईश्वर बसता ।

श्रम साधना तुम्हारी सार्थक[5], भारत के इस प्रांगण[6] में,
जीवित हैं आदर्श तुम्हारे, श्रमिकों के हर श्रम-कण में ।

प्रेम दिया विश्वास जगाया, असहायों[7] को गले लगाया,
निर्धन बलहीनों को तुमने, जीवन का सम्बल[8] दिखलाया ।

महक रही यश कीर्ति तुम्हारी, हर मानव-मन-उपवन[9] में,
जीवित हैं आदर्श तुम्हारे, श्रमिकों के हर श्रम-कण में ।

सहयोगी माटी का दीपक, भरा हुआ विश्वासों से,
ज्योति प्रेम की मन्द[10] न होगी, आँधी के निःश्वासों[11] से ।

तुमने जाना कितना सुख है, प्रेम-सुधा[12] रस अर्पण[13] में,
जीवित हैं आदर्श तुम्हारे, श्रमिकों के हर श्रम-कण में ।

महलों से कुटियों का नाता, प्रेम रज्जु[14] से तुमने जोड़ा,
निर्धन-धनी मध्य शोषण[15] की, दुर्गम[16] दीवारों को तोड़ा ।

मानवता प्रतिबिम्बित होती, उजले मन के दर्पण में,
जीवित हैं आदर्श तुम्हारे, श्रमिकों के हर श्रम-कण में ।

तरुवर[17] जितना फले झुकेगा, यही सत्य तुमने अपनाया,
सादा जीवन उच्च विचारों, कर्म योग का पथ दिखलाया ।

गुण सागर तव[18] अति अथाह[19] हम कैसे बाँधें वर्णन में,
जीवित हैं आदर्श तुम्हारे, श्रमिकों के हर श्रम-कण में ।

1. अनुकरण करने योग्य बात ; 2. मेहनत का पसीना ; 3. मन की भीतरी चेतना ; 4. सींचा हुआ ; 5. सफल ; 6. आँगन ; 7. जिसका कोई सहायक न हो ; 8. सहारा ; 9. बग़ीचा ; 10. कम, हल्की ; 11. गहरी साँस बाहर निकालना ; 12. अमृत ; 13. भेंट करना ; 14. रस्सी ; 15. दूसरे के श्रम का अनुचित लाभ उठाना, क्षीण या दुबला करना ; 16. कठिन ; 17. पेड़ ; 18. तुम्हारे ; 19. बहुत गहरा ।

27.04.1977
श्री राम जयन्ती

5. मैं तो चलने का विश्वासी.....

मंज़िल कोई रास[1] न आई,
मनवांछित[2] अभिलाषा[3] प्यासी ।
मैं तो चलने का विश्वासी ।।

हरियाली के अवगुंठन[4] से,
सुन्दर सुमुखी[5] प्रकृति झाँकती ।
नेह[6] सजा कर नयनों में,
मानो प्रियतम का पथ[7] निहारती[8] ।

मैं तो पथ का एक पथिक[9] हूँ,
मुझको बस नीरवता[10] रासी ।
मैं तो चलने का विश्वासी ।।

अगणित सुमन[11] खिले उपवन में ,
प्रेमी भँवरा गुञ्जन[12] करता ।
सूर्य रश्मि[13] से खिले कमल दल [14],
चन्द्र निहार[15] चकोर[16] चहकता [17]।

अनजानी राहों का प्रेमी,
मन मेरा पागल सन्यासी ।
मैं तो चलने का विश्वासी ।।

कितनी नदियाँ ताल[18] सरोवर,
सब जल के साधन गहराए।
प्यास जहाँ जिसकी बुझ जाए,
वह उसका सागर कहलाए ।

खोज-खोज कर हारा मानव,
फिर भी तृष्णा[19] रही पिपासी[20] ।
मैं तो चलने का विश्वासी ।।

1. अनुकूल ; 2. मन की इच्छा, मन का चाहना ; 3. मन की कामना ; 4. घूँघट, पर्दा ; 5. सुंदर मुख वाली ; 6. प्यार, प्रीति ; 7. रास्ता ; 8. एक टक देखना ; 9. राही ; 10. शब्द रहित ; 11. फूल ; 12. भौंरे की आवाज़ ; 13. किरण ; 14. कमल के फूल के कोमल पत्ते, समूह ; 15. देखकर ; 16. चंद्रमा का प्रेमी पक्षी ; 17. ख़ुशी में खिलकर आवाज़ करना ; 18. तालाब ; 19. तीव्र इच्छा ; 20. प्यासी ।

6. न जाने कहाँ ज़िन्दगी खो गई.....

तिमिर[1] वेदना[2] की गहन[3] घाटियों में,
विचरती[4] कहीं शून्य[5] की वीथियों [6]में ।
अजानी[7] सी धूमिल[8] निराशा संजोए[9],
अचेतन[10] क्षितिज[11] में समाहित हुई है ।
न जाने कहाँ ज़िन्दगी खो गई है ।।

थके खोज करते गगन के सितारे,
उनींदे[12] नयन रह गये बेसहारे ।
प्रभाती[13] किरन आ के फिर से जगाकर,
मुँख पीर[14] का अश्रु से धो गई है ।
न जाने कहाँ ज़िन्दगी खो गई है ।।

अधर में अकेले ओझल किनारे,
किधर नाव खेऊँ भ्रमित मन सहारे ।
दिशाओं से प्रतिपल जो आवाज़ आए,
बिख़रती हुई सी विलीन हो गई है ।
न जाने कहाँ ज़िन्दगी खो गई है ।।

कहीं ज्वार[15] सागर के लहरा रहे हैं,
कहीं रेत में कारवां खो रहे हैं ।
कहीं आँधियों में अचल[16] डगमगाए,
ये कैसी अनोखी दशा हो गई है ।
न जाने कहाँ ज़िन्दगी खो गई है ।।

1. अंधेरा ; 2. कष्ट ; 3. गहरा ; 4. घूमना ; 5. खाली, निराकार ; 6. गलियों, रास्ता ; 7. अज्ञात ; 8. धुँधला, धुएँ के रंग का ; 9. सजाना ; 10. अज्ञानी, संज्ञाशून्य ; 11. वह स्थान जहाँ पृथ्वी, आकाश मिलते दिखाई देते हैं ; 12. नींद से भरे ; 13. सुबह सम्बन्धी ; 14. दु:ख, वेदना ; 15. समुद्र के जल का ऊपर उठना ; 16. पर्वत, पहाड़ ।

7. पंथ बुहार रही हैं अलकें.....

पंथ[1] बुहार[2] रही हैं अलकें[3],
बाट[4] निहार[5] रही हैं पलकें ।
झाँक रहे आकुल[6] कोरों[7] से,
उत्सुक[8] दृग[9] शावक[10] मदमाते [11]।
आते तो अब तक आ जाते ।।

मावस[12] में पूनम[13] का भ्रम[14] क्यों,
भय दिखलाता अन्तर्मन[15] क्यों ।
रजनी[16] के गतिमान क्षणों को,
सपनों के संगम[17] दुलराते[18] ।
आते तो अब तक आ जाते ।।

दीपक की यह जलती बाती[19],
प्रतिपल मंद[20] जो होती जाती ।
रोम[21] सिहरते हर आहट पर,
श्वासों को झंकृत[22] कर जाते ।
आते तो अब तक आ जाते ।।

मुरझाए फूलों के गुलशन,
ना ऋतुराज[23] ना कोई सावन ।
अधसूखे पत्तों पर बिखरी,
शबनम को मोती कर जाते ।
आते तो अब तक आ जाते ।।

1. रास्ता ; 2. साफ करना ; 3. माथे पर लटकते बाल ; 4. प्रतीक्षा, इन्तज़ार ; 5. एक टक देखना ; 6. बेचैन ; 7. किनारे से ; 8. अधिक बेचैन ; 9. आँख ; 10. पशु पक्षी का बच्चा ; 11. मतवाला ; 12. अमावस्या ; 13. पूर्णिमा (पूर्ण चाँद) ; 14. धोखा ; 15. भीतर की चेतना ; 16. रात ; 17. मिलना ; 18. प्यार, लाड़ करना ; 19. बत्ती, पलीता ; 20. धीमी ; 21. रोआँ, शरीर पर पतला नर्म बाल ; 22. झनझन शब्द पैदा करना ; 23. ऋतुओं का राजा (बसंत ऋतु) ।

8. स्वप्न पलकों को छल रहे मेरे.....

स्वप्न[1] पलकों को छल[2] रहे मेरे,
अश्रु[3] आँखों में जल रहे मेरे ।

दर्द रजनी[4] की घुटन[5] पीता रहा,
भाव[6] हिम[7] बन के गल[8] रहे मेरे ।
अश्रु आँखों में जल रहे मेरे ।।

नीड़[9] की आस[10] में संजोए हुए,
तिनके-तिनके बिखर रहे मेरे ।
अश्रु आँखों में जल रहे मेरे ।।

ये भटकते हुए हृदय के स्वर,
मौन[11] भाषा में पल रहे मेरे।
अश्रु आँखों में जल रहे मेरे ।।

भावनाओं के निठुर[12] निर्झर[13] में,
गीत बन-बन के ढल रहे मेरे ।
अश्रु आँखों में जल रहे मेरे ।।

तीव्र[14] झंझा[15] के तिमिर अंचल[16] में,
दीप बुझ-बुझ के जल रहे मेरे ।
अश्रु आँखों में जल रहे मेरे ।।

साध[17] उर[18] में छिपाये प्रिय मिलन की,
पाँव शूलों[19] पर चल रहे मेरे ।
अश्रु आँखों में जल रहे मेरे ।।

1. सपने ; 2. धोखा ; 3. आँसू ; 4. रात ; 5. दम घुटना, घबराहट ; 6. मन में उत्पन्न होने वाले हर्ष, शोक आदि ; 7. बर्फ ; 8. पिघलना ; 9. घोंसला ; 10. उम्मीद, आशा ; 11. शांत, चुप ; 12. कठोर हृदय ; 13. झरना ; 14. तेज ; 15. आँधी ; 16. आँचल ; 17. अभिलाषा ; 18. हृदय, छाती ; 19. काँटे ।

9. मैं पीड़ाओं की आभारी.....

मैं पीड़ाओं[1] की आभारी,
उलझन[2] ने ही खुद सुलझा दी ।
आज समस्या मन की सारी ।।

तप्त[3] वेदना[4] ओस[5] बिन्दु[6] सम[7],
शीतलता[8] देती जीवन को ।
दर्द बना मनमीत[9] दिलासा,
देता रहता आहत[10] मन को ।

विरहानल[11] में तप-तप[12] कर ही,
यह काया[13] बन जाए कंचन[14] ।
धुल कर अश्रु नीर से कलुषित[15],
मन मेरा बन जाए चन्दन ।

मधुर कल्पना ने अपना ली,
पीड़ित मन की कुण्ठा[16] सारी ।
मैं पीड़ाओं की आभारी ।

आशा चित्रित मन दर्पण पर,
गहन[17] कुहासा[18] आकर छलता ।
पुष्पित गुंजित अमराई[19] पर,
पतझड़ का सूनापन हँसता ।

पागल प्रेमी शलभ[20] न जाने,
दीपक किसकी धुन में जलता ।
अस्ताचल[21] का भानु[22] पुनः,
आगमन[23] का आमन्त्रण लेता ।

अंधकार में डूबे मन को,
किरण भोर[24] की लगती प्यारी ।
मैं पीड़ाओं की आभारी ।

1. तकलीफ़ ; 2. चिंता, सोच ; 3. गर्म ; 4. कष्ट ; 5. शबनम ; 6. बूँद ; 7. समान ; 8. ठंडापन ; 9.मन का दोस्त, मित्र ; 10. घायल ; 11. वियोग की आग ; 12. जलकर ; 13. बदन, शरीर ; 14. सोना ; 15. मैला, अपवित्र ; 16. निराशा ; 17. गहरा ; 18. कोहरा ; 19. उद्यान, आम का बाग ; 20. फतिंगा, शरभ ; 21. पश्चिम दिशा में कल्पित पर्वत जहाँ सूरज छिपता है ; 22. सूरज ; 23. आना ; 24. सुबह का समय ।

10. स्वप्न आँखों में सजाए मैंने.....

स्वप्न आँखों में सजाए मैंने,
दीप सुधियों[1] के जलाए मैंने ।

कल्पनाओं[2] में तैरते मन को,
भेद[3] सब अपने बताए मैंने ।

प्राण[4] बन्दी हैं भावनाओं के,
सिन्धु[5] में ज्वार[6] जगाए मैंने ।

अब तो शायद ही फिरें[7] वे दिन,
जब ब्याह[8] गुड़ियों के रचाए मैंने ।

मौन[9] अन्तस्[10] के रिक्त[11] दर्पण में,
नेह[12] प्रतिबिम्ब बनाए मैंने ।

वेदनाओं[13] के मधुर होठों से,
गीत सरगम[14] को सुनाए मैंने ।

दीप सुधियों के जलाए मैंने,
स्वप्न आँखों में सजाए मैंने ।

1. यादों ; 2. नयी बात सोचना ; 3. राज़ ; 4. जान ; 5. सागर ; 6. जल का ऊपर उठना ; 7. वापस लौटना ; 8. शादी ; 9. शांत ; 10. मन के भीतर ; 11. खाली ; 12. प्यार ; 13. पीड़ा ; 14. संगीत के सात सुरों का समूह ।

11. मैं खड़ी हूँ ज़िन्दगी के.....

मैं खड़ी हूँ ज़िन्दगी के,
एक ऐसे मोड़ पर ।
दो क़दम चलती मगर,
फिर लौट आती हूँ वहीं ।

मन विचारों की उड़ानों में,
भटकता है कहीं ।
तन[1] कहाँ रहता है,
इसकी भी ख़बर रहती नहीं ।

अजनबी[2] सी प्रेरणा[3],
प्रेरित[4] तो करती है मुझे ।
राह[5] मंज़िल की मगर,
मुझको नज़र आती नहीं ।

स्वप्न मेरे छोड़ते हैं,
साथ पलकों का नहीं ।
पर हृदय की बात,
अधरों[6] से कही जाती नहीं ।

कल्पनाओं में भ्रमण[7]
करती सलौनी[8] ज़िन्दगी ।
शब्द नुपुर[9] के मगर,
सुनने में आते नहीं ।

छोड़ दी नइया[10] भँवर[11] में,
मान कर माँझी[12] किसे ।
इस अँधेरे में किनारे,
तक नज़र आते नहीं ।

1. शरीर ; 2. अपरिचित ; 3. काम में लगाने का भाव ; 4. उत्साहित करना ; 5. रास्ता ; 6. होंठ ; 7. घूमना ; 8. सुंदर ; 9. घुँघरू ; 10. नाव ; 11. लहरों का तीव्र घुमाव ; 12. नाव चलाने वाला ।

12. जब-जब भी इस वसुन्धरा.....

जब-जब भी इस वसुन्धरा[1] से, होता धर्म विलीन[2],
जब मानव प्रभु नाम भूल, भोगों में हुआ है लीन[3] ।
जब-जब सत्य, प्रेम, करुणा[4] की, शुष्क[5] हुई सरिताएँ[6],
जब अम्बर[7] पर दुराचार[8] की, काली घिरी घटाएँ ।
तब-तब इस धरती पर प्रभु, अवतार[9] हुआ है ऐसे,
अन्धकार को चीर[10] भानु[11] का, उदय[12] हुआ हो जैसे ।

जब-जब असुर बढ़े भू[13] पर, नित[14] होते करुण क्रन्दन[15],
नुपुर[16] की झंकार में बिसरे[17], दीप आरती वन्दन ।
मन्दिर, मसजिद, गिरजे सूने, सूने जब गुरूद्वारे,
मधुशालाएँ[18] भरी रहें नित, सन्ध्या[19] और सकारे[20] ।
तब-तब दयावान परमेश्वर, अघ[21] हरने को आए,
जैसे विकसित पंकज[22] अपनी, रम्य[23] सुरभि[24] फैलाए ।

राम रूप रावण संहारा[25], बन कर कृष्ण कंस को मारा,
हिरण्यकश्यप का वध करने, नरसिंह रूप ईश ने धारा ।
अर्जुन के सारथी[26] बने तुम, धर्म-कर्म का ज्ञान कराया,
सखा सुदामा का सब दुःख, तुमने नयनों की राह बहाया ।
धर्म की नइया[27] के माँझी[28] बन, सत्य प्रेम की बन पतवार[29],
एक आत्मा रूप अनगिनत[30], धारण करते नन्द कुमार ।

जय जय हे गोपालक स्वामी, करुणा सिन्धु[31] सर्वसुखधाम,
जय जय हे भक्तों के वत्सल[32], कोटि-कोटि[33] तुमको प्रणाम ।

1. पृथ्वी ; 2. लुप्त, गायब ; 3. खो जाना ; 4. दया ; 5. सूखी ; 6. नदियाँ ; 7. आकाश ; 8. बुरा व्यवहार ; 9. देवता का मनुष्य रूप में जन्म लेना ; 10. दूर करके ; 11. सूरज ; 12. प्रकट होना ; 13. पृथ्वी ; 14. रोज़, लगातार ; 15. रोना, विलाप करना ; 16. पायल, घुँघरू ; 17. खो जाना, भूल जाना ; 18. शराब पीने का स्थान ; 19. शाम ; 20. सुबह ; 21. पाप ; 22. कमल ; 23. सुन्दर ; 24. सुगन्ध, खुशबू ; 25. मारा ; 26. रथ चलाने वाला ; 27. नाव ; 28. नाव चलाने वाला ; 29. नाव मे पीछे की ओर लगी तिकोनी लकड़ी जो नाव खेने के काम आती है ; 30. बे-हिसाब ; 31. समुद्र, सागर ; 32. बच्चों को प्रेम करने वाला ; 33. करोड़ों, असंख्य ।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी
1979

13. आज समय आ गया.....

आज समय आ गया पधारो[1], हे मधुसूदन[2] प्यारे ।
इस पावन[3] धरती का कण-कण, प्रभुवर तुम्हें पुकारे ।

भूले कर्म ज्ञान गीता का,
चहुँदिशि[4] फैला माया-जाल[5] ।
मन है ग्रसित[6] स्वार्थपरता[7] से,
अट्टहास[8] करता कलिकाल[9] ।

अपना वचन निभाने आओ, चक्र सुदर्शन वारे ।
इस पावन धरती का कण-कण, प्रभुवर तुम्हें पुकारे ।

आज दुखी द्रौपदी हजारों,
करती कातर[10] करूण पुकार ।
लाज[11] बचाने कब आओगे,
गिरिधर[12] नागर नन्द कुमार ।

धर्म की नइया पड़ी भँवर[13] में, तुम ही खेवनहारे[14] ।
इस पावन धरती का कण-कण, प्रभुवर तुम्हें पुकारे ।

पाप पंक[15] में जाती पृथ्वी,
धारण करो वाराह[16] अवतार।
पुण्य भानु[17] है अस्ताचल[18] पर,
दुखी भक्त प्रकृति लाचार[19] ।

ज्ञान-किरण बन आओ माधव, मोहन मुरली वारे ।
इस पावन धरती का कण-कण, प्रभुवर तुम्हें पुकारे ।

निज भक्तों की रक्षा को प्रभु,
तुम हर एक युग में आए ।
एक आत्मा नाम बदलकर,
अगणित पावन रूप बनाए ।

जय–जय हे भक्तों के वत्सल[20], अवगुण[21] हरो हमारे।
इस पावन धरती का कण–कण, प्रभुवर तुम्हें पुकारे।

1. आना, पहुँचना ; 2. कृष्ण भगवान ; 3. शुद्ध ; 4. चारों दिशाओं में ; 5. धोखे का जाल ; 6. पीड़ित ; 7. ख़ुदग़रजी ; 8. जोर की हँसी ; 9. कलियुग ; 10. भयभीत ; 11. इज़्ज़त ; 12. कृष्ण ; 13. लहरों का चक्कर ; 14. पार लगाने वाले ; 15. कीचड़, दलदल ; 16. सुअर, शूकर ; 17. सूरज ; 18. पश्चिम दिशा में स्थित वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूरज का छिपना माना जाता है ; 19. मजबूर ; 20 प्रेम करने वाला ; 21. बुराई ।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी
1981

14. अखिल सृष्टि का एक रूप.....

अखिल[1] सृष्टि[2] का एक रूप तुम, सकल[3] हृदय तव[4] धाम रे,
जितने तेरे नाम गिरिधर, उतने सुन्दर काम रे ।

श्यामल[5] तन[6] पर पीताम्बर[7] की, शोभा[8] ने अनुपम[9] छवि[10] पाई,
श्यामल घन[11] का आलिंगन[12] कर, ज्यों चंचल[13] चपला[14] हरषाई ।

कानों में मकराकृति[15] कुंडल, कर[16] मुरली उर[17] माल रे,
जितने तेरे नाम गिरिधर, उतने सुन्दर काम रे ।

प्रवृत्ति[18] आसुरी आज पनपती, विकृत[19] हुआ मन का संसार,
बैर-भाव[20] के नाग सहस्त्रों[21], फेंक रहे विषमय[22] फुंकार[23] ।

आज पतित[24] पावन[25] बन आओ, असुर निकन्दन[26] नाम रे,
जितने तेरे नाम गिरिधर, उतने सुन्दर काम रे ।

भौतिक सुख की मृगतृष्णा[27] में, भटक रहा मानव का ज्ञान,
धन की लोलुपता[28] में अंधा, रहा न नातों[29] का भी ज्ञान ।

शंख फूँक प्रभु आज पुनः दो, गीता का शुभ ज्ञान रे,
जितने तेरे नाम गिरिधर, उतने सुन्दर काम रे ।

हुआ विदीर्ण[30] हृदय वसुधा[31] का, बढ़ता जाता अत्याचार,
भाग्यहीन अबलाएँ[32] जलतीं, पशुवत[33] हुआ मनुज[34] व्यवहार ।

कृपा दृष्टि से आज निहारो, भगत बछल गोपाल रे,
जितने तेरे नाम गिरिधर, उतने सुन्दर काम रे ।

हर युग में प्रभु आये तुम, सुन भक्तों की करुण पुकार,
धर्म की रक्षा हेतु सदा ही, रूप अनेक रचे साकार ।

पाप पंक[35] में विश्व जा रहा, पुनः धरो अवतार रे,
जितने तेरे नाम गिरिधर, उतने सुन्दर काम रे ।

सब धर्मों का सार[36] एक ही, फिर क्यों मज़हब की दीवार,
रमती[37] सबमें एक आत्मा, विश्व समस्त एक परिवार ।

प्रेम से देखो अन्तर्मन में, कृष्ण हैं मूरतिमान रे,
जितने तेरे नाम गिरिधर, उतने सुन्दर काम रे ।

1. समस्त, सारा ; 2. संसार ; 3. सारा ; 4. तुम्हारा ; 5. साँवला ; 6. शरीर ; 7. पीले रंग का वस्त्र ; 8. चमक, सुंदरता ; 9. जिसकी उपमा न की जा सके ; 10. तस्वीर ; 11. बादल ; 12. गले लगाना ; 13. चुलबुला, बराबर गतिशील ; 14. बिजली ; 15. मगरमच्छ की आकृति वाला ; 16. हाथ ; 17. छाती, हृदय ; 18. व्यवहार ; 19. कुरूप, बुरा ; 20. दुश्मनी ; 21. हजारों ; 22. जहर से भरी ; 23. जोर की साँस ; 24. पापी ; 25. शुद्ध, पवित्र ; 26. नाश करने वाला ; 27. ऐसी इच्छा जो संभव न हो ; 28. लालच ; 29. रिश्तों ; 30. टूटा हुआ ; 31. पृथ्वी ; 32. कमज़ोर नारी ; 33. जानवर के समान ; 34. मनुष्य ; 35. कीचड़ ; 36. सारांश ; 37. लीन होना ।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी
1982

15. कृष्ण कन्हैया मनमोहन.....

कृष्ण कन्हैया मनमोहन बन, फिर धरती पर आ जा,
टुकड़ों में संसार बँट गया, आकर पुनः सजा जा ।

उस युग में तो एक कंस था, आज कोटि[1] कंसों की छाया[2],
जिनके अत्याचारों से पीड़ित, तेरे भक्तों की काया ।

मूक[3] पड़ा है यमुना का तट[4], मुरली मधुर बजा जा,
टुकड़ों में संसार बँट गया, आकर पुनः सजा जा ।

पुण्य वृक्ष को आज पाप की, गर्मी ने झुलसाया,
मधुर फलों के लगने से, पहले ही पतझड़ छाया ।

ऋतु[5] बसंत बन मन उपवन[6] पर, नव[7] किसलय[8] उपजा[9] जा,
टुकड़ों में संसार बँट गया, आकर पुनः सजा जा ।

भ्रमित[10] हुआ है मानव का मन, अपने ही जंजालों में,
मन की शान्ति खोजता फिरता, अब मदिरा[11] के प्यालों में ।

विश्वमोहिनी[12] बन अमृत का, प्याला मधुर पिला जा,
टुकड़ों में संसार बँट गया, आकर पुनः सजा जा ।

तुम प्रभु हर युग में आए, पर कौन तुम्हें पहचाना,
पूजा तो सब ने की पर, पूजा का अर्थ न जाना ।

ज्ञान मार्ग पर सत्कर्मों[13] के, ठहरे कदम बढ़ा जा,
टुकड़ों में संसार बँट गया, आकर पुनः सजा जा ।

रावण जैसे असुर सहस्त्रों, हरते[14] हैं कितनी ललनाएँ[15],
ज्वालाओं में जलती हैं नित, कितनी कोमल तन बालाएँ[16] ।

दुर्गा माँ की शक्ति बन, कुछ चमत्कार दिखला जा,
टुकडों में संसार बँट गया, आकर पुनः सजा जा ।

जिस नारी से जन्मे भू पर, अर्जुन जैसे वीर महान,
धन के लोभी[17] उसे जलाकर, करते अग्नि का अपमान ।

निष्कलंक[18] निज[19] रूप बनाकर, मन के कलुष[20] मिटा जा,
टुकड़ों में संसार बँट गया, आकर पुनः सजा जा ।

1. करोड़ों ; 2. परछाँई ; 3. शांत, चुप ; 4. किनारा ; 5. मौसम ; 6. बग़ीचा ; 7. नया ; 8. कोमल पत्ती ; 9. पैदा करना ; 10. शंका से युक्त ; 11. शराब ; 12. सारे संसार को मोहने वाला ; 13. अच्छे काम ; 14. अपहरण ; 15. सुंदर नारियाँ ; 16. छोटी लड़कियाँ ; 17. लालची ; 18. बेदाग़ ; 19. अपना ; 20. मैल, पाप ।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी
1983

16. आज़ादी की वर्षगाँठ.....

आज़ादी की वर्षगाँठ[1] की, पावन[2] वेला[3] आई है,
आज हर्ष[4] की लहर[5] पुनः, भारत भूमि पर छाई है ।

उन गोरे अंग्रेजों का था, दमन[6] चक्र इस भारत पर,
हाथ हथकड़ी पाँव में बेड़ी[7], कोड़े[8] गिरते थे तन[9] पर ।

उनका गर्व[10] चूर[11] करके, अपनी ध्वजा फहराई है,
आज हर्ष की लहर पुनः, भारत भूमि पर छाई है ।

कितने वीर शहीद[12] हो गए, चूम के फाँसी का फंदा,
कितना रक्त[13] बहा भू पर, तब पाया हमने ये झंडा ।

इसका मान[14] बढ़ायेंगे हम, शपथ[15] आज ये खाई है,
आज हर्ष की लहर पुनः, भारत भूमि पर छाई है ।

बापू की जो आशाएँ थीं, नेहरू का था जो सपना,
उनको हम साकार[16] करेंगे, देकर प्राण[17] लहू[18] अपना।

अमर शहीदों की स्मृति[19] में, आज आँख भर आई है,
आज हर्ष की लहर पुनः, भारत भूमि पर छाई है ।

आज समस्याएँ अगणित, हर मानव को ललकार[20] रहीं,
पल-पल बदले राजनीति, मँहगाई सीमा लाँघ[21] रही ।

जाग उठो आवाज़ यही, सुन्दर प्रभात[22] से आई है,
आज हर्ष की लहर पुनः, भारत भूमि पर छाई है ।

1. जन्मदिन का उत्सव ; 2. पवित्र ; 3. समय ; 4. ख़ुशी ; 5. तरंग ; 6. कठोरता पूर्वक दबाया जाना ; 7. पैर की ज़ंजीर ; 8. चाबुक ; 9. शरीर ; 10. घमंड ; 11. तोड़कर ; 12. अपनी इच्छा से बलि देने वाला ; 13. खून ; 14. इज़्ज़त, सम्मान ; 15. क़सम ; 16. पूरा करना ; 17. जान ; 18. खून ; 19. याद ; 20. चुनौती ; 21. पार करना ; 22. सुबह का समय ।

15 अगस्त 1983

17. हम भारत के बाल.....

हम भारत के बाल सूर्य[1], सोई तक़दीर[2] जगा देंगे,
मानवता से दानवता[3] का, पर्दा आज हटा देंगे ।

पुण्य[4]भूमि ये भारत माँ की, जहाँ कोटि[5] अवतार[6] हुए,
गाँधी, नेहरू, भगतसिंह, सुभाष चन्द्र, सरदार हुए ।

इन वीरों के आदर्शों[7] का, नारा आज लगा देंगे,
मानवता से दानवता का, पर्दा आज हटा देंगे ।

देश प्रेम है बाना[8] अपना, मेहनत अपना गहना है,
आज यही संदेश देश के, हर मानव से कहना है ।

प्रेम और सहयोग जगाकर, बुझते दीप जला देंगे,
मानवता से दानवता का, पर्दा आज हटा देंगे ।

निज कर्त्तव्य पूर्ण करके, माटी[9] का क़र्ज़[10] चुकाएंगे,
मिट[11] जायेंगे देश के हित[12] में, आगे कदम बढ़ाएंगे ।

अमर तिरंगे को उछाल कर, अम्बर[13] में लहरा देंगे,
मानवता से दानवता का, पर्दा आज हटा देंगे ।

श्रम सीकर[14] गिरते जब भू[15] पर, ये सोना बन जाते हैं,
फ़ौलादी[16] हाथों के बल से, पर्वत भी झुक जाते हैं ।

तन-मन-धन सब मिला देश पर, हँसते हुए लुटा देंगे,
मानवता से दानवता का, पर्दा आज हटा देंगे ।

1. प्रातःकाल का उगता सूरज ; 2. क़िस्मत ; 3. बुराई ; 4. पवित्र ; 5. करोड़ ; 6. देवता का जीव रूप में पृथ्वी पर आना; 7. अनुकरण करने योग्य बात ; 8. पोशाक, वस्त्र ; 9. मिट्टी, धरती ; 10. उधार ; 11. नष्ट होना ; 12. भलाई ; 13. आकाश ; 14. मेहनत का पसीना ; 15. पृथ्वी ; 16. बहुत मज़बूत, लोहे जैसा ।

15 अगस्त 1983

18. आज़ादी का पूर्ण.....

आज़ादी का पूर्ण[1] सूर्य निकला था, जिस दिन स्वर्ण[2] समान,
वो गणतन्त्र दिवस है अपना, सबसे पावन पर्व[3] महान[4] ।

इस दिन को जन्मे थे भू पर, गाँधी जैसे सन्त महान,
नेहरू, बोस, प्रसाद, शास्त्री, देश को जिन पर है अभिमान ।

टूट गईं शृंखला[5] सभी तब बना, प्रिय नूतन[6] संविधान,
वो गणतन्त्र दिवस है अपना, सबसे पावन पर्व महान ।

ध्वज[7] का हरा रंग हरियाली, श्वेत[8] शान्ति सौम्य[9] का निशान,
केसरिया बल भरने वाला, स्मृति[10] वीरों का बलिदान ।

मध्य[11] में चक्र निरन्तर[12] कहता, जीवन का हर क्षण [13]गतिमान,
वो गणतन्त्र दिवस है अपना, सबसे पावन पर्व महान ।

आज पुण्य पावन इस दिन पर, यह संकल्प[14] उठाना है,
जिस माटी में जन्मे हम सब, उसका क़र्ज़ चुकाना है ।

अनुशासन कर्त्तव्य प्रेम से, करें देश का हम उत्थान[15],
वो गणतन्त्र दिवस है अपना, सबसे पावन पर्व महान ।

आज पर्व का ध्येय[16] यही है, जीवन का उद्देश्य यही है,
जाति-पाँति और ऊँच नीच का, भेद[17] मिटे सन्देश यही है ।

हों समान अधिकार सभी को, जग में अमर देश का नाम,
वो गणतन्त्र दिवस है अपना, सबसे पावन पर्व महान ।

1. पूरा ; 2. सोना ; 3. पवित्र त्यौहार ; 4. बहुत बड़ा ; 5. कड़ी ; 6. नया ; 7. झंडा ; 8. सफ़ेद ; 9. कोमल ; 10. याद ; 11. बीच ; 12. लगातार ; 13. पल ; 14. पक्का इरादा ; 15. उठना, उन्नति ; 16. उद्देश्य, लक्षण ; 17. अंतर ।

26 जनवरी 1984

19. बापू के बलिदान.....

बापू के बलिदान[1] की, नेहरू के अरमान[2] की,
सारे जग[3] में सबसे प्यारी, धरती हिन्दुस्तान की ।
मुकुट[4] हिमालय प्रहरी[5] बनकर,
दुश्मन को ललकार[6] रहा ।
गंगा यमुना कंठहार[7] हैं,
सागर चरण पखार[8] रहा ।

जिसमें लाली[9] फैल रही है, वीरों के बलिदान की,
सारे जग में सबसे प्यारी, धरती हिन्दुस्तान की ।
क्या गणना[10] है कितनी लम्बी,
हम सबकी इतिहास लड़ी[11] ।
हमें गर्व है इसमें अपने,
आदर्शों की नींव पड़ी ।

जहाँ मधुरिमा[12] फैल रही है, मधुर स्वरों[13] के गान की,
सारे जग में सबसे प्यारी, धरती हिन्दुस्तान की ।
निश-दिन[14] बदले चाल ज़माना,
बुनता ताना-बाना[15] है ।
हमको तो पथ[16] सच्चाई का,
जीवन में अपनाना है ।
नहीं डरेंगे बाधाओं[17] से, क़सम हमें ईमान[18] की,
सारे जग में सबसे प्यारी, धरती हिन्दुस्तान की ।

1. अपनी इच्छा से प्राण देना ; 2. इच्छा, कामना ; 3. संसार ; 4. ताज़ ; 5. पहरेदार ; 6. चुनौती ; 7. गले का हार ; 8. धोना ; 9. लाल रंग, यश ; 10. गिनती ; 11. पंक्ति, कतार ; 12. मीठापन ; 13. आवाज़ ; 14. रोज़ ; 15. लंबाई के बल ताने व चौड़ाई के बुने जाने वाले तागे ; 16. रास्ता ; 17. रुकावट ; 18. सच्चाई, नीयत, ईश्वर पर विश्वास ।

15 अगस्त 1984

20. धरम बनके आए.....

धरम बनके आए, करम बनके आए,
जहां में अनेकों, भरम[1] बनके आए ।
ये वीरानियाँ[2], जब भी देखी हैं तुमने,
तो हँसता हुआ, एक चमन[3] बनके आए ।

नीले अम्बर की ऊँचाई, लेता है मानव,
समन्दर की गहराई, छूता है मानव ।
मगर मन के दर्पण[4] में, अपनी ही छवि[5] को,
नहीं देख पाया, न पहचाना मानव ।

अह[6] के अँधेरों में, भटका हुआ मन,
हुआ है विमुख[7] जब भी, कर्तव्य[8] पथ से ।
नयी ज्योति[9] देने, दयावान तुम ही,
उदित[10] भास्कर[11] की, किरण बन के आए।

सभी नीतियाँ, शास्त्र की खो गई हैं,
निजी स्वार्थ के, दायरों[12] में सिमट कर ।
हिला दी हैं नीवें, प्रजातन्त्र की सब,
धरम जाति की, गुत्थियों[13] में उलझकर ।

नहीं एकता, प्रेम का कोई नाता[14],
समझता मनुज[15], स्वयं को विधाता[16] ।
तो ऐसे समय में, अहं को मिटाने,
नई दामिनी[17] की, चमक बन के आए ।

ये आतंक[18], व्यभिचार[19], कालाबाजारी,
अनाचार[20], फैला रही लूटमारी ।
है अज्ञान सागर में, नइया धरम की,
पड़ी बेबसी[21] में, ये भारत की नारी ।

अधर्मी दुशासन से, ख़ुद को बचाने,
पुकारा किसी, पाञ्चाली[22] ने जब भी ।
कृपा सिन्धु[23], अबला की लज्जा[24] बचाने,
धरम को उठाने, किशन बन के आए ।

ये आध्यात्म चिन्तन की, वेदों की भूमि,
ये गीता की, मानस[25] की, दर्शन की भूमि ।
ये गंगा की, यमुना की, तीर्थों की भूमि,
ये हिमगिरि[26], कुतुब[27], ताज़, वैष्णो[28], की भूमि ।

हुई रक्त रंजित[29] ये, हर एक युग में,
सजाया तुम्हीं ने, ले अवतार इसमें ।
कभी राम बन के, कभी श्याम बनके,
अनाचारियों का, दमन[30] बन के आए ।

ये वीरानियाँ, जब भी देखी हैं तुमने,
तो हँसता हुआ, एक चमन बन के आए ।

1. संदेह ; 2. उजड़ा हुआ, शांत ; 3. बग़ीचा ; 4. शीशा ; 5. तस्वीर ; 6. अहंकार ; 7. उदासीन, हटना ; 8. करने योग्य काम ; 9. प्रकाश ; 10. उगता हुआ ; 11. सूरज ; 12. सीमा ; 13. उलझा हुआ ; 14. रिश्ता ; 15. मनुष्य ; 16. संसार की रचना करने वाला, ईश्वर ; 17. आकाशीय बिजली ; 18. भय ; 19. दुराचार, दुष्कर्म ; 20. बुरा व्यवहार ; 21. मजबूर ; 22. पांचाल देश की राजकुमारी (द्रौपदी) ; 23. दया के सागर ; 24. इज़्ज़त ; 25. रामचरितमानस ; 26. बर्फ का पहाड़ ; 27. कुतुबमीनार, ध्रुव तारा ; 28. वैष्णव (भगवान विष्णु के उपासक) ; 29. ख़ून से रंगी हुई ; 30. बलपूर्वक दबाना ।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी, 1984

21. जब तक चमकते.....

जब तक चमकते नभ[1] में, ये चाँद और सितारे,
तब तक हो नेहरू चाचा, हर साँस में हमारे ।

फूलों में हँस रहे तुम, कलियों में खिल रहे हो,
आकाश और ज़मीं के, हर कण में बस रहे हो ।
जब तक पवन चलेगी, हर साँझ[2] और सकारे[3],
तब तक हो नेहरू चाचा, हर साँस में हमारे ।

मज़दूर का पसीना, बन कर महक रहे हो,
हर वीर देश प्रेमी के, मन में रम रहे हो ।
जब तक विहँसता[4] बचपन, आशाओं के सहारे,
तब तक हो नेहरू चाचा, हर साँस में हमारे ।

नाँगल[5] की जल तरंगें, नग़मे[6] तुम्हारे गाएँ,
बन कर प्रकाश किरणें, इस देश को सजाएँ ।
जब तक मचलती[7] नदियाँ, और मौन[8] हैं किनारे,
तब तक हो नेहरू चाचा, हर साँस में हमारे ।

सपना तुम्हारा चाचा, इस देश की ख़ुशहाली,
ये वो चमन है चाचा, थे तुम ही जिसके माली[9] ।
जब तक गुलाब खिलते, इस बाग में तुम्हारे,
तब तक हो नेहरू चाचा, हर साँस में हमारे ।

1. आकाश ; 2. शाम ; 3. सुबह ; 4. हँसना ; 5. भाखड़ा नाँगल बाँध ; 6. गीत ; 7. आतुर, व्याकुल ; 8. शांत ; 9. फूलों की देखभाल करने वाला ।

14 नवम्बर 1984
(बाल दिवस)

22. बागवां ने जिस चमन को.....

बागवां[1] ने जिस चमन[2] को, प्यार से सींचा सजाया,
फूलता फलता किया, हर तीव्र[3] झंझा[4] से बचाया ।
उस चमन में फूल के संग[5], शूल[6] भी पलता गया,
शूल का जो काम था, आख़िर वही उसने किया ।
हर कहर[7] स्वीकारती सी, नियति[8] को धिक्कारती[9] सी,
रक्त[10] से इतिहास रंगती, एक सिसकती[11] शाम आई ।

देश का आधार[12] थीं, तुम हर दीये की रोशनी,
बेसहारों का सहारा, विश्व[13] की प्रियदर्शिनी[14] ।
राष्ट्र संकट की नदी का, तुम अडिग[15] अविचल[16] किनारा,
डूबता मन हर घड़ी, ढूँढ़ेगा माँ आँचल तुम्हारा ।
टिमटिमाता[17] दीप लेकर, धुंध[18] में कुछ खोजती सी,
विश्व की श्रद्धाञ्जलि[19] बन, एक सिसकती शाम आई ।

कोई उपमा[20] ही नहीं, अब देश के दुर्भाग्य की,
माँ तुम्हारे साथ ही, अर्थी उठी विश्वास की ।
बन गये रक्षक[21] ही भक्षक[22], एक अनहोनी हुई,
'राष्ट्रहित में प्राण दूँगी', साध[23] ये पूरी हुई ।
मौन[24] अन्तर्वेदना[25] को, आँसुओं से खींचती सी,
युग का दु:खद[26] विराम[27] बन कर, एक सिसकती शाम आई ।

1. माली ; 2. बग़ीचा ; 3. तेज ; 4. आँधी ; 5. साथ ; 6. काँटा ; 7. संकट ; 8. भाग्य ; 9. निंदा करना ; 10. खून ; 11. अंदर ही अंदर रोना ; 12. सहारा ; 13. संसार ; 14. सुंदर लगने वाली ; 15. न डगमगाने वाला ; 16. स्थिर ; 17. चमकना ; 18. हवा में उड़ती धूल ; 19. आदर प्रकट करने के लिए कहे गये शब्द ; 20. समता, तुलना ; 21. पहरेदार ; 22. खा जाने वाला ; 23. आकांक्षा, अभिलाषा ; 24. चुप्पी, न बोलना ; 25. मन का दु:ख ; 26. क्लेशकर ; 27. अटकाव, विश्राम ।

23. ज़िन्दगी है आग.....

ज़िन्दगी है आग पानी, या गुलाबों का चमन[1],
या कि है बस अंजुरी[2] भर, आँसुओं का आचमन[3] ।

एक मोती भी मिला ना, गीत ग़ोताखोर को,
जल महल में काँपते हैं, सोन मछली के नयन[4] ।

काँपती बिजली, हवाएँ पेड़ से बँध चीखती हैं,
हो गया सुख ज़िन्दगी का, पीर[5] के हाथों ग़बन [6]।

एक नन्हा दीप जलता, है तमोव्यापी[7] गगन[8],
इस अँधेरे में न जाने, ढूँढ़ता किसको ये मन ।

दिन सुनहरे रात चाँदी की, मिली फिर भी सदा,
बस कँटीली बेल से, लिपटा रहा पागल बदन ।

दर्द मन में है कि मन है, दर्द में किसको ख़बर ।
बन गई है शूल[9] अब तो, चन्द्रमा की हर किरन ।

1. बग़ीचा ; 2. हथेलियों से बनाया गया गढ्ढा ; 3. ओक से लेकर जल पीना (पूजन, शुद्धि हेतु) ; 4. आँख ; 5. दर्द, वेदना, दु:ख ; 6. अमानत की रक़म खा जाना ; 7. सब ओर अंधेरा ; 8. आकाश, आसमान ; 9. काँटा ।

24. अमर सभ्यता के प्रतीक.....

अमर सभ्यता[1] के प्रतीक[2], गणतन्त्र पर्व का अभिनन्दन[3],
गणतन्त्र पर्व का अभिनन्दन, शत कोटि बार है अभिनन्दन।

नत-मस्तक[4] अमर शहीदों को, जिनका यह पुण्य प्रसाद[5] मिला,
जिनकी यश[6] सुरभि[7] बसा अन्तस्[8] में, उपवन का हर फूल खिला ।

जिनके चरणों में श्रद्धा[9] से, झुकता आया है नीलगगन[10],
गणतन्त्र पर्व का अभिनन्दन, शत कोटि बार है अभिनन्दन।

देश प्रेम परिधान सभी का, श्रम[11] आभूषण बन जाए,
वाणी[12] मधुर[13] कंठ[14] कोकिल[15] सम[16], धर्म एकता बन जाए।

अनुशासन, कर्त्तव्य, प्रेम से, रंगे सभी के अन्तर्मन[17] ,
गणतन्त्र पर्व का अभिनन्दन, शत कोटि बार है अभिनन्दन ।

आज चुनौती बना है जीवन, अन्तर्बाह्य[18] समस्याओं से,
अभी सभी कितने आतंकित, भूख ग़रीबी विपदाओं[19] से ।

दृढ़ संकल्प उठाओ करने, भारत को नन्दन-कानन[20],
गणतन्त्र पर्व का अभिनन्दन, शत कोटि बार है अभिनन्दन।

स्वर्णिम[21] पावन इतिहास हमारा, अब न रक्त[22] से रंजित[23] हो,
शहीदों का बलिदान अमर, विश्वास और यशकीर्ति अमर हो।

लोकतन्त्र इस भारत का हो, विश्व[24] पूज्य वन्दित[25] जन-जन,
गणतन्त्र पर्व का अभिनन्दन, शत कोटि बार है अभिनन्दन।

1. किसी काल या युग का सामाजिक जीवन या व्यवहार ; 2. चिन्ह या निशान; 3. स्वागत ; 4. सिर झुकाकर नमन ; 5. ईश्वर की कृपा ; 6. प्रशंसा, प्रसिद्धि ; 7. सुगंध ; 8. अपने मन के भीतर ; 9. आदर ; 10. नीला आकाश ; 11. मेहनत ; 12. आवाज़ ; 13. मीठी ; 14. गला ; 15. कोयल ; 16. समान ; 17. मन के भीतर की चेतना ; 18. अंदर व बाह्य दोनों ; 19. विपत्ति ; 20. आनंद देने वाला घना वन ; 21. सुनहरा ; 22. ख़ून ; 23. रंगा हुआ ; 24. संसार ; 25. वंदना करने योग्य ।

26 जनवरी 1985

25. संकल्प एक है, उद्‌देश्य एक है.....

संकल्प[1] एक है, उद्‌देश्य[2] एक है,
धरती एक है, गगन एक है ।

देश अलग, प्रान्त[3] अलग, भाषा अलग हैं,
भाषाओं में बँधे हुए, अक्षर अलग हैं ।
अक्षरों में छिपा हुआ, भाव[4] एक है,
संकल्प एक है, उद्‌देश्य एक है ।

जाति अलग, धर्म अलग, वेश[5] अलग हैं,
परिधान[6] से ढके हुए, शरीर अलग हैं ।
शरीरों में विचरती[7] हुई, आत्मा एक है,
संकल्प एक है, उद्‌देश्य एक है ।

रंग अलग, रूप अलग, नाम अलग हैं,
योग्यता[8] से बँटे हुए, काम अलग हैं ।
हर काम को करा रही, वो भूख[9] एक है,
संकल्प एक है, उद्‌देश्य एक है ।

(अनेकता में एकता)
(1985)

1. पक्का इरादा ; 2. प्रयोजन ; 3. प्रशासनिक इकाई, राज्य ; 4. मन से उत्पन्न होने वाली भावना ; 5. रूप ; 6. पोशाक ; 7. घूमती हुई ; 8. क़ाबिलियत, सामर्थ्य ; 9. भोजन की इच्छा, क्षुधा, इच्छा ।

26. हुआ है क़त्ल.....

हुआ है क़त्ल[1] जिगरे[2] मुल्क[3], कुछ ही दिन गुज़रे,
अभी फ़िज़ाओं[4] में जख़्मों[5] की, कसक[6] बाकी है ।
शमा[7] बुझा के अँधेरों को, बढ़ाने वालों,
अभी ज़मीं पे चमकने को, आफ़ताब[8] तो है ।

ख़िज़ां[9] बहार[10] के निशान[11], छोड़ जाती है,
हर लहर एक नया पयाम[12], छोड़ जाती है ।
लगा के ख़ार[13] भी गले से, मुस्कराता है,
अभी चमन में निखरता हुआ गुलाब तो है ।

वतन परस्तों[14] की रूहें[15], फ़ना[16] नहीं होतीं,
ये दास्तानें[17] ज़बां[18] से, बयां[19] नहीं होतीं ।
अपनी कुर्बानियाँ देकर चले गये, वो मगर,
उन्हीं का नूर[20] समेटे[21], ये माहताब[22] तो है ।

हसीं है ज़िन्दगी जो देखो, हसीं[23] निगाहों[24] से,
नज़र का फ़र्क़ है, शिकवा[25] नहीं नज़ारों से ।
गर दीदार[26] की हसरत[27], नहीं बाकी दिल में,
तो रुख़[28] पे डाल लो, हाथों का ये नक़ाब[29] तो है ।

1. खून, हत्या ; 2. मन, साहस ; 3. देश ; 4. वातावरण ; 5. गहरी चोट ; 6. रुक-रुक कर होने वाली पीड़ा (दर्द) ; 7. दीया, मोमबत्ती ; 8. सूरज, तेज धूप ; 9. पतझड़ ऋतु ; 10. बसंत ऋतु ; 11. लक्षण ; 12. संदेश ; 13. क्षार (नमक, शोरा) ; 14. देश भक्त ; 15. आत्मा ; 16. नष्ट ; 17. कहानी ; 18. ज़बान, मुँह ; 19. बताना ; 20. रोशनी ; 21. इकट्ठा किये ; 22. चाँद ; 23. सुंदर, अच्छा ; 24. नज़र ; 25. उलाहना ; 26. दर्शन ; 27. कामना ; 28. चेहरा ; 29. मुँह ढकने का कपड़ा ।

27. देवकी नन्दन दु:ख भय.....

देवकी नन्दन[1] दु:ख भय भंजन[2], सब जग पालनहारे[3],
भवसागर[4] में मेरी नइया, तुम ही खेवनहारे[5] ।

जन्म समय ही तुमने ऐसा, चमत्कार दिखलाया,
अपनी जगह योगमाया को, मथुरा में बुलवाया ।

सोये प्रहरी[6], टूटे ताले, खुल गये बन्धन सारे,
यमुना धन्य[7] हुई पग[8] छू, प्रभु गोकुल धाम[9] पधारे ।

गोकुल ब्रज वृन्दावन प्रभु ने, लीला[10] रास[11] रचाई,
अगणित भेजे असुर कंस ने, सबने मुक्ति[12] पाई ।

किया चूर[13] अभिमान[14] इन्द्र का, गिरिवर[15] धारनहारे[16],
कंस भार से मुक्त किया, पृथ्वी को नन्द दुलारे ।

भरी सभा में द्रुपद सुता[17] की, प्रभु ने लाज बचाई,
मोह[18] भंग[19] किया अर्जुन का, सत्य की जीत कराई ।

सखा सुदामा की विपदा[20] के, तुम ही भंजनहारे,
सत्य धर्म और ज्ञान कर्म के, एक तुम्हीं रखवारे[21] ।

देवकी नन्दन दुख भय भंजन, सब जग पालनहारे,
भवसागर में मेरी नइया, तुम ही खेवनहारे ।

1. पुत्र ; 2. दूर करना ; 3. पालन-पोषण करने वाला ; 4. संसार ; 5. नाव पार लगाने वाला ; 6. पहरेदार ; 7. कृतार्थ ; 8. पैर ; 9. स्थान ; 10. खेल ; 11. आनंदमय खेल ; 12. स्वतंत्रता ; 13. तोड़ना ; 14. अहंकार ; 15. पर्वत (गोवर्धन) ; 16. उठाने वाले ; 17. पुत्री ; 18. अज्ञानता, ममता ; 19. दूर करना ; 20 परेशानी ; 21 रक्षा करने वाले ।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी
1985

28. समय नहीं है दास किसी का.....

जितने निमिष[1] मिले पलकों को,
जितनी मुस्कानें अधरों[2] को ।
जितनी साँसें इस जीवन को,
जितनी आहें[3] अन्तर्मन[4] को ।
परिवर्तन उनमें कर पाए,
नहीं है ये अधिकार किसी का ।
समय नहीं है दास किसी का ।

अरुणाचल[5] का भानु व्योम[6] में,
निज[7] प्रताप[8] किरणें फैलाता ।
किन्तु वही सन्ध्या[9] वेला[10] के,
अवगुण्ठन[11] में क्यों छिप जाता ।
क्लान्त[12] समीर[13] निरन्तर निशदिन,
दोहराता है गान उसी का ।
समय नहीं है दास किसी का ।

समय प्रवाह[14] निरन्तर बहता,
नहीं किसी की बाट[15] जोहता[16] ।
जो क्षण बीत गया जीवन का,
नहीं लौट कर कभी टोहता[17] ।
प्रासादों[18] के भग्न[19] खण्डहर,
देते हैं सन्देश इसी का ।
समय नहीं है दास किसी का ।

पल-पल जुड़ते युग बन जाते,
बूँद-बूँद से घट[20] भर जाते ।
सहयोगी बाँहों के बल से,
अगणित महल खड़े हो जाते ।
निज कत्तर्व्य बोध[21] है जिसको,
जन्म सफल है यहाँ उसी का ।
समय नहीं है दास किसी का ।

पुष्पित[22] सुरभित[23] अमराई[24] पर,
कोकिल[25] पंचम[26] तान[27] सुनाए ।
मधुकर[28] गुञ्जित नवलतिका[29] पर,
एक दिन पतझड़ धूल उड़ाए ।
जर्जर[30] तन[31] का मानस पंछी,
करता है एहसास[32] इसी का ।
समय नहीं है दास किसी का ।

1. पलक झपकना ; 2. होंठ ; 3. दु:ख भरी साँस ; 4. मन के भीतर की चेतना ; 5. प्रात:कालीन लाल रंग ; 6. आकाश ; 7. अपना ; 8. तेज़ ; 9. शाम; 10. समय ; 11. घूँघट, पर्दा ; 12. थका हुआ ; 13. हवा ; 14. बहाव ; 15. प्रतीक्षा करना ; 16. तलाश करना ; 17. खोजना ; 18. राज-महल ; 19. टूटे हुए ; 20. घड़ा ; 21. ज्ञान, जानकारी ; 22. फूलों से भरी ; 23. सुगंधित ; 24. आम का बाग ; 25. कोयल ; 26. पाँचवी ; 27. स्वर का समूह ; 28. भौंरा ; 29. नयी छोटी लता (टहनी) ; 30. कमज़ोर ; 31. शरीर ; 32. अनुभव, प्रतीति ।

29. कब तक मन को बहलाएंगे.....

जिसने हमको हाथ पकड़कर, हर अक्षर लिखना सिखलाया,
जीवन की हर पगडंडी[1] पर, आगे ही बढ़ना सिखलाया ।
जिसने सुदृढ़[2] नींव बनाकर, ऊँचे पद पर हमें बिठाया,
जिसने अपना ज्ञान लुटाकर, हमको ज्ञानी गुणी बनाया ।
जिसने अँधियारे जीवन में, ज्ञान ज्योति[3] का दीप जलाया,
स्वयं को विलय[4] किया है तब, हमको समाज के योग्य बनाया ।
उसका अहित[5] सोचकर क्या हम, अपना कुछ हित कर पाएंगे,
झूठे आश्वासन[6] दे-देकर, कब तक मन को बहलाएंगे ।

माली के श्रम कण से सिंचित, नन्हा पौधा तरुवर[7] बनता,
जितने फल लगते जाते हैं, उतना ही वह नीचे झुकता ।
पद प्रताप[8] किसका रहता है, एक स्वभाव ही रह जाता है,
निज[9] प्रताप दिखलाकर भानु[10], अस्ताचल[11] में छिप जाता है।
ऊपर देख के चलने वाला, एक दिन ठोकर भी खाता है,
कितना भी ऊँचा पद हो, एक दिन मिट्टी में मिल जाता है ।
झूठी शान-बान में लिपटे, हम भी कब तक रह पाएंगे,
झूठे आश्वासन दे-देकर, कब तक मन को बहलाएंगे ।

दिशा बताने वाला तो, स्थिर रह जाता एक जगह पर,
आने-जाने वाले वाहन, चल देते निज गंतव्यों[12] पर ।
यह कब किसने सोचा मन में, दिशा ज्ञान कराया किसने,
आगे बढ़ने की जल्दी में, पीछे मुड़कर देखा किसने ।

किन्तु आत्म सन्तोष उसे है, अपना फ़र्ज़ निभाया जिसने,
बदले में कुछ मिले ना मिले, खुद को नहीं गिराया उसने ।
आत्मज्ञान[13] पर भौतिकता[14] के, पर्दे नहीं गिरा पाएंगे,
झूठे आश्वासन दे-देकर, कब तक मन को बहलाएंगे ।

अभिमानी[15] गज[16] निर्जन[17] वन में, निर्भय[18] हो विचरण[19] करता है,
किन्तु वही जग[20] के निकृष्ट[21] प्राणी[22], पिपीलिका[23] से डरता है ।
कुछ न कुछ तो भय का कारण, सबके मन में ही रहता है,
जिससे प्रेरित[24] होकर ही मानव, दुष्कर्मों[25] से डरता है ।
दबी हुई एक चिनगारी भी, अवसर पाकर जल उठती है,
दुखी हृदय की आह[26] कभी भी, प्रलयंकारी[27] बन सकती है ।
नारों के इस साम्यवाद[28] को, जीवन में कब अपनाएंगे,
झूठे आश्वासन दे-देकर, कब तक मन को बहलाएंगे ।

1. पतला रास्ता ; 2. बहुत मज़बूत ; 3. रोशनी ; 4. लीन होना, समाप्त होना ; 5. बुरा करना ; 6. आशा दिलाना ; 7. पेड़ ; 8. तेज ; 9. अपना ; 10. सूरज ; 11. पश्चिम दिशा का वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य का छिपना माना जाता है ; 12. मंज़िल ; 13. अपनी आत्मा का ज्ञान ; 14. सांसारिक वस्तुओं की इच्छा ; 15. अहंकारी ; 16. हाथी ; 17. एकांत ; 18. बिना डरे ; 19. घूमना ; 20. संसार ; 21. छोटा ; 22. जीव ; 23. चींटी ; 24. उत्साहित होकर ; 25. बुरे कर्मों (काम) ; 26. दु:खी आवाज़ ; 27. नाश करने वाली ; 28. समानता का सिद्धान्त ।

30. दीप ये अनुराग का जलता रहे.....

विश्वव्यापी[1] घोर[2] तम[3] को दूर कर,
मौन[4] अन्तर्वेदना[5] को चूम कर ।
हर गली, घर, द्वार, आँगन देहरी,
दीप ये अनुराग का जलता रहे ।

एक है वसुधा, गगन भी एक है,
एक है दिनकर[6], निशाकर[7] एक है ।
एक सा फल दे रही, सबको प्रकृति,
जीवदाता भी सभी का, एक है ।

द्वेष[8] कटुता[9] को मिटाकर नेह[10] से,
आपसी अन्तर भुला कर प्रेम से ।
परस्पर सहयोग अरु[11] विश्वास से,
दीप ये अनुराग का जलता रहे ।

कौन कहता है अमिट[12] हैं, अपठित[13] लकीरें भाग्य की,
एक श्रम स्वीकार करता, हर चुनौती काल[14] की ।
साँस जो भी शेष हैं, कुछ कर चुकाने के लिये,
है वही मानव जो समझे, भावना इन्सान की ।

हर दु:खी का दर्द अपना जानकर,
जीव रूपी ब्रह्म को पहचान कर ।
हर मनुज[15] के उर[16] शिवालय[17] में सदा,
दीप ये अनुराग का जलता रहे ।

फूल ही चुनते रहे, जो सर्वदा[18],
चुभन शूलों[19] में है क्या, अनुमान[20] होगा ।
पाँव ने चूमे[21] किनारे, ही अभी तो,
धार[22] की गहराई का, क्या ज्ञान होगा ।

बल का सदुपयोग निर्बल का सहारा,
धन बने भूखे अपाहिज का गुज़ारा ।
हर कुटी में आस[23] जीने की जगाने,
दीप ये अनुराग का जलता रहे ।

1. संसार में फैले ; 2. गहरा ; 3. अंधकार ; 4. शांत ; 5. मन के अंदर की पीड़ा ; 6. सूरज ; 7. चाँद ; 8. बैर ; 9. कड़वाहट ; 10. प्रेम ; 11. और ; 12. न मिटने वाली ; 13. न पढ़ी हुई ; 14. समय ; 15. मनुष्य ; 16. हृदय ; 17. शिव मंदिर ; 18. हमेशा ; 19. काँटों ; 20. अंदाज ; 21. छुए, छूना ; 22. धारा ; 23. उम्मीद ।

31. ऐसी बहे प्रेम की धारा.....

हिम[1] खण्डों[2] का द्रवित[3] हृदय,
वसुधा[4] के अन्तस्[5] को हरषाये[6] ।
मृगतृष्णा[7] जल बिन्दु बने,
मरुथल[8] का सूनापन सरसाये[9] ।
हर केवट[10] की नइया को,
मिल जाये सही अनुकूल किनारा ।
जलचर[11], नभचर,[12] थलचर[13] चहकें,
ऐसी बहे प्रेम की धारा ।

क्यों बन्दी युग का निर्माता,
मज़हब की दृढ़[14] दीवारों में ।
देखें उसे दु:खी मानव की,
करुणा भरी विकल[15] आहों[16] में ।
ना मन्दिर, ना मसजिद, गिरजा,
ना निवास उसका गुरुद्वारा ।
मानव में परमेश्वर देखें,
ऐसी बहे प्रेम की धारा ।

कृषक[17] बनें प्रेमी धरती के,
फसल सुनहरा रंग दिखाए ।
श्रमिक पुजारी श्रम देवी पर,
अगणित श्रम कण[18] सुमन[19] चढ़ाए ।
देश भक्त कर्मठ[20] सेनानी,
बनें देश का अडिग[21] सहारा ।
जनता में नव[22]-जागृति[23] आए,
ऐसी बहे प्रेम की धारा ।

कुटियों में कृश[24] तन[25] के पिञ्जर[26],
कातर[27] करुण पुकार सुनाएँ ।
गर्वित[28] शिखर[29] स्वर्ण[30] महलों के,
आलिंगन[31] में उन्हें बसाएँ ।
अर्थ[32] विषमता[33] मिटे देश से,
व्यापक[34] फैले भाईचारा ।
भारत माँ का प्रमुदित[35] मन हो,
ऐसी बहे प्रेम की धारा ।

कोई नव कलिका[36] दहेज के,
दावानल[37] में झुलस न पाए ।
ममता का आँचल शैशव[38] से,
असमय में ही रूठ न जाए ।
मन पावन कंचन[39] सम निखरें,
गुंजित[40] मीरा का इकतारा ।
घर-घर मधुर फाग[41] रस बरसे,
ऐसी बहे प्रेम की धारा ।

विस्फोटक अणु शक्ति प्रलय[42] से,
भावी जनजीवन आतंकित[43] ।
राष्ट्रविरोधी कुछ तत्वों से,
लोकतान्त्रिक नीवें कम्पित[44] ।
भ्रष्टाचार समूल[45] विनाशक,
शुद्ध प्रशासन का उजियारा ।
राम राज्य के अंकुर[46] उपजें[47],
ऐसी बहे प्रेम की धारा ।

1. बर्फ ; 2. टुकड़े ; 3. पिघला हुआ ; 4. धरती ; 5. भीतर ; 6. खुश (सुख) प्रदान करे ; 7. ऐसी इच्छा जो संभव न हो ; 8. रेगिस्तान ; 9. हरा-भरा करना ;

10. नाव चलाने वाला ; 11. पानी में रहने वाले जीव ; 12. आकाश में उड़ने वाले जीव ; 13. ज़मीन पर रहने वाले जीव ; 14 कठोर, मज़बूत ; 15. व्याकुल, परेशान ; 16. दुःख भरी आवाज़ ; 17. किसान ; 18. मेहनत का पसीना ; 19. फूल ; 20. अच्छे से काम करने वाला ; 21. न हिलने वाला ; 22. नयी ; 23. जागना ; 24. कमज़ोर ; 25. शरीर ; 26. कंकाल ; 27. भयभीत ; 28. अभिमानी ; 29. चोटी ; 30. सोना ; 31. गले लगाना ; 32. धन ; 33 असमानता ; 34. विस्तृत ; 35. आनंदित ; 36. कली ; 37. आग ; 38. बचपन ; 39. सोना ; 40. गूँजना ; 41. फाल्गुन माह के उत्सव का गीत ; 42. नाश ; 43 भयभीत ; 44. हिलना ; 45. जड़ से ; 46. छोटा (नन्हा) पौधा ; 47. पैदा हों ।

32. चाचा नेहरू आज तुम्हारा

चाचा नेहरू आज तुम्हारा,
पावन[1] जन्मदिवस है आया ।
करके तुमको याद आज क्यों,
अपना नन्हा[2] दिल भर आया ।

बाल-दिवस[3] का नाम दिया था,
तुमने अपने जन्म-दिवस को ।
यह ऋण[4] कभी चुका पायेंगे,
जो स्नेह[5] दिया था हमको ।
अर्पण[6] करने तुमको अपने,
सब गुलाब उपवन के लाया ।
करके तुमको याद आज क्यों,
अपना नन्हा दिल भर आया ।

जो पथ[7] तुमने हमें दिखाया,
कदम उसी पर बढ़ते जाएँ ।
पाठ पढ़ाया कर्त्तव्यों का,
जीवन में अपनाते जाएँ ।
पुण्य कर्म थे अपने जो,
तुम जैसा नेता हमने पाया ।
करके तुमको याद आज क्यों,
अपना नन्हा दिल भर आया ।

भारत की इस बग़िया[8] के थे,
चाचा तुम ही सच्चे माली[9] ।
अपने लहू[10] से सींची तुमने,
इस उपवन की हर एक डाली ।

जैसा सुन्दर नाम तुम्हारा,
वैसा ही तुमने दिल पाया ।
करके तुमको याद आज क्यों,
अपना नन्हा दिल भर आया ।

1. पवित्र ; 2. छोटा ; 3. दिन ; 4. क़र्ज़ ; 5. प्यार ; 6. सौंपना ; 7. रास्ता ; 8. बग़ीचा ; 9. बग़ीचे की रखवाली करने वाला ; 10. ख़ून ।

14 नवम्बर 1990
(बाल दिवस)

33. मैं जब इन गलियों में आऊँ.....

मैं जब इन गलियों में आऊँ, तुम मत मुझे निमंत्रण देना,
धूल डगर[1] की श्रान्त[2] पथिक[3] के, तलवे[4] तो सहला[5] ही देगी।

इतनी घुटन[6] बढ़ी अन्तस्[7] में, जितना सन्ध्या का कोलाहल [8],
मधुर सोमरस[9] के बदले में, जीवन पीता रहा हलाहल[10] ।
सागर की समता[11] निर्झर[12] के, शीतल जल से कर न सकूँगा,
जिसने इस पावन धरती का, सींचा ऊसर[13] पड़ा धरातल [14]।
सतरंगी[15] रंगीनी जग की, तुम मत मुझे निमन्त्रण देना,
खेतों की हरियाली, बोझल[16] पीड़ा[17] तो सहला ही देगी ।

पुण्य भरे महलों ने मेरा, पाप भरा जीवन ठुकराया,
झूठे आडम्बर[18] ने, सूनी[19] कुटिया का चुम्बन बिसराया ।
इस उन्माद[20] भरे यौवन की, अनजानी अनगित[21] भूलों को,
मख़मल सी कोमल रजनी[22] की, नीरव[23] घड़ियों ने दुलराया ।
तुम अपनी सफ़ेद शय्या[24] पर, कोई कलुष[25] न लगने देना,
यह धानी[26] पुआल[27] की सथरी[28], सपने तो बहला ही देगी ।

तुमने इन रजनीगन्धा के, फूलों में सुगन्ध भर डाली,
कोकिल[29] की पंचम तानों[30] ने, अलसित[31] मादकता[32] दे डाली।
तुमने इस नश्वर[33] काया[34] की, सुन्दरता पर गर्व किया क्यों,
मैंने अपने भाव जगत में, अगणित रम्भाएँ[35] रच डालीं ।
अपने प्रियतम की महफ़िल में, तुम मत मुझे निमंत्रण देना,
हसरत[36] भरी उनींदी[37] पलकें, अपने पास बुला ही लेंगी ।

ओस अगर मोती बन जाती, तो संसार गरीब न होता,
अगर अधर[38] अमृत बरसाते, तो जग में श्मशान[39] न होता ।
शाश्वत[40] गीतों के द्वारा ही, कवियों ने प्रिय की पूजा की,
वरना साँसों के बन्धन में, बँधा हुआ भगवान न होता ।
प्यासा रहने दो सुरबाला[41], तुम मत मुझे निमन्त्रण देना,
नेह[42] भरी माटी की गागर, मेरी प्यास बुझा ही देगी ।

1. रास्ता ; 2. थका ; 3. राही ; 4. पैरों के नीचे का भाग ; 5. प्यार से धीरे से हाथ फिराना ; 6. घबराहट ; 7. मन के भीतर ; 8. शोर ; 9. अमृत ; 10. विष, जहर ; 11. तुलना ; 12. झरना ; 13. बंजर, जिसमें कुछ पैदा न हो ; 14. जमीन का ऊपर का भाग ; 15. सात रंग ; 16. भारी ; 17. दर्द, कष्ट ; 18. दिखावा ; 19. एकांत, शांत ; 20. पागलपन ; 21. गणना न हो सके ; 22. रात ; 23. शब्द-रहित ; 24. पलंग, बिछौना ; 25. मैल ; 26. हल्का हरा रंग ; 27. पयाल, पियरा ; 28. बिछौना, बिस्तर ; 29. कोयल ; 30. संगीत में स्वर का विस्तार ; 31. आलस्य से भरा ; 32. नशा ; 33. नाश होने वाला ; 34. शरीर ; 35. सुंदर नारी, स्वर्ग की एक अप्सरा ; 36. उम्मीद ; 37. नींद से भरी ; 38. होंठ ; 39. जहाँ मुर्दों को जलाया जाता है ; 40. सदा रहने वाला ; 41. अप्सरा ; 42. प्रेम ।

34. फूल खिलते हैं, बिखर जाते हैं.....

फूल खिलते हैं, बिखर[1] जाते हैं,
अश्क[2] पलकों से, बिछुड़[3] जाते हैं ।
स्याह[4] रातों में, उजाले के लिए,
चिराग़[5] ख़ुद नहीं जलते, जलाए जाते हैं ।

न हमसफ़र, न कारवां[6] है कोई,
न है मंज़िल, न ही मंज़िल का है निशां[7] कोई ।
रेत सी ज़िन्दगी पे, क़दमों के,
निशान ख़ुद नहीं बनते, बनाए जाते हैं ।

ज़मीं वही है, आसमां भी वही,
मगर कहाँ रहा, इन्सान वही ।
यहाँ तो वहशियत[8] के चेहरों पर,
नक़ाब[9] ख़ुद नहीं गिरते, गिराए जाते हैं ।

ये आसमां भी रो पड़ा, शबनमी[10] बूँदें,
ज़मीं कराह[11] उठी देख के, भूखी नींदें ।
सर्द[12] रातों में ठिठुरते[13] हुए, जिस्मों[14] के लिए,
आशियाँ[15] ख़ुद नहीं बनते, बनाए जाते हैं ।

रुकी दरिया[16] को, रवानी[17] दे दो,
टूटे ख़्वाबों को, कहानी दे दो ।
दिल की नफ़रत को मुहब्बत में बदल डाले जो,
वो साज़[18] ख़ुद नहीं बजते, बजाए जाते हैं ।

1. फैलना ; 2. आँसू ; 3. अलग होना ; 4. काली ; 5. दीपक ; 6. साथ चलने वाला समूह ; 7. चिह्न, लक्षण ; 8. जंगली, भयानक ; 9. मुखौटा, पर्दा ; 10. ओस की बूँद ; 11. दर्द से चिल्लाना ; 12. ठंडी या सर्दी ; 13. काँपते ; 14. शरीर ; 15. घर, बसेरा ; 16. नदी ; 17. बहाव ; 18. गाने के साथ बजाया जाने वाला बाजा ।

35. पथ से कैसे हार मान लूँ.....

हिमगिरि[1] की ऊँचाई को, चढ़कर देखा है,
ग़ोता[2] खाकर परखी[3], सागर की गहराई ।
नंगे पग[4] पथरीली, पगडंडी[5] नापी है,
अथक[6] परिश्रम से पाई है, ये अमराई[7] ।

सब कुछ अनुभव से सीखा है,
क्यों कल्पित[8] को सत्य मान लूँ ।
मैंने बस चलना सीखा है,
पथ से कैसे हार मान लूँ ।

तकनीकी[9] ने कम कर दी है,
धरती से अम्बर की दूरी ।
कितने योजन[10] और बढ़ गई,
लेकिन मन से मन की दूरी ।

सबके मन को जोड़ सके जो,
ऐसा कोई गीत बना लूँ ।
मैंने बस लिखना सीखा है,
जीवन से क्यों हार मान लूँ ।

1. बर्फ का पहाड़ ; 2. पानी में डूबना ; 3. जाँचना, परखना ; 4. पैर ; 5. पतला रास्ता ; 6. न थकने वाला ; 7. आम का बाग, उद्यान ; 8. कल्पना, सोचा हुआ ; 9. प्राविधिक, शिल्पक ; 10. दूरी की एक लम्बी नाप ।

36. अब रूप न जाने क्या होगा.....

कुछ उठती गिरती गिनी चुनी सी, श्वास[1] कड़ी[2] से जुड़ा हुआ,
कर्त्तव्य, प्रेम, ममता, मर्यादा[3], अनुबन्धों[4] से बँधा हुआ ।
लम्बी पथरीली पगडंडी[5] पर, चलता गिरता उठ जाता,
पल-पल ढलते इस जीवन का, अब रूप न जाने क्या होगा ।

कितने युग बीते हर युग में, त्याग और बलिदान किया,
सीता, सावित्री, हाड़ी, पन्ना, बन जग को आदर्श दिया ।
अपनी सीमाओं के घेरे[6] में, बँधकर भी है क्रियाशील[7],
उस चिर[8] उपेक्षिता[9] नारी का, अब रूप न जाने क्या होगा ।

प्राचीन सभ्यता का प्रतीक, सुर[10], नर[11], मुनि[12] को भी जो प्यारा,
आध्यात्म ज्ञान का शिरोमणि[13], बहती पावन सुरसरि[14] धारा ।
नित जल कर हिंसा ज्वाला में भी, हिमगिरि जैसा अटल[15] अचल [16],
इस नई सदी में भारत का, अब रूप न जाने क्या होगा ।

अन्तस्[17] के कोमल भावों को, शब्दों से परिभाषित[18] करती,
रस, अलंकार, छन्दों में बँध, मानव मन को पुलकित[19] करती ।
पंचम मद्धिम[20] कोमल स्वर के, ध्वनि आलिंगन में सजी हुई,
मन की मृदु[21] भाषा कविता का, अब रूप न जाने क्या होगा ।

इस देश की दौलत युवा शक्ति, कुण्ठा[22] विभीषिका[23] में पिसती,
इस कमर तोड़ मँहगाई में, घुट कर जीवन यापन करती ।
कुछ दिशाहीन, कुछ लक्ष्यहीन, कुछ बेकारी के मारे हैं,
गुमराह[24] हुए नवयुवकों का, अब रूप न जाने क्या होगा ।

कुछ झूल रहे सुख पलनों में, कुछ फुटपाथों पर सोते हैं,
कहीं ऊँचे महल दुमहले हैं, कहीं घर के छप्पर रोते हैं ।
कहीं मुहर[25] भरे हैं स्वर्ण[26] कलश[27], कहीं जल की गागर भी खाली ,
इस फैली घोर विषमता[28] का, अब रूप न जाने क्या होगा ।

1. साँस ; 2. ज़ंजीर ; 3. सीमा, हद ; 4. संबंध ; 5. पतला रास्ता ; 6. चारों तरफ से बंद ; 7. कर्म करने वाला ; 8. बहुत दिनों तक ; 9. जिसका अनादर होता है ; 10. देवता ; 11. मनुष्य ; 12. मनन करने वाला ; 13. श्रेष्ठ व्यक्ति ; 14. गंगा ; 15. पक्का ; 16. गतिहीन ; 17. मन के भीतर के ; 18. जिसे वाक्य में प्रस्तुत किया गया हो ; 19. प्रेम, हर्ष ; 20. मंद, हल्का ; 21. कोमल ; 22. निराशा ; 23. भय ; 24. राह से भटके ; 25. सिक्के, पैसा ; 26. सोना ; 27. घड़ा ; 28. असमानता ।

37. कुछ देर यहीं पर रुक जाना.....

है घनी[1] छाँव[2] अमराई[3] की,
कोकिल[4] की तानों[5] से कूजित [6]।
बौरों[7] से सुरभित[8] डाल-डाल,
भवरों के गुञ्जन[9] से गुञ्जित ।

सतरंगी[10] तितली मँडरातीं[11],
उपवन के विकसित फूलों पर ।
भर कर पराग[12] कण झूल रहीं,
नन्हीं बेलों के झूलों पर ।

पनिहारिन[13] की पंक्तियाँ भरे हैं,
मधुर नीर[14] निज[15] गागर[16] में ।
जिनकी परछाँई नाच रही है,
हिलते जल के सागर में ।

ओ श्रान्त[17] पथिक[18] से मेरे मन,
तुझको है दूर अभी जाना ।
तन-मन को थोड़ा बहलाने,
कुछ देर यहीं पर रुक जाना ।

इस तरु[19] की शीतल[20] छाया में,
दृग[21] देख रहे जगते सपने ।
कितना सुन्दर वह बचपन था,
जब राजा थे मन के अपने ।

कुछ टूटे चन्द खिलौनों से ही,
सुख मिल जाता था अपार[22] ।
हर रात दिवाली लगती थी,
हर दिन था होली का त्यौहार ।

सब कुछ है अब भी वैसा ही,
पर क्यों मेरा मन भूला है ।
वो सुप्रभात[23] था जीवन का,
यह ढलती सन्ध्या[24] वेला[25] है ।

ये चक्र समय का, जीवन में,
बस यूँ ही है आना जाना ।
अपने मन को फिर समझाने,
कुछ देर यहीं पर रुक जाना ।

1. जहाँ वस्तुएँ बहुत पास-पास हों ; 2. छाया ; 3. आम का बाग, उद्यान ; 4. कोयल ; 5. संगीत में स्वर का विस्तार ; 6. मधुर स्वर में कहा हुआ ; 7. आम की मंजरी ; 8. सुंगधित ; 9. भौरों की आवाज़ ; 10. सात रंग वाली ; 11. चक्कर लगाना ; 12. फूलों का रस ; 13. पानी भरने वाली ; 14. जल ; 15. अपनी ; 16. ऊँचे गले वाला घड़ा ; 17. थके हुए ; 18. राही ; 19. पेड़ ; 20. ठंडी ; 21. आँख ; 22. अत्यधिक ; 23. सुंदर प्रातःकाल ; 24. शाम ; 25. समय ।

38. भरत के अमर शहीदों को.....

भारत के अमर शहीदों को,
शत् कोटि[1] बार हम नमन[2] करें ।

ऊँचे पर्वत के शिखरों[3] पर,
चट्टान[4] बने जो अड़े रहे ।
तोपों के गोलों के आगे,
सीना ताने जो खड़े रहे ।
ख़ुद झुके ना झुकने दिया तिरंगा,
उन वीरों को नमन करें ।

भारत के अमर शहीदों को,
शत् कोटि बार हम नमन करें ।

वो लाल[5] वीर माताओं के थे,
क़र्ज़ दूध का चुका गए ।
बहनों की राखी निभा गए,
इतिहास सुनहरा बना गए ।
बुझ कर जो और अधिक चमके,
उन दीपों को हम नमन करें ।

भारत के अमर शहीदों को,
शत् कोटि बार हम नमन करें ।

उगते सूरज की लाली[6] में,
रंगत[7] जिनके बलिदानों की ।
चन्दा की धवल[8] चाँदनी में,
अब कीर्ति[9] छिपी दीवानों की ।
जो वतन परस्ती[10] में झूमे,
उन परवानों[11] को नमन करें ।

भारत के अमर शहीदों को,
शत् कोटि बार हम नमन करें ।

1. सौ करोड़ ; 2. नमस्कार ; 3. चोटी ; 4. पत्थर का विशाल टुकड़ा ; 5. छोटा प्रिय बच्चा ; 6. लाल रंग ; 7. रंग से युक्त ; 8. उजला, सफ़ेद ; 9. यश, प्रसिद्धि ; 10. भक्ति, पूजना ; 11. अत्यंत मुग्ध होकर अपना बलिदान देने वाला ।

कारगिल युद्ध में शहीद हुए सैनिकों
को श्रद्धांजली
(मई 1999)

39. क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ?

क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ?
रूद्ध[1] कंठ है खंडित[2] हैं स्वर, मन ही मन घबराऊँ ।

सुर[3], नर[4], मुनि सब महिमा गाते, गाते सब किन्नर[5] किन्नरियाँ ,
राग नये दिन रात सजाते, आह्लादित[6] करती हुई ध्वनियाँ ।

मन के टूटे इन तारों पर, कौन सा राग सजाऊँ,
क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ?

नव[7] परागमय[8] पुष्प सुगंधित, करते माँ तुमको सब अर्पण,
शीतल[9] निर्मल[10] अरू[11] पावन[12] जल, करता चरणों का प्रक्षालन[13] ।

मुरझाए निर्गन्ध[14] पुष्पों को, कैसे तुम्हें चढ़ाऊँ,
क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ?

शुभ्र[15] कमल पर तुम हो आसित[16], शीश[17] सुशोभित[18] मुकुट सुनहरा,
तेरी कृपा से कुमति[19] सुमति[20] हो, दूर हटे अज्ञान[21] अंधेरा ।

घने तिमिर[22] में कुछ ना सूझे, अविरल[23] नीर बहाऊँ,
क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ?

तेरी वीणा का हर एक स्वर, सकल[24] भुवन[25] करता स्पंदित[26],
नश्वर[27] मानव जीवन होता, अर्थवान[28] शुभकर[29] आनन्दित ।

मैं तेरी शरणागत[30] हूँ माँ, तुमको शीश नवाऊँ,
क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ? क्या गाऊँऽऽ?

1. रुका हुआ ; 2. टुकड़े किया हुआ, टूटा हुआ ; 3. देवता ; 4. मनुष्य, पुरुष ; 5. स्वर्ग का गायक, गाने वाली जाति ; 6. प्रसन्न ; 7. नवीन, नया ; 8. पुष्प रज ; 9. ठंडा ; 10. साफ़ ; 11. और ; 12. पवित्र ; 13. धोना ; 14. बिना खुशबू ; 15. सफ़ेद ; 16. बैठना ; 17. सिर ; 18. सजा हुआ ; 19. बुरी बुद्धि वाला ; 20. अच्छी बुद्धि वाला ; 21. जानकारी न होना 22. अंधकार ; 23. लगातार ; 24. सारा ; 25. संसार ; 26. धड़कता हुआ, गतिशील ; 27. नाश होने वाला ; 28. प्रयोजन भरा ; 29. शुभ करने वाला, मंगल करने वाला ; 30. पनाह (शरण) में आया हुआ ।

22.01.2009
बुलन्दशहर

40. माना कठिन लम्बा सफ़र.....

माना कठिन लम्बा सफ़र, उस पर अनजानी डगर,
तेरे मेरे साथ को, अपने यहाँ अभी और हैं ।

झूमते पत्तों से अब भी, झाँकती है चाँदनी,
देख लें जो दूर तक, दिन भी ऐसी रोशनी ।
आने वाले मोड़ पर, कुछ मकां अभी और हैं,
तेरे मेरे साथ को, अपने यहाँ अभी और हैं ।

है ज़मीं थोड़ी सी पथरी, आसमां है थोड़ा सख़्त,
घास में है अब भी नरमी, साया देते हैं दरख़्त[1] ।
हैं हवाएँ अब भी मध्यम[2], गुलिस्तां[3] अभी और हैं,
तेरे मेरे साथ को, अपने यहाँ अभी और हैं ।

माना हम हैं ख़ाक[4] से, अपना नहीं कोई जौहरी[5],
वक़्त है बदला हुआ, बिकती है अब तो धूल भी ।
है खुला बाज़ार भी, क़द्रदां[6] अभी और हैं,
तेरे मेरे साथ को, अपने यहाँ अभी और हैं ।

तुम घिरे अवसाद[7] में, या उठी है कोई पीर[8],
वेदना ने आ के खींची, मेरे चहरे पर लकीर ।
देखना इस ओर भी, मेरे यहाँ अभी और हैं,
तेरे मेरे साथ को, अपने यहाँ अभी और हैं ।

1. पेड़ ; 2. अनुकूल ; 3. फूलों का बाग़ ; 4. धूल ; 5. बहुमूल्य रत्न बेचने एवं परखने वाला व्यापारी ; 6. कीमतें समझने वाले, क़दर करने वाले ; 7. उदासी, हार की भावना, खेद ; 8. दर्द, वेदना ।

08.04.2004
सिडनी

41. कल की बातें.....

कल की बातें क्या करें ? कल किसी का कब हुआ ?
आज है और साथ है, कल कहाँ अभी और हैं ।

क्यों रुके हो राह में, क्यों हैं ठिठके ये क़दम,
मंज़िलों का दें पता, ऐसे निशां अभी और हैं ।

कुछ मैं कहूँ और तुम सुनो, कुछ तुम कहो और मैं सुनूँ,
सुनने-सुनाने के सिलसिले, बाक़ी बयां अभी और हैं ।

इस राह का बस एक नियम, है इम्तिहां हर एक कदम,
कितने जाने देने को, ये इम्तिहां अभी और हैं ।

ग़म न कर मेरे साथिया, छोटा नहीं यह कारवां,
साथ देंगे जो दूर तक, वो मेहरबां अभी और हैं ।

जो भी जैसी बन पड़े, आधी-अधूरी कह चलो,
पूरी कहें जो दास्तां, ऐसे यहाँ अभी और हैं ।

08.04.2004
सिडनी

42. आ मेरे महबूब फिर से.....

आ मेरे महबूब[1] फिर से, प्यार की बातें करें,
दिन उजालों से भरें, चाँदनी रातें करें ।

दिन मुझे लगते हैं बोझिल[2], रातें लगती हैं उदास,
ये मुझे क्या हो गया, क्यों बुझी हैं मेरी चाह ।

चाहतों के गुल[3] खिलें, आ करामातें[4] करें,
आ मेरे महबूब फिर से, प्यार की बातें करें ।

रंग फीके स्वप्नों[5] के, फूलों में ख़ुशबू नहीं,
सब है मेरे पास में, खो गया है मन कहीं ।

ढूँढ़ के लाना ज़रा, कुछ मुलाक़ातें करें,
आ मेरे महबूब फिर से, प्यार की बातें करें ।

याद है ना वो समाँ, ये कभी पहले हुआ,
यूँ तो हम कुछ दूर थे, अपनी पलकों ने छुआ ।

आज फिर इन कनखियों[6] से, कुछ नयी घातें करें,
आ मेरे महबूब फिर से, प्यार की बातें करें ।

ये समय है भँवर सा, और शिथिल[7] हैं मेरे हाथ,
बाँध कर रखना मुझे, छूटने पाए न साथ ।

डूबते हों आज डूबें, या किनारातें[8] करें,
आ मेरे महबूब फिर से, प्यार की बातें करें ।

1. प्रिय ; 2. भार ; 3. फूल ; 4. चमत्कार ; 5. सपना ; 6. तिरछी नज़र से देखना ; 7. ढीला, थका माँदा ; 8. किनारे आना ।

जून 2004
सिडनी

43. चाहतें भी क्या करें.....

चाहतें भी क्या करें और, जुस्तजू[1] भी क्या करें,
पास में मेरे वो जब हों, आरज़ू[2] भी क्या करें ।

फिर कोई तूफ़ान उमड़ा, और उठा सैलाब[3] सा,
आँखें बोलीं जा निकल जा, बंदिशें[4] भी क्या करें ।

पास में बैठे वो मेरे, डाल कर चिलमन[5] हया[6],
देखना हो कैसे देखें, गुफ़्तगू[7] भी क्या करें ।

दिल मेरा मैंने है माना, दर्द है तेरे लिए,
दर्द जब ख़ुद ही दवा हो, राहतें भी क्या करें ।

देखो मेरे सामने, बाहें फैलाए मुक़ाम[8],
राह देखे क्यों कोई, हसरतें[9] भी क्या करें ।

आँखें रोशन हों किसी से, मन में हो लागी लगन,
गीत-गज़लें शायरी ये, महफ़िलें भी क्या करें ।

1. तलाश ; 2. इच्छा, कामना ; 3. नदी की बाढ़ ; 4. बंधन, रूकावट ; 5. पर्दा ; 6. शर्म, लज्जा ; 7. बातचीत ; 8. पड़ाव, घर ; 9. कामना ।

जुलाई 2004
सिडनी

44. ज़िन्दगी की दास्तां.....

ज़िन्दगी की दास्तां[1], मेरी हुई ऐसे बयां[2],
भूली-बिसरी चन्द[3] यादें, साथ में कुछ तल्ख़ियाँ[4] ।

शान्त शीतल[5] शुभ समीरे[6], मैं रहा नदिया के तीरे[7],
दूर से देखीं सदा ही, पार लगती कश्तियाँ[8]।

क्षितिज[9] पर शाम और सवेरे, घिरते थे बादल घनेरे[10],
हर बरस देखीं तरस के, आती-जाती बदलियाँ ।

प्राण मधुमय[11] रस भरे, खुशबू की चादर धरे,
ये बहारें घर से गुज़रीं, बन्द थीं जब खिड़कियाँ ।

भोर की पहली किरन से, ढूँढ़ता जिसको जतन से,
राह थक कर सो गई, दीखता था जब मकां ।

मेरे अपने तब सभी थे, मेरे अपने सब वहीं थे,
हम अकेले क्यों हुए जब, टूटती थीं बिजलियाँ ।

ये न होता वो न होता, होना ही था यूँ न होता,
चाहतों का क्रम निरंतर[12], इनका था आख़िर[13] कहाँ ।

1. कहानी ; 2. वर्णित, कही गयी ; 3. कुछ ; 4. कड़ुआपन ; 5. ठंडी ; 6. हवा, समीर ; 7. नदी का किनारा ; 8. नावें ; 9. जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखायी देते हैं ; 10. घने ; 11. मिठास से भरा हुआ ; 12. लगातार ; 13. अन्त।

जुलाई 2004
सिडनी

45. माना कठिन लम्बी डगर.....

माना कठिन लम्बी डगर, नहीं दूर तक कहीं छाँव है,
कुछ देर यूँ ही और चल, बस आने वाला गाँव है ।

खिलता गया तो फूल सा, सिमटा रहा तो शूल[1] है,
जुड़ता गया शक्ति है तू, बिखरा रहा तो धूल है ।

मन में तेरे साहस भरा, और साथ देते पाँव हैं,
कुछ देर यूँ ही और चल, बस आने वाला गाँव है ।

साथ होंगे यूँ कई, जो साथ दे वो क़रीब है,
बदलेंगे ये मौसम सदा, बदले न वो ही मीत[2] है ।

चलते रहो राहें कहें, रुक गए तो ठाँव[3] है,
कुछ देर यूँ ही और चल, बस आने वाला गाँव है ।

मन तेरा क्यों आज बोझिल[4], दिल पर रखा सलीब[5] है,
जो खो गया है वह भरम[6], जो मिल गया वो नसीब[7] है।

ठोकर लगी रोता है क्यों, नहीं आख़िरी यह दाँव है,
कुछ देर यूँ ही और चल, बस आने वाला गाँव है ।

ये सुबह फिर शाम की, बाहों में आकर सो गई,
घर की हर दहलीज़ पर, यह राह भी गुम हो गई ।

कहते हैं जिसको ज़िन्दगी, उस पार लगती नाव है,
कुछ देर यूँ ही और चल, बस आने वाला गाँव है ।

1. काँटा ; 2. प्रिय ; 3. ठिकाना, स्थान ; 4. भारी ; 5. सूली ; 6. भ्रम ; 7. भाग्य ।

–अगस्त 2004
सिडनी

46. कभी भूले से किया.....

कभी भूले से किया, तूने इशारा होता,
मेरे महबूब, गया वक़्त हमारा होता ।

न ये तनहाइयाँ[1] होतीं, न यही शामें ग़म,
तुम जो होते, तो न ये हाल हमारा होता ।

लड़खड़ाती यूँ न कश्ती, मेरी मँझधारे में,
मेरी एक छाँव भी होती, ये किनारा होता ।

मुड़ के देखा था, कई बार तुझे जाते हुए,
सुन ही लेता, जो तूने पुकारा होता ।

सुबह भरता, तेरे लहराते हुए आँचल में,
चाँदनी ले के तुझे, मैंने सँवारा होता ।

कोई चुपके से कहे, आ के मेरे कानों में,
कैसे जीते जो न, यादों का सहारा होता ।

1. अकेलापन ।

सितम्बर 2004
सिडनी

47. जब अंधेरे हों, नहीं.....

जब अंधेरे हों, नहीं साथ भी देता साया,
हमने इस दिल को, यही कहते हुए समझाया ।

ज़िन्दगी ख़ुद ही बनाए, ख़ुद ही तोड़े है भरम,
कौन ऐसा है कहे, मैंने इसे भरमाया ।

रूठ के बैठी ख़ुशी, ग़म के बियाबानों[1] में,
मान ही जाएगी, मैं जब भी कभी मिल पाया ।

वक़्त बदलेगा ज़रा, इन्तज़ार और अभी,
रात कहती है यही, दिन ने यही कहलाया ।

घटा पूरब से उठे, या कि उठे पच्छिम से,
मुख़्तसर[2] ये है कि, पैग़ामें[3] बहारें आया ।

कुछ नये फूल खिला, और चटखती[4] कलियाँ,
फिर नये ख़्वाब सजा, आँखों को क्यों भर लाया ।।

1. जंगलों ; 2. थोड़ा, संक्षिप्त ; 3. समाचार, संदेश ; 4. खिलना ।

अक्टूबर 2004
सिडनी

48. हमने माना हम ही नहीं.....

हमने माना हम ही नहीं बस, तेरे दीवानें और भी हैं,
एक जगह बस ये ही नहीं है, तेरे ठिकाने और भी हैं ।

ऐसी भी क्या इतनी जल्दी, पल दो पल तो बैठ ज़रा,
देख शमा अब भी है रौशन, बाकी तराने[1] और भी हैं ।

नाज़-ओ-अदा[2] से क्या इतराएँ, दिल को पकड़ कर बैठे हैं,
जब से सुना है हम ही नहीं बस, तेरे निशाने और भी हैं ।

जब भी तुमने ली है रुख़्सत[3], ये ही कहा है जल्दी है,
महफ़िल से उठने के इससे, अच्छे बहाने और भी हैं ।

अपना किस्सा क्या छेड़ें हम, जिसमें ग़म और आँसू हैं,
तेरे दिल को जो भा जाएं, ऐसे फ़साने[4] और भी हैं ।

चाहत लेती है अँगड़ाई, तेरी नज़दीकी भी है,
गीत, मुहब्बत और वफ़ा[5] के, तुमको सुनाने और भी हैं।

1. अच्छे ढंग से गाया जाने वाला सुन्दर गीत ; 2. अभिमान और नख़रा ; 3. विदा होने का भाव ; 4. कहानी, कथा ; 5. वचन पालन, निष्ठा ।

नवम्बर 2004
सिडनी

49. यूँ ही इन आँखों को.....

थक गए पाँव तो, राहों ने सहारा न दिया,
भरी दोपहर में ही, सायों ने किनारा है किया ।

मैंने उसे आँचल सा, छाते हुए देखा है,
यूँ ही इन आँखों को, भर आते हुए देखा है ।

तौर बदले, नये दस्तूर[1], ज़माना बदला,
साज़[2] बदले, नये गीतों ने, तराना[3] बदला ।

मैंने उसे गीत वही, गाते हुए देखा है,
यूँ ही इन आँखों को, भर आते हुए देखा है ।

झूमते पेड़ के पत्तों ने, बहारों ने कहा,
झुक के आती हुई बदली ने, इशारों में कहा ।

हमने उसे तेरी तरफ, आते हुए देखा है,
यूँ ही इन आँखों को, भर आते हुए देखा है ।

बहती गंगा का किनारा, जा शिवाले[4] से मिले,
छिप के जाती हुई राधा, अपने ग्वाले[5] से मिले ।

मैंने भी ऐसा ही कुछ, पाते हुए देखा है,
यूँ ही इन आँखों को, भर आते हुए देखा है ।

1. प्रथा, रीति ; 2. वाद्य, बाजा ; 3. अच्छे ढंग में गाया जाने वाला सुन्दर गीत ;
4. भगवान शिव का मन्दिर ; 5. गोपालक (भगवान कृष्ण)।

दिसम्बर 2004
सिडनी

50. गुनगुनाता एक भँवरा.....

गुनगुनाता एक भँवरा, आँखों में भर लो सवेरा,
गीत गाता एक भँवरा, आँखों में भर लो सवेरा ।

शबनमी[1] बूँदों ने मिलकर, घास पर बिस्तर लगाया,
चन्द्रमा की ज्योत्सना[2] ने, लोरियाँ गा कर सुलाया ।

सूर्य ने सोना बिखेरा, आँखों में भर लो सवेरा,
गुनगुनाता एक भँवरा, आँखों में भर लो सवेरा ।

लालिमा[3] फैली क्षितिज[4] पर, झूमती चलती हवाएँ,
पंख पंछी फड़फड़ाते, महकती सारी दिशाएँ ।

कलियों ने आँचल उघेरा[5], आँखों में भर लो सवेरा,
गुनगुनाता एक भँवरा, आँखों में भर लो सवेरा ।

मन खिलाये पुष्प जैसा, ज्ञान का दीपक जलाए,
हौसला साँसों में भर के, राह पर जब पग बढ़ाए ।

देखे मंज़िल राह तेरा, आँखों में भर लो सवेरा,
गुनगुनाता एक भँवरा, आँखों में भर लो सवेरा ।

नदिया बहती जाती कल-कल, युग निकलते करके पल-पल,
कल के देखे हमने सपने, पूरे करने आज वह सब ।

तोड़ दो तंद्रा[6] का घेरा, आँखों में भर लो सवेरा,
गुनगुनाता एक भँवरा, आँखों में भर लो सवेरा ।

1. ओस ; 2. चन्द्रमा का प्रकाश ; 3. लाली ; 4. जहाँ पर पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं ; 5. खोलना ; 6. हल्की नींद, उँघाई ।

भांजी 'अनुष्का' को सस्नेह समर्पित

जनवरी 2005

सिडनी

51. न ही शान-ओ, न ही शौकत.....

न ही शान-ओ, न-ही-शौकत[1], न ही दौलत[2] माँगी,
तुझसे जब माँगा कभी, तेरी ही चाहत माँगी ।

हर क़दम पर यहाँ मिलता है, नया एक सवाल,
कितना भी चाहो उलझते हैं, रह-रह के ख़याल ।

उलझे-उलझे से ख़यालातों से, रुख़सत[3] माँगी,
तुझसे जब माँगा कभी, तेरी ही चाहत माँगी ।

जब घटा छाये घिरे, मेरे भी आँगन में फुहार[4],
चले पुरवाई, मेरे घर में भी आ जाये बहार ।

देने वाले से यही, देने को क़िस्मत माँगी,
तुझसे जब माँगा कभी, तेरी ही चाहत माँगी ।

भरी दोपहर में और, रात की ख़ामोशी में,
जागती सुबह में भी, शाम की मदहोशी[5] में ।

मिट सकें सारे भरम, एक हक़ीक़त[6] माँगी,
तुझसे जब माँगा कभी, तेरी ही चाहत माँगी ।

बदला करती है हर एक चीज़, बदलता है जहां[7],
आज हैं तेरी ज़मीं पर, कल भला होंगे कहाँ ।

वक़्त बदले न ये उल्फ़त[8], यही हसरत[9] माँगी,
तुझसे जब माँगा कभी, तेरी ही चाहत माँगी ।

1. वैभव और ऐश्वर्य ; 2. धन, संपत्ति, सत्ता ; 3. विदा होने का भाव ; 4. नन्हीं बूंदों की झड़ी ; 5. बेसुध, नशे में चूर ; 6. सच्चाई, सच ; 7. संसार, दुनियाँ ; 8. प्रेम, स्नेह ; 9. अभिलाषा, इच्छा ।

फरवरी 2005
सिडनी

52. बिना तेरे दिन ये रातें.....

बिना तेरे दिन ये रातें, भी बरस[1] होने लगे,
याद तेरी जब भी आई, हम तो चुप रोने लगे ।

नाज़[2] था हमको ये आँखें, न रुलाएंगी कभी,
ग़म की काली ये घटाएँ, अब न छाएंगी कभी ।

घिर के आते घने बादल, अश्क[3] फिर ढोने लगे,
याद तेरी जब भी आई, हम तो चुप रोने लगे ।

सिर्फ तनहाई[4] ने जाना, इस उदासी का सबब[5],
मेरी वीरान[6] ये रातें, जगा करतीं अब ।

सब्र होता था हमारा, वह भी अब खोने लगे,
याद तेरी जब भी आई, हम तो चुप रोने लगे ।

1. वर्ष, साल ; 2. अभिमान, गर्व ; 3. आँसू ; 4. अकेलापन ; 5. कारण, हेतु ; 6. उजड़ा हुआ, बर्बाद ।

मार्च 2005
सिडनी

53. मिलना बिछुड़ना नसीबा है अपना.....

मिलना बिछुड़ना, नसीबा[1] है अपना,
कल था जो सच, आज बीता सा सपना ।

तुम्हें भी ख़बर है, हमें भी पता है,
विदाई की वेला[2], विरह[3] की व्यथा[4] है ।

तेरे साथ कुछ गीत, गाये थे हमने,
ख़ुशियों के कुछ पल, बिताये थे हमने ।

महकी उन्हीं से, अभी तक फ़िज़ा है,
तुम्हें भी ख़बर है, हमें भी पता है ।

ये जीवन है कैसा, तुम्हीं ने बताया,
ख़ुशबू हँसी में, ममता में छाया ।

सफ़र हो भी कैसा, उसी में मज़ा है,
तुम्हें भी ख़बर है, हमें भी पता है ।

पता था हमें वक़्त, आयेगा एक दिन,
तेरा साथ भी छूट, जायेगा एक दिन ।

हम हैं वहीं, तुमने बदला पता[5] है,
तुम्हें भी ख़बर है, हमें भी पता है ।

जाते हो जाओ, सदा याद रखना,
दिल में हमेशा, हमें पास रखना ।

जहाँ जिसको छोड़ा, वहीं वो खड़ा है,
तुम्हें भी ख़बर है, हमें भी पता है ।

1. भाग्य ; 2. समय ; 3. वियोग, अभाव ; 4. दुःख, पीड़ा ; 5. किसी जगह आदि का परिचायक ।

अप्रैल 2005
सिडनी

54. दीप छोटा सही.....

दीप छोटा सही उजाला है ,
रास्ता ख़ुद दिखाई देता है ।

आईना दिल है देख लो सीरत[1],
साफ़ सब कुछ दिखाई देता है ।

प्यार गर बुतों[2] पर आ जाए,
उनमें भी रब[3] दिखाई देता है ।

भक्ति का सुर हो या अज़ानों[4] का,
असर अपना दिखा ही देता है ।

ज़बां कुछ भी हो इबादत[5] की,
उसको सब सुनाई देता है ।

जहां[6] का दर्द लिये साथ फिरें,
पता उसका दिखाई देता है ।

1. स्वभाव ; 2. मूर्तियाँ ; 3. ईश्वर ; 4. नमाज़ के पूर्व बुलाना ; 5. प्रार्थना ; 6. संसार ।

अप्रैल 2005
सिडनी

55. कभी तो हद से.....

कभी तो हद से मुहब्बत, कभी ख़याल[1] नहीं,
मेरे महबूब के, अन्दाज़[2] का जवाब नहीं ।

सभी कहें हैं मुझे, दिल है मेरा दीवाना,
वही कहे है कि, हालत मेरी ख़राब नहीं ।

जब कभी मैंने किया, हाल-ए-दिल उनसे बयां[3],
हँस के बोले यही क़िस्सा, सुना ज़नाब कहीं ।

निगाह कहती है, दिल के वरक़[4] जरा तो पलट,
लफ़्ज[5] में उलझा है, मज़मून[6] का ख़याल नहीं ।

वफ़ा का ज़िक्र करे, इस तरह से महफ़िल में,
बदलती दुनियाँ है, रिश्तों का एतबार[7] नहीं ।

जब कभी पूछा हुईं, सुर्ख़[8] क्यों तेरी आँखें,
निगाहें नाज़[9] से मेरी, चढ़ी शराब नहीं ।

1. ध्यान, सोच विचार ; 2. अदा, ढंग ; 3. वृतांत, चर्चा, जिक्र ; 4. पेज पत्र ;
5. शब्द, वचन, बात ; 6. विषय ; 7. विश्वास ; 8. लाल ; 9. गर्व, अभिमान।

मई 2005
सिडनी

56. दिल अगर तेरा हो.....

दिल अगर तेरा हो, हो उसकी ज़बां[1] क्या कहिए,
बात होती हो जहाँ, ख़ुद ही वहाँ क्या कहिए ।

दिल अगर जोश में हो, मन में उठती हो तरंग,
न सुने और कोई, ख़ुद को सुनाकर कहिए ।

कभी बहार सा खिलता, झूम-झूम जाता हो मन,
जो भी आता है लबों[2] पर, गुनगुना कर कहिए ।

दिल में तूफ़ान उठा हो, और भिंचे जाते लब,
बात कैसी भी हो, थोड़ा सा दबा कर कहिए ।

दिल उदासी से भरे हों, अश्रु[3] भरते हों नयन,
कौन खोलेगा ज़बां ? कौन कहे ? क्या कहिए ?

देख मौसम का मिज़ाज़, महफ़िल-ए-दस्तूर[4] समझ,
बात सीधी ही सही, फिर भी घुमाकर कहिए ।

1. बोली, वचन ; 2. अधर, होंठ ; 3. आँसू ; 4. सभा के नियम या परम्पराएँ।

मई 2005
सिडनी

57. कौन जाने मेरी चाहत में.....

कौन जाने मेरी चाहत में, असर है कि नहीं,
उनकी महकी हुई जुल्फ़ों में, बसर है कि नहीं ।

रात दिन जिनके तसव्वुर[1] में, रहा करते हम,
क्या पता उनको, इसकी भी ख़बर है कि नहीं ।

मेरी हर राह, उसी घर से ही होकर गुज़री,
कभी घर से भी मेरे, उनकी गुज़र है कि नहीं ।

जब भी देखा कभी उनको, फिर उधर ही देखा,
वो नज़र उनकी न जाने, भी इधर है कि नहीं ।

या कि हो पूरी कहानी, ये बयां उल्फ़त[2] की,
प्यार उनसे है बस इतना, मुख़्तसर[3] है कि नहीं ।

राह देखेगें उनकी, बस हम क़यामत[4] तक,
जब कभी पूछा किसी ने, कि सबर है कि नहीं ।

ज़िन्दगी माना कि हमने, एक लम्बी डगर,
साथ कटता हो जो उनके, वो सफ़र है कि नहीं ।

1. ध्यान, विचार ; 2. प्रेम, स्नेह, मुहब्बत ; 3. संक्षिप्त, सार ; 4. महाप्रलय ।

जून 2005
सिडनी

58. दिल दे रहा है सदा.....

दिल दे रहा है, सदा[1],
रुक जा, ठहर जा ज़रा ।

तुझसे मेरे ख़्वाब, सजने लगे हैं,
आशा भरे दीप, जलने लगे हैं ।
लगने लगे हैं, हसीं चाँद तारे,
मन में नये रंग, भरने लगे हैं ।

महकी हुयी है, फ़िज़ा[2],
रुक जा, ठहर जा ज़रा ।

बजने लगी है, संगीत सरगम,
मिलने लगा है, तुमसे तरन्नुम[3]।
जीवन की लय पर, नया राग छेडें,
मिलकर रचें, प्यार की एक नयी धुन ।

आ मेरे संग, गीत गा,
रुक जा, ठहर जा ज़रा ।

दिल में उमंगें, धड़कन जवां है,
कहानी अधूरी, बची दास्तां है ।
हमने सुना है, सबसे सदा[4] ही ,
जा के गया वक़्त, लौटा कहाँ हैं ।

आ मेरे संग, बैठ जा,
रुक जा, ठहर जा ज़रा ।

रुक जा कि मैंने, आवाज़ दी है ,
पुकारा है मैंने, फ़रियाद[5] की है ।
देखा करें ये, निगाहें तुम्हें ही,
दिल में लगी, ऐसी दीवानगी[6] है ।

दिल की लगी, दिल लगा,
रुक जा, ठहर जा ज़रा।

1. आवाज़, पुकार ; 2. वातावरण ; 3. स्वर माधुर्य ; 4. हमेशा ; 5. दुःख से बचाए जाने के लिए पुकार ; 6. पागलपन ।

अगस्त 2005
सिडनी

59. न ही शिकवा.....

न ही शिकवा[1] न शिकायत, ये गिला[2] ये भी नहीं,
जब नहीं संग मेरे तू, सिलसिला[3] ये भी नहीं ।

न ही चाहत न ही उल्फ़त[4], ये वफ़ा[5] ये भी नहीं,
जब नहीं संग मेरे तू, सिलसिला ये भी नहीं ।

न ही शोख़ी[6] न शरारत, ये अदा[7] ये भी नहीं,
जब नहीं संग मेरे तू, सिलसिला ये भी नहीं ।

न ही ग़ुस्सा न अदावत[8], ये ख़ता[9] ये भी नहीं,
जब नहीं संग मेरे तू, सिलसिला ये भी नहीं ।

न ही गरमी न ही ठंडक, ये ख़िज़ां[10] ये भी नहीं,
जब नहीं संग मेरे तू, सिलसिला ये भी नहीं ।

न ही सावन न ही बारिश, ये घटा ये भी नहीं,
जब नहीं संग मेरे तू, सिलसिला ये भी नहीं ।

न बहारें, न ही ख़ुशबू, ये फ़िज़ा[11] ये भी नहीं,
जब नहीं संग मेरे तू, सिलसिला ये भी नहीं ।

न ही आहट न ही दस्तक, ये सदा[12] ये भी नहीं,
जब नहीं संग मेरे तू, सिलसिला ये भी नहीं ।

1. उलाहना, शिकायत ; 2. उलाहना, उपालंभ ; 3. कड़ी, क्रम, श्रृंखला ; 4. प्रेम, स्नेह ; 5. भक्ति, वफ़ादारी ; 6. चुलबुला, चंचल ; 7. हाव-भाव, नख़रा ; 8. शत्रुता ; 9. भूल, अपराध ; 10. पतझड़ ; 11. वातावरण ; 12. आवाज़, पुकार ।

सितम्बर 2005
सिडनी

60. इस तेरी दुनियाँ में.....

इस तेरी दुनियाँ में या'रब[1], तंग दिल के दायरे,
दायरे जब बढ़ चले, सबने दीवाना कहा ।
इंसान और इंसानियत की, बात जब भी की शुरू,
दीन[2] और ईमान[3] से, मुझको बेगाना कहा ।

लौ लगाए फिर रहा, मैं तेरी संसार में,
देखता तुझको सदा, प्रेम और विश्वास में ।
मेरे अपनों ने किया, जब कभी मेरा बयां,
उसने काफ़िर कह दिया, इसने बेगाना कहा ।
इंसान और इंसानियत.....

हर गली हर मोड़ पर, तेरे पैरोकार[4] हैं,
सिर्फ तेरे नामों पर, लड़ने को तैयार हैं ।
घेर कुछ दीवारें बैठे, घेर कुछ बैठे बुतां[5],
उसने कहा सजदा[6] करो, इसने झुक जाना कहा ।
इंसान और इंसानियत.....

पूर्व-पश्चिम मुँह किए, माँगते तुझसे दुआ,
पीठ से पीठें मिलाईं, दिल न यह मिलने दिया ।
घंटे घन-घन घनघनाते, रात दिन देते अज़ान,
मोक्ष[7] की बातें कहीं, जन्नत[8] का अफ़साना[9] कहा ।
इंसान और इंसानियत.....

1. हे ईश्वर ; 2. धर्म, मज़हब, पंथ ; 3. धर्म विश्वास ; 4. पैरवी (अनुकरण) करने वाले ; 5. मूर्ति ; 6. ज़मीन पर माथा टेककर ईश्वर की प्रार्थना करना ; 7. मुक्ति ; 8. स्वर्ग ; 9. कहानी ।

अक्टूबर 2005
सिडनी

61. जो चढ़े न उतरे.....

जो चढ़े न उतरे फिर कभी, एक ऐसी मस्ती ख़ुमार[1] दे,
ला शराब दे, ला शराब दे, ला शराब दे, ला शराब दे ।

न ही मंज़िलों की है आरज़ू[2],
न ही हमसफ़र की है जुस्तजू[3] ।
मिलें, ढूँढ़े उनको मंज़िलें,
मेरी बेख़ुदी[4] को सँवार दे ।।

ला शराब दे, ला शराब दे.....

तेरी नेमतों[5] में कमी नहीं,
अपने जुनून[6] का मुझको डर।
न लगे इसे ये बुरी नज़र,
ज़रा इसका सदका[7] उतार दे ।।

ला शराब दे, ला शराब दे.....

थोड़ी सी दूरी है मगर,
हैं तो तेरे मैख़ाने[8] में ।
हमें बूँद-बूँद पिलाए क्यों,
जब दे रहा बेहिसाब दे ।।

ला शराब दे, ला शराब दे.....

हम भी तेरे दीवानों में,
दीवानगी पर हो करम[9] ।
फिर क्यों बढ़े ये बेकसी[10],
इस बेकसी को क़रार दे ।।

ला शराब दे, ला शराब दे.....

1. हल्का नशा ; 2. इच्छा, कामना ; 3. तलाश ; 4. बेख़बरी, अचैतन्य ; 5. ईश्वर की दी हुई वस्तु ; 6. सनक, पागलपन ; 7. निछावर ; 8. मदिरालय ; 9. कृपा ; 10. असहायावस्था, दीनता, विवशता ।

नवम्बर 2005
सिडनी

62. रंग नये रंग.....

रंग नये, रंग नये, रंग चुने हैं,
मैंने तेरे साथ, कई ख़्वाब बुने हैं ।

लहर लहर लहराती, साथ बही जाए,
मेरी हर कहानी, तेरे साथ कही जाए ।
दु:खों के अन्धेरे, या ख़ुशियों के मेले हों ,
छूटे न साथ कभी, ना हम अकेले हों ।

प्रेम-राग संग-संग, साथ बुने हैं,
मैंने तेरे साथ, कई ख़्वाब बुने हैं ।

सरर-सरर लहराएं आँचल हवाएँ,
क्या है मेरे मन में, कैसे हम बताएँ ।
धड़कन है दिल में जैसे, आँखों में ज्योती[1],
तेरा मेरा साथ जैसे, सीपी में मोती ।

आस, चाह, मन की तरंग चुने हैं,
मैंने तेरे साथ, कई ख़्वाब बुने हैं ।

किलकारी मारे घर में, लौट आये अपना बचपन,
हमने भी यही माँगा, भर जाये अपना दामन[2] ।
हाथों में हाथ पकड़े, एक दूजे को संभाले,
हँसते-हँसाते यूँ ही, ये ज़िन्दगी बिता लें ।

चाहत के अपनी, ये फूल खिलें हैं,
हमने साथ-साथ, कई ख़्वाब बुने हैं।

मालिक[3] से इल्तिजा[4] है, ना दिल का तार टूटे,
उससे यही दुआ है, ना मिल के प्यार रूँठे ।
हम यूँ ही नाचें गाएँ, ख़ुशियाँ यूँ ही मनाएँ,
ख़ुशियाँ भी आएँ इतनी, दामन में ना समाएँ ।

सुनता है वह सभी की, हम ये ही सुनें हैं,
हमने साथ-साथ, कई ख़्वाब बुने हैं ।

1. प्रकाश, रोशनी ; 2. आँचल, पल्ला ; 3. ईश्वर, भगवान ; 4. प्रार्थना ।

24.11.2005
सिडनी

63. पास रहते हैं.....

पास रहते हैं, मेरे ख़्वाब कई,
बीते लम्हों की हैं, सौग़ात[1] कई ।

इनको आने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

हम भी गिरते हैं, यहाँ सब की तरह,
जब उठे हम, तो यही हमने कहा ।

चोट खाने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

हमने हर जख़्म[2], यही कहते सिया,
जिसने जो कुछ भी किया, अच्छा किया ।

भूल जाने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

यहीं खोया है, यहीं पा लेंगे,
आँखें नम हैं, मल्हार[3] गा लेंगे ।

ऐसे गाने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

यहाँ हर एक ने, अपनी सी कही ,
मैं क्यों कहता, ये ग़लत और सही।

गुनगुनाने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

है जो मालिक[4], ये उसी का है करम[5],
वरना कैसे, यूँ मुस्कराते हम ।

ये जताने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

1. भेंट, उपहार, तोहफ़ा ; 2. घाव ; 3. वर्षा काल में गाया जाने वाला एक राग ;
4. भगवान, ईश्वर ; 5. कृपा ।

31.12.2005
सिडनी

64. पास रहते हैं.....

पास रहते हैं, मेरे ख़्वाब कई,
बीते लम्हों[1] की, यादगार कई।

इनको आने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

तुमको देखा, और तुमसे बात हुई,
कुछ तो होगा, जो मुलाक़ात हुई ।

यह जताने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

जब फ़लक[2] पर, कभी उतरा महताब[3],
सुर्ख़[4] डोरों में बँधा, दिल ये जन्नाब[5]।

दिल लुटाने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

उड़ के आँचल से, कभी आई बयार,
रंग पर आए, चढ़ी जैसे शराब ।

लड़खड़ाने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

तिरछी नज़रों ने किया, जब भी सवाल,
रंज[6] में उसने किया, जब भी मलाल[7]।

मान जाने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

नाज़[8]–नख़रे, यह क़यामत वल्लाह[9],
देखता हूँ, मैं बुतों[10] में अल्लाह ।

सिर झुकाने की, आदत सी है,
मुस्कराने की, आदत सी है ।

1. पल, क्षण ; 2. आकाश ; 3. चंद्रमा ; 4. लाल ; 5. महोदय, श्रीमान ; 6. नाराज़गी ; 7. दु:ख ; 8. ठसक, अभिमान ; 9. ईश्वर की शपथ लेते हुए, सचमुच ; 10. मूर्ति ।

31.12.2005
सिडनी

65. देखूँ में जिधर भी.....

देखूँ मैं जिधर भी, मुझे दिखते हैं उजाले,
कुछ दीप मेरे साथ, जलाए हैं किसी ने ।

खिलता हर एक रोज़, तमन्नाओं[1] का चमन[2],
महकेगी ये फ़िज़ा[3] भी, महका करेंगे हम।

कुछ फूल मेरे साथ, चुराए हैं किसी ने,
कुछ दीप मेरे साथ, जलाए हैं किसी ने ।

ऐसा भी हुआ है, कि कभी मैं ही न सोया,
ऐ मेरे दिल-ए-नादां[4], एक मैं ही न रोया ।

कुछ अश्क[5] मेरे साथ, बहाए हैं किसी ने,
कुछ दीप मेरे साथ, जलाए हैं किसी ने ।

आँखों में उतर आए, कभी दिल के संदेसे,
हौले से क़रीब आ के, चुपचाप वो देखे ।

कुछ राज़[6] मेरे साथ, छिपाए हैं किसी ने,
कुछ दीप मेरे साथ, जलाए हैं किसी ने ।

अनुराग[7] की वीणा पे बँधा, प्रेम का हर तार,
जीवन की हर-एक लय को मिला, गीतों का उपहार[8] ।

कुछ गीत मेरे साथ, सजाए हैं किसी ने,
कुछ दीप मेरे साथ, जलाए हैं किसी ने ।

1. कामना, आकांक्षा ; 2. बग़ीचा ; 3. वातावरण ; 4. नासमझ, अनाड़ी ; 5. आँसू ; 6. रहस्य, भेद ; 7. प्रेम, भक्ति ; 8. भेंट, सौग़ात ।

जनवरी 2006
सिडनी

66. पर्ण पतझड़ पीत का सा.....

पर्ण[1] पतझड़[2] पीत[3] का सा,
लय[4] रहित[5] किसी गीत का सा,
बिलखती व्याकुल[6] विरहणी[7], केश[8] बिखराए ।
भर सरोवर[9] सदृश[10] नयना[11], नीर[12] भर लाए ।

ललित[13] लोहित[14] लालिमा[15] में,
नंदि[16] निरुपम[17] नीलिमा[18] में,
तरसता प्रिय के दरस[19] को, पीहु पीहु गाए ।
भर सरोवर सदृश नयना, नीर भर लाए ।

घनक-घनकत[20] घन[21] घनेरे[22],
धमक-धमकत[23] नाद[24] नेड़े[25],
यातनाएँ[26] दे रहे स्वर, मौन दहकाए[27] ।
भर सरोवर सदृश नयना, नीर भर लाए ।

धधक् धक् धक् धड़कता मन,
फिर से लौटा दो वही क्षण[28],
याचना करता क्यों प्रतिपल[29], हाथ फैलाए ।
भर सरोवर सदृश नयना, नीर भर लाए ।

1. पत्ता ; 2. शिशिर ऋतु जिसमें पेड़ की पत्तियां झड़ जाती हैं ; 3. पीला ; 4. गति, सामंजस्य ; 5. बिना ; 6. बेचैन, परेशान ; 7. प्रिय या पति से बिछड़ी हुई दु:खिनी नायिका ; 8. बाल ; 9. तालाब ; 10. समान, तरह ; 11. आँखें ; 12. पानी ; 13. मनोहर, सुन्दर, प्रिय ; 14. लाल ; 15. लाली ; 16. आनंद ; 17. अतुलनीय, बेजोड़ ; 18. नीलापन ; 19. देखना ; 20. जोर-जोर से बादलों का गरजना ; 21. बादल ; 22. घने ; 23. शोर, जोर का कंपन ; 24. नगाड़ा ; 25. पास में ; 26. कष्ट ; 27. तपना ; 28. समय की बहुत छोटी इकाई ; 29. हर एक पल ।

25.03.2006
सिडनी

67. सभी अपने हैं.....

सभी अपने हैं यहाँ, क्यों अकेले तुम हो,
झूमता गाता समां[1], ऐसे क्यों गुमसुम[2] हो।

ऐसे होने से, क्या होता है ?
ऐसे रोने से, क्या होता है ?

यूँ ही एक ज़ख़्म[3] कोई, फिर से सिसकता होगा,
नया तूफ़ान कोई, आ के गुज़रता होगा।

दिल डुबोने से, क्या होता है ?
ऐसे रोने से, क्या होता है ?

साथ तेरे भी कोई, अपना भी चलता होगा,
वो भी ठिठका है वहीं, तू जो ठिठकता होगा।

अश्क ढोने से, क्या होता है ?
ऐसे रोने से, क्या होता है ?

क्या पता आज के जैसे, फिर मिलें या न मिलें,
फूल ख़ुशियों भरे ऐसे, फिर खिलें या न खिलें ।

वक़्त खोने से, क्या होता है ?
ऐसे रोने से, क्या होता है ?

1. समय, मौसम ; 2. चुप ; 3. घाव ।

मई 2006
सिडनी

68. दस्तक देता दरवाज़ों पर.....

दस्तक[1] देता दरवाज़ों पर, अनजाना आकर कोई,
घिर जाते घनघोर[2] अंधेरे, सुधबुध जब खोता कोई ।
पल-पल बढ़ती आशंका[3] में, कब कैसे सो लेगा कौन,
मैं भी चुप हूँ तुम भी चुप हो, फिर बोलो बोलेगा कौन ।

युग बदले पीड़ित[4] मानवता, सिसकारी ले अब भी रोती,
अपने ही आँगन में अब तक, चेतनता मुँह ढाँके सोती ।
मनोहारी[5] मृदु[6] स्वर[7] लहरी[8] बन, इसके दृग[9] खोलेगा कौन,
मैं भी चुप हूँ तुम भी चुप हो, फिर बोलो बोलेगा कौन ।

भग्न[10] हृदय[11] जीवन्तता[12] पाकर, हर्षित[13] पुलकित[14] मुस्काएंगे,
विश्वास भरे बासन्तिक[15] द्रुम[16] से, पल्लव[17] पुष्पित[18] लहराएंगे ।
बेबस झरता हर एक आँसू, मोती सा तोलेगा कौन,
मैं भी चुप हूँ तुम भी चुप हो, फिर बोलो बोलेगा कौन ।

खुले क्षितिज[19] पर अंकित होनी, महासमर[20] की गौरवगाथा[21],
सागर की लहरों से होनी, अपने जीवन की परिभाषा ।
तिमिरिच्छादित[22] मेघों[23] में अब, वज्रदल[24] बन डोलेगा कौन,
मैं भी चुप हूँ तुम भी चुप हो, फिर बोलो बोलेगा कौन ।

1. खटखटाना ; 2. अत्यधिक घना ; 3. शक, भय ; 4. सताया गया ; 5. सुन्दर, मन हरने वाला ; 6. कोमल, मुलायम ; 7. आवाज़ ; 8. तरंग, लहर ; 9. आँख ; 10. निराश, टूटा हुआ ; 11. दिल ; 12. सप्राणता का भाव, तेजस्विता ; 13. प्रसन्नमय, खुश ; 14. रोमांचित ; 15. बसंत ऋतु ; 16. पेड़, वृक्ष ; 17. नया एवं कोमल पत्ता ; 18. फूलों से युक्त ; 19. वह स्थान जहाँ पर पृथ्वी व आकाश मिलते दिखाई देते हैं ; 20. महायुद्ध ; 21. सम्मान की कथा ; 22. अंधकार से छाया हुआ ; 23. बादलों ; 24. आकाश में बिजली का समूह ।

26.08.2006
सिडनी

69. तेरी मुस्करा.....

तेरी मुस्करा कर बंदगी[1],
नये ख़्वाब मेरे सजाएगी ।
तेरे हाल की तुझको ख़बर,
मुझे रातों नींद न आएगी ।

देखूँ कभी जब कहकशाँ[2],
देखूँ तुझे भी मैं वहाँ ।
सरे रूबरू[3] होगा आईना,
और अक्स[4] तेरा दिखाएगी ।

हर भीड़ और हर एक बसर[5],
हर मोड़ और हर एक डगर[6] ।
हर ओर मेरी यह नज़र,
अब ढूँढती तुझे पाएगी ।

न ही इस जहां[7] की कुछ ख़बर,
हूँगा अपने आपसे बेख़बर ।
कभी मुस्कराऊँगा बेवजह,
कभी बेवजह ही रुलाएगी ।

1. नमस्कार, अभिवादन ; 2. आकाशगंगा ; 3. सामने ; 4. तस्वीर, चित्र ; 5. बसावट, बस्ती ; 6. रास्ता ; 7. संसार, दुनियाँ ।

18.11.2006
सिडनी

70. हौले से हौले से.....

हौले से हौले से, मुस्करा दो ज़रा,
शाम ढलने लगी, जगमगा दो ज़रा ।

हर घड़ी देखता, मैं इसी आस से,
छू के गुज़रोगे तुम, तो कभी पास से ।

अरी ओ री किरन, आ खिला दो ज़रा,
हौले से हौले से, मुस्करा दो ज़रा ।

मैं पथिक[1] बन खड़ा, मैं निहारूँ तुम्हें,
मेरी मंज़िल कहाँ, मैं पुकारूँ तुम्हें ।

अरी ओ री दिशा, आ पता दो ज़रा,
हौले से हौले से, मुस्करा दो ज़रा ।

सूने-सूने से हैं, आज नयना मेरे,
मेरी आशा भरे, सारे सपने झरे ।

अरे ओ प्राण बन, आ जिला दो ज़रा,
हौले से हौले से, मुस्करा दो ज़रा ।

मेरा जीवन, अधूरा सा एक गीत है,
न ही सुर, है न लय, न ही संगीत है ।

ओ मधुर राग तुम, लय सजा दो ज़रा,
हौले से हौले से, मुस्करा दो ज़रा ।

1. राही, मुसाफ़िर ।

15.12.2006
सिडनी

71. दीप आस के जला.....

दीप आस के जला, गीत सजा प्यार के,
इस तरफ ही आ रहे, क़ाफ़िले[1] बहार के ।

मन अभी बुझा नहीं, अब भी चाह शेष है,
काफ़ी कुछ गुज़र गयी, थोड़ी रात शेष है।

बाक़ी यह बची हुई, काट लेंगे जाग के,
इस तरफ ही आ रहे, क़ाफ़िले बहार के ।

हाथ-हाथ को बढ़ा, हौसले बढ़ जाएंगे,
पग उठा के पग मिला, फ़ासले घट जाएंगे ।

हर दिशा यही कहे, हर डगर पुकार के,
इस तरफ ही आ रहे, क़ाफ़िले बहार के ।

चुप सी यह लगी है क्यों, मुस्करा के बोल दे,
आ किसी के दर्द को, आँसुओं से तोल दे ।

द्वार-द्वार पर सजा, फूल हरसिंगार के,
इस तरफ ही आ रहे, क़ाफ़िले बहार के ।

श्वेत[2] श्याम[3] स्वप्न[4] में, सप्त[5] रंग भर ज़रा,
हर्ष और उमंग से, सज सँवर[6] निखर[7] ज़रा ।

पल में बीत जाएंगे, दिन ये इन्तज़ार के,
इस तरफ ही आ रहे, क़ाफ़िले बहार के ।

1. पैदल यात्रियों के समूह ; 2. सफ़ेद ; 3. काला ; 4. सपना ; 5. सात ; 6. सँवरना, सज्जित होना ; 7. रूप आदि का खिलना ।

30.01.2007
सिडनी

72. उदास रात के घिरते.....

उदास रात के घिरते, इस अंधेरे में,
कोई चिराग़ जलाओ, तो कोई बात बने ।

कैसी तनहाई[1] का आलम[2], क्यों लगी ख़ामोशी,
फ़िज़ा[3] में रंग उड़ाओ, तो कोई बात बने ।

हर एक बहार में महके, हर एक ओर चमन,
ख़िज़ां[4] में फूल खिलाओ, तो कोई बात बने ।

घटे जरा सी तो दूरी, मिटे बेगानापन,
बढ़ो और हाथ बढ़ाओ, तो कोई बात बने ।

अधूरे ख़्वाबों की करनी, अभी तामीर[5] हमें,
कोई तज़्वीज[6] सुझाओ, तो कोई बात बने ।

अकेले सुर में ही गूँजे, क्यों यहाँ गीत कोई,
साथ आवाज़ मिलाओ, तो कोई बात बने ।

बड़े अदब[7] से कही, हर बनी[8] ज़माने ने,
बात कुछ ऐसी बनाओ, तो कोई बात बने ।

सदा रहें यूँ ही रोशन, चिराग़-ए-उम्मीदें,
चिराग़-ए-जश्न[9] सजाओ, तो कोई बात बने ।

1. अकेलापन ; 2. दशा ; 3. वातावरण ; 4. पतझड़ ; 5. निर्माण, रचना ; 6. योजना, विचार, राय ; 7. सम्मान ; 8. सफल होना ; 9. दीपावली ।

24.04.2007
सिडनी

73. किसी बहार में महकी.....

किसी बहार में महकी, मेरी तमन्ना का,
अधूरा ख़्वाब सजाओ, तो कोई बात बने ।

कभी चुपके से मेरे दिल, के आ के दरवाज़े,
मुझे पुकार लगाओ, तो कोई बात बने ।

अपने रूख़ से, ज़रा हया का ये,
पड़ा नक़ाब उठाओ, तो कोई बात बने ।

कोई उलझन है या है, कि कोई मजबूरी,
ज़रा सा खुल के बताओ, तो कोई बात बने ।

तरह-तरह की सुनाई, ज़माने भर की हमें,
कभी तो अपनी सुनाओ, तो कोई बात बने ।

झटक के देखा है, अपनों को दूर जाते हुए,
मेरे क़रीब में आओ, तो कोई बात बने ।

सुना अदाओं में तेरी, बला की जादूग़री,
मुझे मुझी से चुराओ, तो कोई बात बने ।

कहें जो दिल की कभी तो, कहें तो कैसे कहें,
तुम्हीं हमें ये बताओ, तो कोई बात बने ।

28.04.2007
सिडनी

74. हौले से आने.....

हौले[1] से आने की आहट[2],
मंद-मंद[3] आती प्रतिध्वनि[4] ।
तारों को झंकृत[5] कर जाती,
रच जाती नई स्वर-लय-धुन ।

शत्-शत्[6] दीप प्रज्वलित[7] होते,
आलोकित[8] सूना आँगन ।
हो वसन्त[9] ऋतु खिल जाते सब,
बाग़-बग़ीचे वन-उपवन[10] ।

गिरते उठते फिर गिरते दृग[11],
तिरछी सी होती चितवन[12] ।
अधरों[13] पर मुस्कानें सजतीं,
बढ़ जाते कुछ स्पदंन[14] ।

अनगिन[15] प्रश्न उभरने लगते,
दबते रहते अगले क्षण[16] ।
आहट फिर आगे बढ़ जाती,
छाया सा छू जाती मन ।

1. धीरे, मंद गति से ; 2. किसी के आने-जाने, हिलने-डुलने, बात करने से उत्पन्न मंद ध्वनि, पदचाप ; 3.धीमी-धीमी, कम ; 4. गूँज, प्रतिशब्द ; 5. झन-झन शब्द का पैदा होना ; 6. सैकड़ों, अनंत ; 7. चमकता हुआ, जलाया हुआ ; 8. रोशनी से भरा ; 9. एक वर्ष में 6 ऋतुओं में से एक ; 10. छोटा और बड़ा जंगल ; 11. आँख ; 12. प्रमपूर्वक देखने का ढंग, निगाह ; 13. ओंठ ; 14. कंपन, धड़कन (जैसे दिल की धड़कन) ; 15. जिसकी गिनती न की जा सके ; 16. पल (समय का बहुत छोटा भाग)।

16.07.2007
सिडनी

75. Slowly and softly comes.....

Slowly and softly comes the swaying sound of footsteps,
Generating gently charged, profound, rapturous resonance;
That jingles the silent stars and fills all the unhappy gaps
Contented conscience composes fresh melody with cadence.

Thrilling and throbbing sensation kindles myriads of lamps,
Enlightening the lonely lap, and gratifying the deep gloom;
Ah! festive spiring pervades pouring rich romance in the air,
The woods, the gardens, the grove-are adorned in full bloom.

Behold ! the blushful slanting eyes in romantic guise-
Feasting and fascinating the fleeting oblique glance;
Instanly starved lips gets satiated with serene smiles,
The heaving heart leaps up and delightful emotions dance.

Unfathomed and unanswered queries emerge in number,
Alas ! Single mighty moment suppresses all human endeavour.
Soon the last-lingering luminous look swiftly passes over,
The mournful memory of soul-loving glimpse haunts for ever.

76. मेरे अल्–बारी.....

मेरे अल्–बारी[1], मेरे अल्–क़ह्हार[2],
मेरे अल्–बारी, मेरे अल्–क़ह्हार ।

जो थे क़ाफ़िले, वो बिखर गए,
जो थे साथ जाने, किधर गए ।
अब दूर तक, अपना कोई,
आता नहीं, मुझको नज़र ।।

मेरे अल्–बारी, मेरे अल्–क़ह्हार,
मेरे अल्–बारी, मेरे अल्–क़ह्हार ।

मुझे एक तेरी, ही आरजू
मुझे एक तेरी, ही जुस्तजू ।
तू ही बता, तेरे सिवा,
जाऊँ तो जाऊँ, फिर किधर ।।

मेरे अल्–बारी, मेरे अल्–क़ह्हार,
मेरे अल्–बारी, मेरे अल्–क़ह्हार ।

तू बना दे, हर बिगड़ी हुई,
तू बसा दे, हर उजड़ी हुई ।
कर कुछ करम, मेरे ख़ुदा
बिगड़ी मेरी, जाए सँवर ।।

मेरे अल्–बारी, मेरे अल्–क़ह्हार,
मेरे अल्–बारी, मेरे अल्–क़ह्हार ।

मुसव्विर[3] भी तू है, मुईन[4] तू,
मुहैमिन[5] भी तू है, मतीन[6] तू ।
हर वक़्त तेरा, ही नाम लूँ,
तुझे याद करूँ, मैं हर पहर ।।

मेरे अल्–बारी, मेरे अल्–क़ह्हार,
मेरे अल्–बारी, मेरे अल्–क़ह्हार ।

1. सृष्टा, जान डालने वाला ; 2. सबको वश में करने वाला, सबको जीतने वाला ; 3. चित्रकार, आकार देने वाला ; 4. सहायक ; 5. संरक्षक, चौकसी करने वाला ; 6. एक ही शक्तिशाली ।

(उपरोक्त सभी अल्लाह के नाम हैं)

04.09.2007
सिडनी

77. एक यही इल्तिजा.....

एक यही इल्तिजा[1] करे कोई,
मेरे ग़म[2] की दवा करे कोई ।

मुझसे मत पूँछ कि कैसी गुज़री,
कैसे आख़िर बयां[3] करे कोई ।

ऐसे दौर-ए-जहां[4] से गुज़रे हम,
न ही गुज़रे ख़ुदा करे कोई ।

ग़मे हस्ती[5] पे भला किसकी चले,
जो न रोए तो क्या करे कोई ।

बात बन जाए मेरी बिगड़ी हुई,
यही माँगे दुआ करे कोई ।

मेरी आहों में असर है कि नहीं,
कौन जाने ? कहा करे कोई ।

कौन ऐसा जो सुनेगा मेरी,
इब्ने मरियम[6] हुआ करे कोई ।

ये करम[7] या यूँ ही ये मायूसी,
अब वही फ़ैसला करे कोई ।

1. निवेदन, प्रार्थना, मिन्नत ; 2. दुःख ; 3. वर्णन, कहना ; 4. संसार की व्यवस्था, दुर्भाग्य का चक्र ; 5. सामर्थ्य, शक्ति ; 6. मरियम का बेटा (प्रभु ईसा) ; 7. कृपा ।

18.09.2007
सिडनी

78. दिन हों या रातें काली.....

दिन हों या रातें काली, झूमेंगे गाएंगे,
दु:ख आएँ या कि दीवाली, मिलकर मनाएंगे ।
जीवन है ये तो यारों, ख़ुशियाँ हैं ग़म भी हैं,
चलता चल यूँ ही मितरा, साथी एक हम भी हैं ।।

चन्दा को नापा हमने, तारों को आँका हमने,
टूटे और दु:खते दिल में, रो-रो कर झाँका हमने ।
थोड़े से तुम दीवाने, थोड़े से हम भी हैं,
चलता चल यूँ ही मितरा, साथी एक हम भी हैं ।।

रोके से कब रुकते हैं, अपनी धुन के मतवाले,
आगे हों पर्वत[1] चाहे, बहते हों चढ़ते नाले ।
कड़के तो बिजली जैसे, रिमझिम सावन भी हैं,
चलता चल यूँ ही मितरा, साथी एक हम भी हैं ।।

खारों[2] और चट्टानों में, हम तो खिल जाने वाले,
विपदाएँ[3] कैसी भी हों, हम नहीं घबराने वाले ।
आँखें अपनी अंगारा, मीठी चितवन[4] भी हैं,
चलता चल यूँ ही मितरा, साथी एक हम भी हैं ।।

हमने जब अँगड़ाई ली, सागर[5] डर से थर्राया,
हम जब भी मुस्काए तो, कलियों को खिलता पाया ।
हम ही बन जाते शोले, हम ही शबनम[6] भी हैं,
चलता चल यूँ ही मितरा, साथी एक हम भी हैं ।।

चलते-चलते कभी माना, पैरों में पड़ते छाले,
कष्टों से क्या घबराना, तूफां के हम हैं पाले ।
राहें कैसी हों अपनी, आते गुलशन भी हैं,
चलता चल यूँ ही मितरा, साथी एक हम भी हैं ।।

उगता जब भोर यहाँ पर, भरता चेहरों में लाली,
बहती हवाएँ ऐसी, हर्षित[7] मन की हरियाली ।
आने और जाने कितने, मौसम ऐसे भी हैं,
चलता चल यूँ ही मितरा, साथी एक हम भी हैं ।।

टकराया हमसे कोई, पत्थर हम बन जाएंगे,
फैलाईं जब भी बाहें, सीसे-सा ढल जाएंगे ।
दिल में धड़कन हो जैसे, ऐसे हमदम भी हैं ,
चलता चल यूँ ही मितरा, साथी एक हम भी हैं ।।

फैलाए अम्बर[8] बाहें, धरती आँचल लहराए,
अपने जीवन का हर पल, गीतों में ढलता जाए ।
बस जाएँ हर एक लब[9] पर, ऐसी सरगम भी हैं ,
चलता चल यूँ ही मितरा, साथी एक हम भी हैं ।।

चलता चल अपनी धुन में, मंज़िल अपनी पाएंगे,
सारी दुनियाँ देखेगी, जग पर हम जब छाएंगे ।
फहराने हमको नभ में, अपने परचम[10] भी हैं,
चलता चल यूँ ही मितरा, साथी एक हम भी हैं ।।

1. पहाड़ ; 2. क्षार, एलकली (शोरा, नमक) ; 3. विपत्ति, आफ़त ; 4. निगाह, दृष्टि ; 5. समुद्र ; 6. ओस ; 7. ख़ुशी, प्रसन्नता ; 8. आकाश ; 9. होंठ ; 10. झंडा ।

25.09.2007
सिडनी

79. शंखनाद हो रहा, रात्रि कर रही.....

शंखनाद[1] हो रहा, रात्रि[2] कर रही प्रयाण[3],
हर दिशा में गूँजते, मंगलीय[4] मधुर[5] गान ।
स्वयं[6] प्रभा[7] समुज्ज्वला[8], आरती उतारती,
बढ़े चलो, बढ़े चलो, वसुन्धरा[9] पुकारती ।।

सृष्टि[10] का धरा[11] को एक, अतुल्यनीय[12] दान हो,
ममतामयी[13] ममत्व[14] की, विशिष्ट[15] पहचान हो ।
प्रकृति[16] अपार[17] संपदा[18], प्रफुल्ल[19] मन निसारती,
बढ़े चलो, बढ़े चलो, वसुन्धरा पुकारती ।।

उल्लास[20] और उमंग[21] का, अंतहीन[22] गीत हो,
आँधियों में जल रहे, प्रकाशवान दीप हो ।
तुम्हें प्रत्येक दृष्टि[23] देख, आस से निहारती[24],
बढ़े चलो, बढ़े चलो, वसुन्धरा पुकारती ।।

शीश गर्व[25] से तने, मुख[26] कान्तिमय[27] खिले हुए,
स्फूर्तिता[28] व आत्मबल[29], अंग-प्रत्यंग[30] भरे हुए ।
श्रम[31] सतत्[32] सजा रहा, स्वतंत्रता[33] सँवारती,
बढ़े चलो, बढ़े चलो, वसुन्धरा पुकारती ।।

बढ़ा हुआ हर एक पग[34], श्रेय[35] ओर अग्रसर[36],
सजग[37], सचेत[38], सावधान, हर घड़ी हर एक पहर[39]।
संतवाणी[40] अमृता[41], पथ[42] सदा पखारती[43]
बढ़े चलो, बढ़े चलो, वसुन्धरा पुकारती ।।

सत्य, प्रेम, न्याय को, श्वास-श्वास[44] में भरे,
शान्ति पूर्ण विश्व की, सदैव[45] कामना[46] करे ।
धैर्य[47], शौर्य-वीरता[48], नित[49] निरत[50] निखारती,
बढ़े चलो, बढ़े चलो, वसुन्धरा पुकारती ।।

एक ध्येय[51], एक लक्ष्य[52], एक साथ एक डगर[53],
अटल[54], अदम्य[55] साहसी, दृढ़[56] प्रतिज्ञ[57] और निडर[58] ।
मातृभूमि[59] वत्सला[60], प्यार से दुलारती,
बढ़े चलो, बढ़े चलो, वसुन्धरा पुकारती ।।

तुम प्रबुद्ध[61], तुम प्रगल्भ[62], तुम प्रणम्य[63], तुम प्रकृष्ट[64],
तुम नि:शंक[65], निष्प्रपंच[66], तुम निराल[67], तुम निभृत[68] ।
भविष्य[69] गुनगुना रहा, धन्य-धन्य भारती,
बढ़े चलो, बढ़े चलो, वसुन्धरा पुकारती ।।

1. शंख की आवाज़ ; 2. रात ; 3. प्रस्थान, कूच, विदा होना ; 4. कल्याणमय ; 5. मीठा, मिठास ; 6. खुद ; 7. किरण, प्रकाश ; 8. चमकता हुआ ; 9. पृथ्वी ; 10. जगत्, संसार, उत्पत्ति ; 11. पृथ्वी ; 12. जिसकी तुलना न हो सके ; 13. स्नेह, अपनेपन से भरा ; 14. ममता से भरा ; 15. ख़ास ; 16. वह मूल तत्व जिसका परिणाम जगत है ; 17. जिसका पार न हो, अत्यधिक ; 18. वैभव, धन-दौलत ; 19. खुश होना ; 20. खुशी, हर्ष ; 21. जोश, मौज ; 22. जिसकी समाप्ति न हो ; 23. नज़र ; 24. देखना ; 25. अभिमान ; 26. मुँह ; 27. चमक से भरे ; 28. फुरती, तेज़ी ; 29. आत्मा की ताकत ; 30. शरीर का प्रत्येक अवयव, अंग (हिस्सा) ; 31. मेहनत ; 32. लगातार ; 33. आज़ादी, स्वाधीनता ; 34. पैर ; 35. मंगलकारक, बेहतर ; 36. आगे बढ़ा हुआ ; 37. सतर्क ; 38. चेतन युक्त ; 39. तीन घंटे का समय, समय ; 40. संतों की कही हुई बातें ; 41. अमृत ; 42. रास्ता ; 43. धोकर साफ करना ; 44. साँस ;

45. हमेशा ; 46. इच्छा, चाहना ; 47. धीरज, मन की स्थिरता ; 48. बहादुर होने का भाव ; 49. नित्य, लगातार ; 50. काम में लगा हुआ, लीन ; 51. उद्देश्य, ध्यान का विषय ; 52. निशाना ; 53. रास्ता ; 54. स्थिर, पक्का ; 55. जो दबाया न जा सके, प्रबल ; 56. मज़बूत, पक्का ; 57. क़सम खाने वाला ; 58. बिना भय के ; 59. जन्मभूमि ; 60. बच्चों से प्रेम करने वाली ; 61. ज्ञानी, विद्वान् ; 62. चतुर, होशियार, हिम्मती ; 63. प्रणाम करने योग्य ; 64. उत्तम, श्रेष्ठ ; 65. निडर ; 66. छल-रहित, निष्कपट ; 67. निराले ; 68. धीर ; 69. आने वाला समय ।

19.05.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

80. THE CONCHSHELL BLOWS.....

The conchshell blows! the dawn smiles !
the gloomy night flies along all woes,
In rapture, delightful directions resound
the welcome song an' benedictory verses,
Radiant rays, in ecstatic praise, offer prayers,
and with grace the Earth overflows ;
Wake up ! advance ! miss not chance !
press on 'midst ordeal & sacrifices !

To Earth, Heaven presents His prime
priceless gift of cosmic creation,
Adorned with amazing identity
of mighty Mother's soul-loving affection;
Nature's mystic power showers
surpassing wealth, opulences an' gratification,
With tears of gratitude, the Earth hails :
Strive, my sons ! to achieve perfection.

From within emanates endless inspiring
songs replete with zeal and joy,
Exhorting to march on with blazing
lamps piercing worldy storms;
keenly looks the Earthly glance addressing
worthy sons, with heavenly aspirations;
An' entreats earnestly- dear souls !
go on an' grow glorifying cultural norms.

Let thy head be held high, and
glittering face blooming with graceful pride,
Physique and mind - all enthusiastic,
eager to express creative power of soul;
Human heart perceives - work and beauty,
love an' liberty are thy inborn attribute;
So, now delay not dear ! march on !
nor right nor left, but to the global goal.

Ensure, moving steps of yours are
leading, innovative and progressive,
An' from dawn to dusk you're
cautious, conscious, willing & vigilent.
The path of Patriots is ever wiped
an' washed with saints' spritiual discourses;
Come on, guys ! rise ! be worldly wise !
and fulfil thy existing commitment.

Devote gifted breaths of yours expounding
truth, love, mercy mingled justice,
An' endeavour to make this world
abode of peace, an' solace to human sigh;
Ever engaged in valour, compassion,
tolerance and sanctifying-practice;
Listen ! Lord - loved land of saints and seers
proclaims to aim high ! to soar high !

Enlightened with singleness of purpose,
proceed on to thy divine destination,
Blessed with indomitable courage,
my sons ! 'gainst FEAR fight and fire !
Feel ! thy Motherland has ever fondled you
with unreserved love and affection;
O'Mother's saviours ! look sharp ! feel on fire !
rise in Human eyes higher and higher.

Wise, venerable as you're, form thy Future
'the fruit of today's fertile action',
Through service and sacrifice, preach posterity,
my sons ! honour thy mother's word !
Fervent future offers blissful blessings
'Bravo, welldone ! Victory is won !
So, act on ! gallant, daring, resolute,
upright men ! hold on ! and move forward !

81. छेड़ जाता.....

छेड़ जाता है, दिल का तार कोई ।
गीत गाता है, मेरा प्यार कोई ।।

झर-झर झरते हुए झरनों में,
गुन-गुन गाते हुए भँवरों में ।
कल-कल करती हुई नदियों में,
चहचहाती फुदकती चिड़ियों में ।
लय सजाता है, लगातार कोई,
गीत गाता है, मेरा प्यार कोई ।

दिन भरे स्वर्ण के उजालों से,
रात्रि को जगमगाते तारों से ।
चाँद-सूरज सजाए थाली से,
पुष्पों से वृक्षों की हरियाली से ।
नित मनाता, यहाँ त्यौहार कोई,
गीता गाता है, मेरा प्यार कोई ।

सृष्टि की अन्तहीन गाथा में,
भक्ति और आस्था की भाषा में।
खिलते जीवन की इस रवानी में,
सुख भरे अन्त की कहानी में ।
झिलमिलाता, नया एतबार कोई,
गीत गाता है, मेरा प्यार कोई ।

मौन कभी खेलता तरंगों से,
इन्द्रधनुषीय सप्तरंगों से ।
कोई आता है कभी चुपके से,
मधु-मुस्कान भरे मृदु स्वर से ।
थपथपाता है, मन का द्वार कोई,
गीत गाता है, मेरा प्यार कोई ।

03.06.2008
बुलन्दशहर

82. जग रही थी जब किरन.....

जग रही थी जब किरन,
हँस रहा था जब चमन ।
फूल देखा खिलता हुआ ।।

मैंने पूछा प्यार से,
क्या हुआ ? क्या हुआ ?
किस खुशी में ऐसे खिल रहा ?

उसने कुछ कहा नहीं,
अता पता दिया नहीं ।
पास ही में भँवरा घूमता,
मुस्करा के फूल झूमता ।।

हाल थे जो बेक़रार के,
मिल गए, मिल गए ।
राज़ थे जो उसके प्यार के,
खुल गए, खुल गए ।।

देखती मेरी नज़र,
बार-बार उस तरफ ।
गुनगुनाता भँवरा दिख रहा ।।

मैंने पूछा प्यार से,
क्या हुआ ? क्या हुआ ?
क्यों तू ऐसे गुनगुना रहा ?

उसने कुछ कहा नहीं,
अता पता दिया नहीं ।
गुनगुनाता गूँजने लगा,
खिलता फूल चूमने लगा ।।

हाल थे जो बेक़रार के,
मिल गए, मिल गए ।
राज़ थे जो उसके प्यार के,
खुल गए, खुल गए ।।

सो रही थी जब किरन,
था उदास जब चमन ।
दीप देखा जलता हुआ ।।

मैने पूछा प्यार से,
क्या हुआ ? क्या हुआ ?
किसके वास्ते तू जल रहा ?

उसने कुछ कहा नहीं,
अता पता दिया नहीं ।
पास में पतंगा दिख पड़ा,
दीप तेज लौ से भर उठा ।।

हाल थे जो बेक़रार के,
मिल गए, मिल गए ।
राज़ थे जो उसके प्यार के,
खुल गए, खुल गए ।।

देखती मेरी नज़र,
बार-बार उस तरफ ।
दीप संग पतंगा दिख रहा ।।

मैनें पूछा प्यार से,
क्या हुआ ? क्या हुआ ?
बता ज़रा मन में तेरे क्या ?

उसने कुछ कहा नहीं,
अता पता दिया नहीं ।
उड़ते-उड़ते वह बावरा,
तेज दीप लौ में जल मरा ।।

हाल थे जो बेक़रार के,
मिल गए, मिल गए ।
राज़ थे जो उसके प्यार के,
खुल गए, खुल गए ।।

05.06.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

83. मेरे दिल.....

मेरे दिल, मेरे दिल, रोता क्यों है,
अश्क आँखो में भर, ढ़ोता क्यों है ।

ख़्वाब देखे कई, सारे टूट गये,
फूल थे जो खिले, सारे सूख गये ।

सूखे फूलों की माला, पिरोता क्यों है,
मेरे दिल, मेरे दिल, रोता क्यों हैं ।

साथ देते कभी, चाँद तारे सभी,
कोई सुन ही लेगा, तू पुकारे कभी ।

मैं अकेला हूँ मन में, सँजोता क्यों है,
मेरे दिल, मेरे दिल, रोता क्यों है ।

सच है यह दिन नहीं, रात काली तेरी,
पर यह जैसी भी है, है तो आशा भरी ।

फिर उजाले की आशा, खोता क्यों है,
मेरे दिल, मेरे दिल, रोता क्यों है ।

सुबह खिलने को हो, तो खुमारी लगे,
जब तू चलने को हो, राह भारी लगे ।

ऐसे ग़म के तले, सोता क्यों है,
मेरे दिल, मेरे दिल, रोता क्यो है ।

फिर से देखे तुझे, है निहारे कोई,
हौले-हौले से फिर, है पुकारे कोई ।

सूने भँवरों में खुद को, डुबोता क्यों है,
मेरे दिल, मेरे दिल, रोता क्यों है ।

05.06.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

84. है शर्मसार वफ़ा.....

है शर्मसार[1] वफ़ा, अब तो उनकी महफ़िल में,
स्याह[2] के रंग को, सतरंग[3] सजा कैसे कहें ।

हर तरफ गिरते हैं, हर शाख़[4] से सूखे पत्ते,
ऐसे गुलशन[5] में महकी है, फ़िज़ा[6] कैसे कहें ।

जब भी मिलते हैं, मिलते सदा बेगाने से,
उन तलक पहुँचेगी, अपनी भी सदा[7] कैसे कहें ।

न ही कश्ती ही है अपनी, न ही माँझी[8] अपना,
कोई देगा हमें, साहिल[9] का पता कैसे कहें ।

देख क्या रंग दिखाती है, सियासत[10] उनकी,
किस पे हो जाये करम[11], किसको सज़ा कैसे कहें ।

1. लज्जित ; 2. काला ; 3. सातरंग ; 4. डाली, शाखा ; 5. बग़ीचा ; 6. वातावरण ; 7. आवाज़, पुकार ; 8. नाव चलाने वाला ; 9. किनारा, तट ; 10. राजनीति ; 11. कृपा ।

14.06.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

85. गा मेरे मन गीत गा.....

अनवरत[1], अविकल[2], अनुपमित[3],
प्रमुद[4], पुलक[5], पुनीत[6] गा ।
गा मेरे मन गीत गा ।।

मेरे अन्तर[7] में निरन्तर[8],
घिर रहे घनघोर[9] घन[10] है।
छलकने को कब से आकुल[11],
आर्द्रता[12] भरते नयन[13] हैं ।।

शब्द भर उर[14] वेदना[15],
अनलस[16], अतुल[17], अनुभूति[18] गा ।
गा मेरे मन गीत गा ।।

इस घने नीरव[19] तिमिर[20] में,
दिग्भ्रमित[21] होकर खड़े हैं ।
द्वार हर संभावना[22] के,
प्रश्नों के पहरे पड़े हैं ।।

ज्योर्तिमय[23] जग[24], मन जगे,
सुन्दर, सुभग[25], सुगीत[26] गा ।
गा मेरे मन गीत गा ।।

ले के चल निस्सीमता[27] में,
चेतना[28] के बन्ध[29] खुलें ।
या कि ले चल उस क्षितिज[30],
सुख दुःख जहाँ जाकर मिलें ।।

मैं उड़ूँ नभ[31] में विहग[32] बन,
मृदु[33], मधुर[34], मनप्रीति[35] गा ।
गा मेरे मन गीत गा ।।

आरोह[36] और अवरोह[37] ले,
सुर-लय सजा हर श्वास में ।
कर प्रकम्पित[38] कण्ठ[39] स्वर[40],
बहे स्वर सुधा[41] आकाश[42] में ।।

हो तरंगित[43] प्राण[44] तन[45],
नूतन[46], निमद[47], निर्भीक[48] गा ।
गा मेरे मन गीत गा ।।

1. लगातार ; 2. पूरा का पूरा, जो बेचैन न हो ; 3. बेजोड़, जिसकी उपमा न दी गई हो ; 4. हर्षित, आनंदित ; 5. रोमांच ; 6. पवित्र, उत्तम ; 7. भीतर ; 8. लगातार ; 9. अत्यधिक, भीषण ; 10. बादल ; 11. बेचैन, उतावला ; 12. गीला होने की अवस्था ; 13. आँख ; 14. हृदय, छाती ; 15. कष्ट, व्यथा ; 16. आलस्य रहित ; 17. जिसकी तौल न हो सके ; 18. संवेदना, प्रत्यक्ष या अनुभूति ज्ञान ; 19.शब्द रहित ; 20. अन्धकार ; 21. दिशा भूला हुआ ; 22. मुमकिन ; 23. जगमगाता हुआ ; 24. संसार ; 25. भाग्यवान ; 26. सुन्दर गीत गाना ; 27. सीमा रहित ; 28. समझ, ज्ञानमूलक बुद्धि ; 29. बन्धन, असीम ; 30. वह स्थान जहां पृथ्वी आकाश मिलते दिखाई देते हैं ; 31. आकाश ; 32. पक्षी ; 33. कोमल, मुलायम ; 34. मीठा ; 35. मन को अच्छा लगने वाला ; 36. ऊँचे स्वर से उच्चारण ; 37. संगीत में स्वरों का ऊँचे से नीचे आने का क्रम ; 38. थरथराता हुआ ; 39. गला ; 40. आवाज़ ; 41. अमृत ; 42. आसमान ; 43. लहराता हुआ ; 44. साँस, जान ; 45. शरीर, बदन ; 46. नया ; 47. मंद एवं स्पष्ट उच्चारण ; 48. बिना डर के ।

30.07.2008
बुलन्दशहर

86. हाल अपना अज़ीब.....

हाल अपना अज़ीब[1] देखा है,
जब से उनको क़रीब देखा है ।

ग़म नहीं ये ख़ुशी के आँसू हैं,
इतना कोई अज़ीज़ देखा है ।

नूर[2] भर दे सभी नज़ारों में,
मैंने ऐसा हबीब[3] देखा है ।

मैंने चुपके से उनकी आँखों में,
अपना बनता नसीब[4] देखा है ।

दर्द भी वो वही दवा मेरी,
मेरे जैसा मरीज़ देखा है ।

मेरे दामन में फ़क़त[5] चाहत है,
मुझ सा कोई ग़रीब देखा है ।

1. प्रिय ; 2. प्रकाश, रोशनी ; 3. मित्र, प्रेमपात्र ; 4. भाग्य ; 5. केवल ।

15.08.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

87. इस दिल में बसीं यादें, यादों में.....

इस दिल में बसीं यादें, यादों में बसे ग़म हैं,
ना ज़िक्र करो इनका, ये हमको रुला देंगे ।

ये बीते हुए पल हैं, ये बात पुरानी है,
कैसी भी हो ये अब तो, बस एक कहानी है ।

कुछ सुनते-सुनाते यूँ, कुछ कहते-कहाते यूँ,
गुज़रे हुए किसी पल की, फिर याद दिला देंगे ।
ना ज़िक्र करो इनका, ये हमको रुला देंगे ।।

तूफ़ान सा गुज़रेगा, सैलाब[1] सा उमड़ेगा,
सीने में घुमड़ता हुआ, आँखों में आ उतरेगा ।

यूँ हँसते-हँसाते तक, यूँ खिलते-खिलाते तक,
सँभलोगे तुम ये तब तक, कुछ नीर[2] बहा देंगे ।
ना ज़िक्र करो इनका, ये हमको रुला देंगे ।।

सपनों ने ली अँगड़ाई, ख़ुशियों की बारात आई,
सूने मन के आँगन, बजने लगी शहनाई ।

कुछ दिखते-दिखाते से, कुछ छिपते-छिपाते से,
दर्द के नग़मों को, होठों पे सजा देंगे ।
ना ज़िक्र करो इनका, ये हमको रुला देंगे ।।

जब भी लोगे करवट, धीरे से देंगे दस्तक,
हम साथ तेरा देंगे, तनहाई में भी आकर ।

ये जाने या अनजाने, पहचाने ना पहचाने,
फूलों के से बिस्तर को, काँटों से सजा देंगे ।
ना ज़िक्र करो इनका, ये हमको रुला देंगे ।।

1. नदी की बाढ़ ; 2. पानी ।

05.09.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

88. मेरे साथिया मेरे सफ़र.....

मेरे साथिया, मेरे हमसफ़र,
मेरे पास आ, मुझे प्यार कर ।
ये जुनून-ए-इश्क़[1], जो आज है,
किसे क्या पता, कल हो न हो ।।

हम जिस चमन[2] से, गुज़र गए,
ये उदास फूल भी, खिल गए ।
हमें इस पे इतना, जो नाज़ है,
किसे क्या पता, कल हो न हो ।।

यूँ बोलते क्यों, दृग[3] तेरे,
यूँ काँपते क्यों, लब[4] तेरे ।
इनमें छिपाए, जो राज़ है,
किसे क्या पता, कल हो न हो ।।

ये गर्म साँसों के, सिलसिले[5],
ये दिल में उठते, वलवले[6] ।
इन धड़कनों का, जो साज़[7] है,
किसे क्या पता, कल हो न हो ।।

1. प्यार का पागलपन ; 2. बग़ीचा ; 3. आँख ; 4. होंठ ; 5. कड़ी, क्रम ; 6. आवेश, उमंग ; 7. गाने के साथ बजाये जाने वाला बाजा ।

28.09.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

89. जीआ कहे मत जा.....

अबकी बरस भी, आएगा सावन,
झूले पड़ेंगे, झूमेंगे तन-मन ।

फिर से बहेगी पुरवा,
जीआ[1] कहे मत जा ।

बरसेगा सावन, रिमझिम-रिमझिम,
हम ही होंगे, होंगे जो तुम बिन ।

आग लगेगी बरखा,
जीआ कहे मत जा ।

तेरे दरस को, तरसेंगी अखियाँ,
याद आएंगी तोरी, मीठी-मीठी बतियाँ।

बोलेगा मन पी आ,
जीआ कहे मत जा ।

बैरन[2] होंगी, अपनी ही अँखियाँ,
मुझको जगाएंगी, सारी-सारी रतियाँ।

रोएगा ये जीअरा,
जीआ कहे मत जा ।

जिस देसवा, तेरा पिया बसत है,
उस देसवा, तेरी सौत रहत है ।

ताना मारेंगी सखियाँ,
जीआ कहे मत जा ।

मैं कुछ का अब, कुछ कह जाऊँ,
कुछ ना सूझे, मैं कित जाऊँ ।

हाय करूँ मैं क्या ?
जीआ कहे मत जा ।

1. मन ; 2. महिला शत्रु ।

30.09.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

90. कभी किन्हीं अँखियों में.....

कभी किन्हीं अँखियों में, अँखियाँ न डालना,
चोट लगेगी दिल पर, दिल को सँभालना ।

यादों में आएंगे वो, सपनों में छाएंगे वो,
जब सारा जग सोएगा, तुमको जगवाएंगे वो ।

बन पाये तुमसे तब तक, तुम इसको टालना,
कभी किन्हीं अँखियों में, अँखियाँ न डालना ।

दिन में बेचैनी होगी, तारे गिन रात कटेगी,
करवट बदलोगे हरपल, हर आहट आँख खुलेगी।

हर दिन बीतेगा यूँ ही, ख़ुद को उबारना,
कभी किन्हीं अँखियों में, अँखियाँ न डालना ।

महफ़िल में होगे अकेले, तनहाई रास आएगी,
दु:खता मन तब भी होगा, हँसने की बात आएगी ।

मुश्किल में होगा ऐसे, हर पल निकालना,
कभी किन्हीं अँखियों में, अँखियाँ न डालना ।

अब कब फिर मिलना होगा, कब अपनी बात बनेगी,
बरसेंगे टप-टप आंसू, कब ये बरसात रूकेगी ।

ख़ुशियों के साथ पड़ेगा, ग़म को भी पालना,
कभी किन्हीं अँखियों में, अँखियाँ न डालना ।

01.10.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

91. झीना-झीना उनका आँचल.....

झीना-झीना[1] उनका आँचल, इस तरह लहरा गया,
देखते ही रह गए हम, एक नशा सा छा गया ।

थोड़ी सी दूरी थी लेकिन, फिर भी कितने पास थे,
बोलते से लग रहे थे, कहने को चुपचाप थे ।
एक हवा का झोंका आकर, ज़ुल्फ़ों को बिखरा गया,
देखते ही रह गए हम, एक नशा सा छा गया ।

बिखरी-बिखरी सी लटों को, उँगलियाँ सुलझा गईं,
उनका चेहरा जो छिपा था, उसको वो दिखला गईं ।
चाँद ओटक से निकल कर, चाँदनी बिखरा गया,
देखते ही रह गए हम, एक नशा सा छा गया ।

मुस्करा कर मुझको देखा, फिर ज़रा घबरा गए,
कनखियों से देखते फिर, सोच कुछ शरमा गए ।
उनका वो मासूम चेहरा, मेरे दिल पर छा गया,
देखते ही रह गए हम, एक नशा सा छा गया ।

क्या कहें और क्या करें अब, कुछ न आता था नज़र,
बहके-बहके हम खड़े थे, कुछ न थी अपनी ख़बर ।
किस अदा से कोई अपना, हाल-ए-दिल जतला गया,
देखते ही रह गए हम, एक नशा सा छा गया ।

1. बारीक, महीन

11.10.2008
बुलन्दशहर

92. प्यार हो जाएगा.....

प्यार हो जाएगा, दिल ये खो जाएगा,
जो हुआ ना अभी तक, वो हो जाएगा।
जब तलक ये नहीं है, मेरी जान-ए-जां,
यूँ ही मिलने-मिलाने, तो आया करो
बात हो कि न हो, मुस्कराया करो ।

ये तराने तेरे, ये फ़साने तेरे,
मुझसे मिलने के हैं, सब बहाने तेरे ।
हमको मालूम है, है ये झूँठा बयां,
बातें ऐसी न हमसे, बनाया करो ।
देखो ऐसे न हमको, सताया करो ।।

इस फ़लक पर सितारे हैं, यूँ तो बहुत,
चाँद जैसा कोई, हमने देखा नहीं ।
यूँ तो देखें हैं, हमने भी लाखों हसीं,
दूसरा कोई है, आप जैसा नहीं ।
ना लगे आपको ये, बुरी सी नज़र,
मुँह पे काजल का टीका, लगाया करो ।
बात हो कि न हो, मुस्कराया करो ।।

ये तराने तेरे, ये फ़साने तेरे,
मुझसे मिलने के हैं, सब बहाने तेरे ।
हमको मालूम है, है ये झूँठा बयां,
बातें ऐसी न हमसे, बनाया करो ।
देखो ऐसे न हमको, सताया करो।।

यूँ अकेले सफ़र भी, बुरा तो नहीं,
साथ हो आपका, फिर तो क्या बात है।
गीत गाएँ सदा, प्यार के साथ हम,
क्या हसीं दिन है ये, क्या हसीं रात है।
कुछ तो बोलो, कभी कुछ बताओ हमें,
बात यूँ ना, हवा में उड़ाया करो ।
बात हो कि न हो, मुस्कराया करो ।।

ये तराने तेरे, ये फ़साने तेरे,
मुझसे मिलने के हैं, सब बहाने तेरे ।
हमको मालूम है, है ये झूँठा बयां,
बातें ऐसी न हमसे, बनाया करो ।
देखो ऐसे न हमको, सताया करो ।।

18.10.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

93. उठ रहा हर ओर शोर.....

उठ रहा हर ओर शोर, लग रही हर ओर आग,
जाग जाग जाग जाग, जाग जाग जाग जाग ।

लूट-पाट मार-काट, रोज़ बढ़ते हादसे,
ऊँच-नीच भेद-भाव, दिल से दिल के फ़ासले।

सत्य भय से मौन है, असत्य भर रहा हुँकार,
जाग जाग जाग जाग, जाग जाग जाग जाग ।

अभावग्रस्त[1] ज़िन्दगी, चुभ रही कसक रही,
भूख और विषाद[2] से, पिस रही कुचल रही ।

रो रही सिसक-सिसक, कर रही आर्तनाद[3],
जाग जाग जाग जाग, जाग जाग जाग जाग ।

मज़हबों[4] के नाम पर, क्या-क्या काम हो रहे,
भाई-भाई लड़ रहे, क़त्ल-ए-आम[5] हो रहे ।

माँगें[6] सूनी[7] हो रहीं, लुट रहे सभी श्रंगार,
जाग जाग जाग जाग, जाग जाग जाग जाग ।

क्या हुआ है ? क्या घटा ? इसकी सब उन्हें ख़बर,
कौन कितना नींद में, कौन कितना बेख़बर ।

सरहदों[8] के पार से, फुँकारते विषैले नाग,
जाग जाग जाग जाग, जाग जाग जाग जाग ।

देख तेरे देश का, हाल कैसा हो गया,
क्षुद्र[9] स्वार्थ के समक्ष, राष्ट्र धर्म खो गया ।

क्षेत्र, जाति, पंथ में, बँट गया तेरा समाज,
जाग जाग जाग जाग, जाग जाग जाग जाग ।

सब हैं बदहवास से, हर कोई बेचैन है,
किसको ऐसे हाल में, सुन रहा भी कौन है ।

पुकारते-पुकारते, थक रही है अब पुकार,
जाग जाग जाग जाग, जाग जाग जाग जाग ।

1. कमी से भरी ; 2. दु:ख, अवसाद ; 3. दर्द भरी पुकार, गुहार ; 4. धर्मों ; 5. जन साधारण की हत्या ; 6,7. पति की मृत्यु हो जाना या विधवा हो जाना ; 8. सीमा, हद ; 9. छोटा, नीच ।

24.10.2008
बुलन्दशहर

94. हो न ओझल किसी भी पल.....

हो न ओझल, किसी भी पल के लिए,
यह दुआ, बार-बार करता हूँ ।

मैं तो बस, तुमसे प्यार करता हूँ,
मैं तो बस, तुमसे प्यार करता हूँ ।

बेक़रारी, क़रार बनती है,
यह ख़िज़ां भी, बहार बनती है ।
पास में मेरे, तुम जो होते हो,
हर घड़ी, क़ाइनात सजती है ।

मैं तो बस, इन्तज़ार करता हूँ,
मैं तो बस, तुमसे प्यार करता हूँ ।

आँखें हिरनी सी, सब ये कहते हैं,
बातें जादू सी, सब ये कहते हैं ।
जब भी हँसते हो, किसी महफ़िल में,
चूड़ी खनकी-सी, सब ये कहते हैं ।

मैं तो बस, एतबार करता हूँ,
मैं तो बस, तुमसे प्यार करता हूँ ।

भँवरे भी, तुमको गुनगुनाते हैं,
पंछी भी, तेरे गीत गाते हैं ।
जब भी तुम, जिस चमन से गुज़रे हो,
फूल भी झुक के, सिरे झुकाते हैं ।

मैं तो बस, आँखें चार करता हूँ,
मैं तो बस, तुमसे प्यार करता हूँ ।

25.10.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

95. कितनी रोशन हैं ये रातें.....

कितनी रोशन हैं ये रातें, ये सुबह कितनी हसीं,
ये शहर यूँ तो बड़ा है, ये पता ये तो नहीं ।

यहाँ देखे हैं जमीं पर, उतर आते बादल,
मैं भटकता हूँ, इन्हीं की ही, तमन्ना[1] लेकर ।

जो घटा भर के भिगो दे, ये घटा ये तो नहीं,
ये शहर यूँ तो बड़ा है, ये पता ये तो नहीं ।

रंग और रूप बदलते, सभी परछाईं में,
हर एक आवाज फ़ना[2] है, मेरी तनहाई[3] में ।

कोई अपनों सी सदा[4] दे, ये सदा ये तो नहीं,
ये शहर यूँ तो बड़ा है, ये पता ये तो नहीं ।

कभी ठिठकते हैं मेरे, कभी घिसटते क़दम,
सूनी-सूनी सी नज़र है, थका हारा सा है मन।

मेरे दिल को जो लुभा दे, ये अदा ये तो नहीं,
ये शहर यूँ तो बड़ा है, ये पता ये तो नहीं ।

सहमे-सहमे से हैं चुपचाप, मेरे शाम-ओ-सहर[5],
न ही शिकवा[6] का ही कोई, न ही आहों का असर ।

कोई उम्मीद जगा दे, ये फ़िज़ा[7] ये तो नहीं,
ये शहर यूँ तो बड़ा है, ये पता ये तो नहीं ।

1. कामना ; 2. लुप्त, नष्ट ; 3. अकेलापन ; 4. आवाज़ ; 5. शाम और सुबह ; 6. उलाहना, शिकायत ; 7. वातावरण ।

07.11.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

96. आ जा सुर में.....

आ जा सुर में सुर मिला ले, ये मेरा ही गीत है,
एक मन एक प्राण बन जा, तू मेरा मनमीत है ।

सुर में सुर मिल जाए इतना, सुर अकेला ना रहे,
मैं भी मेरा ना रहूँ, और तू भी तेरा ना रहे ।

धड़कनों के साथ सजता, राग का संगीत है,
एक मन एक प्राण बन जा, तू मेरा मनमीत है ।

नीले-नीले इस गगन में, पंख धर कर उड़ चलें,
चल कहीं पतझड़ में हम तुम, पुष्प बन कर खिल उठें।

जो है खोता वो ही पाता, ये सदा की रीति है,
एक मन एक प्राण बन जा, तू मेरा मनमीत है ।

सूने-सूने से पलों को, सुर सुरभि से भर ज़रा,
साथ अपने हर-एक मन को, छंद-लय-मय कर ज़रा।

नेह से ही नेह पलता, प्रीति से ही प्रीति है,
एक मन एक प्राण बन जा, तू मेरा मनमीत है ।

साथ मिलकर गाएँ ऐसे, सुर लहर लहरा उठे,
सप्त स्वर हर ओर गूँजे, हर दिशा भी गा उठे ।

प्रेम का पथ है अनोखा, हार में ही जीत है,
एक मन एक प्राण बन जा, तू मेरा मनमीत है।

21.11.2008
बुलन्दशहर

97. नीड़ फिर से.....

नीड़[1] फिर से लौटते, उड़ रहे विहग[2] अभी,
राह में भी हैं कई, चल रहे पथिक[3] अभी ।
घिर रही तिमिर[4] निशा[5], वायु[6] वेग[7] है प्रबल[8],
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।।

द्वार[9] पर खड़े-खड़े, बाट[10] जोहते नयन[11],
बढ़ रहा अजान[12] भय[13], काँप काँप जाता मन ।
अश्रुधार[14] बह चली, प्राण[15] हो रहे विकल[16],
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।।

किसी को तो अभी कई, प्रश्न[17] घेरते हुए,
किसी की चेतना में हैं, स्वप्न[18] तैरते हुए ।
कोई किसी की याद में, करवटें रहा बदल,
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।।

अभी तो श्वास तेज है, गर्म हैं अभी अधर[19],
प्रणय[20] की रात्रि[21] है अरे, समय ज़रा ठहर-ठहर।
अभी तो कोई मोम सा, ज़रा-ज़रा रहा पिघल,
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।।

अभी तो शेष हैं कई, अनकही कहानियाँ,
प्रेम और नेह की, कुछ अमिट निशानियाँ ।
अभी तो मन के तार पर, सप्त[22] स्वर रहा मचल,
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।।

आस, राग, रंग भर, बुझे-बुझे से सूने मन,
हर्ष[23] और उमंग भर, थके-थके से प्राण तन ।
जगमगा दे द्वार-द्वार, घर गली भुवन[24] सकल[25],
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।।

1. घोंसला ; 2. पक्षी ; 3. राही ; 4. अंधेरा ; 5. रात ; 6. हवा ; 7. चाल ; 8. बलवान, तेज ; 9. दरवाज़ा ; 10. इन्तज़ार ; 11. आँख ; 12. अनजाना ; 13. डर ; 14. आँसुओं की धारा ; 15. जान, साँस ; 16. बेचैन, परेशान ; 17. सवाल ; 18. सपना ; 19. होंठ ; 20. प्रेम ; 21. रात ; 22. सात ; 23. खुशी ; 24. संसार ; 25. समस्त, कुल, सारा ।

15.12.2008
बुलन्दशहर

98. अब भी नाराज़ है.....

अब भी नाराज़ है मुझसे, यह जताने के लिए,
फिर से आ जाना यूँ ही, रूठ के जाने के लिए ।

मुड़ के तो देखते, एक बार मुझे जाते हुए,
या क़दम धीरे से रखते, नज़र झुकाते हुए ।

वक़्त थोड़ा सा तो मिल जाता, मनाने के लिए,
फिर से आ जाना यूँ ही, रूठ के जाने के लिए ।

इससे तो तुम ही न मिलते, तो कहीं बेहतर[1] था,
मेरी तनहाई मेरी थी, दर्द भी कमतर[2] था ।

अब तो हर याद चली आती, सताने के लिए,
फिर से आ जाना यूँ ही, रूठ के जाने के लिए ।

अभी तो भूले न होगे, तुम अपनी क़समों को,
संग-संग जीने के वायदे, वफ़ा की रस्मों को ।

कोई तो ख़्वाब बचा होगा, सजाने के लिए,
फिर से आ जाना यूँ ही, रूठ के जाने के लिए ।

आ के तो देख कि, कैसी मेरी गुज़रती है,
ज़िन्दगी तेरे बिना, कैसे आह भरती है ।

अश्क[3] तक भी न बचे, अब तो बहाने के लिए,
फिर से आ जाना यूँ ही, रूठ के जाने के लिए ।

1. अच्छा ; 2. कम से कम (न्यूनतम्); 3. आँसू ।

21.12.2008
सिडनी / बुलन्दशहर

99. सब के सब हैं.....

सब के सब हैं शोक[1] में, काटता सा मौन[2] है,
किससे ऐसे हाल में, बोलता भी कौन है ।
कंठ[3] हैं रूँधे-रूँधे[4], नयन[5] हो रहे सजल[6],
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।

दुश्मनों की चल रहीं, अन्धाधुन्ध गोलियाँ,
आगे बढ़ के खेली हैं, ख़ून भरी होलियाँ ।
डटे रहे हैं तब तलक, प्राण ना गए निकल,
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।

ख़ुद जिए तो क्या जिए, ख़ुद मरे तो क्या मरे,
देश के लिये जिए, न देश के लिये मरे ।
मर मिटे जो देश पर, जन्म हैं वही सफल,
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।

एक माँ के पुत्र सब, माँ तुम्हें रही पुकार,
राष्ट्र से बड़ा न धर्म, क्षेत्र, पंथ, जात-पाँत ।
तुम अदम्य[7] साहसी, दृढ़प्रतिज्ञ[8] और प्रबल[9],
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।

रोम-रोम[10] कह गया, श्वास-श्वास कह गई,
हम तो अब विदा हुए, पर यह साध[11] रह गई।
देश अपना विश्व में, हो महान हो सबल[12],
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।

कोटि-कोटि[13] देश जन[14], कर रहे तुम्हें प्रणाम,
धन्य-धन्य[15] वीरता, धन्य हैं महाप्रयाण[16] ।
आज हर हृदय[17] में तुम, ज्योति[18] बन रहे हो पल,
धीरे-धीरे दीप जल, धीरे-धीरे दीप जल ।

1. दु:ख ; 2. चुप ; 3. गला ; 4. रुका हुआ ; 5. आँख ; 6. पानी से भरा हुआ ; 7. जो दबाया ना जा सके ; 8. प्रतिज्ञा पर अटल रहने वाला ; 9. बलवान, तेज ; 10. शरीर पर छोटा नरम बाल (रोआँ) ; 11. अभिलाषा ; 12. ताकतवर ; 13. करोड़ों ; 14. लोग ; 15. श्रेष्ठ कर्म करने वाला पुण्यवान ; 16. मरण, देहांत ; 17. दिल ; 18. रोशनी ।

26.11.2008 की मुंबई में आतंकी घटना की स्मृति में शहीदों को नमन

25.12.2008
बुलन्दशहर

100. कोई न जाने.....

कोई न जाने इन अधरों[1] का, ऐसे अब फिर कब खिलना हो,
कोई न जाने अब के मिले फिर, कैसे कहाँ पर कब मिलना हो ।

मुझको यूँ तनहा करने वाले, जाते जाते इतना बता,
कौन देश है धाम है क्या, परिचय क्या है नाम है क्या ।

तेरी श्वासों से निसृत[2] हो, भीनी भीनी ख़ुशबू कोई,
तेरी बातें पंचम स्वर सी, कर जाती हैं जादू कोई ।

रूप तुम्हारा झिलमिल झिलमिल, मधुरस[3] की रसखान है क्या,
कौन देश है धाम है क्या, परिचय क्या है नाम है क्या ।

साथ हुए तुम जब-जब मेरे, बढ़ जाते दिल के स्पंदन[4],
पास हुए तुम जब-जब मेरे, हर्षित[5] पुलकित[6] हो मेरा मन ।

पढ़ मेरे नयनों की भाषा, इन सबसे अनजान है क्या,
कौन देश है धाम है क्या, परिचय क्या है नाम है क्या ।

दिन भर तेरे सपने देखूँ, पलकों से मैं पंथ[7] बुहारूँ,
तुमसे लागा ऐसा ये मन, तेरी छवि[8] हर ओर निहारूँ ।

तू ही बता अब तेरे सिवा भी, मेरा कोई अरमान[9] है क्या,
कौन देश है धाम है क्या, परिचय क्या है नाम है क्या?

1. होंठ ; 2. निकलना ; 3. मीठा रस ; 4. धड़कन ; 5. प्रसन्नमय ; 6. ख़ुशी से गद्‌गद् 7. रास्ता, मार्ग ; 8. शोभा, सुन्दरता ; 9. इच्छा, कामना ।

04.01.2009
बुलन्दशहर

101. बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ, बंजारेऽऽ

बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ, बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ,
रहते हम अपनी धुन में, हम ऐसे मतवाले ।

अपने पग[1] रखने से ही, रस्ता खुद बन जाता है,
हिम्मत है किसकी रोके, भय[2] हमसे घबराता है ।

हर जाता पल कह जाता, तू बस चलता जा रे,
बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ, बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ ।

पर्वत[3] के शीश[4] यहाँ पर, किसके आगे झुकते हैं,
आँधी-तूफ़ान कहाँ पर, किसके रोके रुकते हैं।

सीना ताने हम बढ़ते, तूफां सा लहरा रे,
बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ, बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ ।

चीरें[5] हम चट्टानों को, इतना साहस रखते हैं,
दुश्मन भी थर-थर काँपे, इतनी ताक़त रखते हैं ।

जो हमसे दिल हारा है, हम उससे दिल हारे,
बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ, बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ ।

हमने तो अपने मन में, बस इतनी सी ठानी है,
हमको तो आगे बढ़कर, मंज़िल अपनी पानी है ।

साथी सब अपने नभ में, सूरज चंदा तारे,
बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ, बंजारेऽऽ बंजारेऽऽ ।

1. पैर ; 2. डर, ख़ौफ़ ; 3. पहाड़ ; 4. सिर ; 5. फाड़ने की क्रिया ।

26.01.2009
बुलन्दशहर

102. कुछ मिला और कुछ.....

कुछ मिला और कुछ मिल जाए,
कुछ खिला और कुछ खिल जाए ।
जीवन तरू[1] का मानस[2] पंछी,
आतुर[3] स्वर[4] में दोहराए ।

कभी हँसते-हँसते कुछ पाया,
कभी कुछ पाया रोते-रोते ।
कभी हँसते-हँसते कुछ खोया,
कभी कुछ खोया रोते-रोते ।

कभी हँसते-हँसते अश्रु[5] बहे,
कभी रोते-रोते मुस्काए ।
कुछ मिला और कुछ मिल जाए,
कुछ खिला और कुछ खिल जाए ।

कभी सोते-सोते स्वप्न दिखे,
कभी स्वप्न दिखे जागे-जागे ।
कभी सोते-सोते जागे हैं,
कभी सोते हैं जागे-जागे ।

कभी सत्य हुआ कोई सपना,
कभी सच सपना सा भरमाए ।
कुछ मिला और कुछ मिल जाए,
कुछ खिला और कुछ खिल जाए ।

कभी अपने-अपने सभी लगे,
कभी सभी लगे दूजे-दूजे ।
कभी दूजे भी अपने-अपने,
कभी अपने भी दूजे-दूजे ।

कभी अपना दूजा बन जाता
कभी दूजा अपना बन जाए ।
कुछ मिला और कुछ मिल जाए,
कुछ खिला और कुछ खिल जाए ।

कभी भागा-भागा समय लगा,
कभी समय लगा ठहरा-ठहरा ।
कभी ठहरा फिर भागा-भागा,
कभी भागा फिर ठहरा-ठहरा ।

कभी पल बीते एक युग जैसा,
कभी युग पल जैसा बन जाए ।
कुछ मिला और कुछ मिल जाए,
कुछ खिला और कुछ खिल जाए ।

कभी ऊँचे-ऊँचे गिरि[7] लाँघे,
कभी तिमि[8]-अन्तस्[9] गहरे-गहरे ।
कभी अम्बर[10] और ऊँचे-ऊँचे,
कभी थल[11]-अन्तस् गहरे-गहरे ।

कभी डटे रहे तूफ़ानों में,
कभी परछाई से घबराए ।
कुछ मिला और कुछ मिल जाए,
कुछ खिला और कुछ खिल जाए ।

कभी खिला-खिला वन और उपवन,
कभी वन उपवन सूना-सूना ।
कभी खिला-खिला मन का आँगन,
कभी मन-आँगन सूना-सूना ।

कभी पतझड़ में मन-फूल खिले,
कभी ऋतु बसंत में मुरझाए ।
कुछ मिला और कुछ मिल जाए,
कुछ खिला और कुछ खिल जाए ।

कभी उलझे-उलझे प्रश्न मिले,
कभी प्रश्न मिले सुलझे-सुलझे ।
कभी उलझे-उलझे उत्तर थे,
कभी उत्तर थे सुलझे-सुलझे ।

कभी प्रश्न स्वयं ही उत्तर हो,
कभी उत्तर प्रश्न सा उलझाए ।
कुछ मिला और कुछ मिल जाए,
कुछ खिला और कुछ खिल जाए ।

यही पहला स्वर है जीवन का,
जब इस जीवन में श्वास[12] पली ।
यही अन्तिम स्वर भी है इसका,
जब इस जीवन की साँझ ढली[13]

कभी कहते-कहते मौन हुआ,
तब मौन स्वयं[14] कहता जाए ।
कुछ मिला और कुछ मिल जाए,
कुछ खिला ओर कुछ खिल जाए ।

यही कहते-कहते भोर[15] गया,
यही कहते-कहते धूप ढली ।
यही कहते-कहते रात हुई,
यही कहते-कहते रात ढली ।

ये दिवस[16], मास[17], ऋतु[18] वर्ष[19] गए,
ये युग[20] आए और युग जाए ।
कुछ मिला और कुछ मिल जाए,
कुछ खिला और कुछ खिल जाए ।

1. पेड़ ; 2. मन ; 3. उतावला, बेचैन ; 4. आवाज़ ; 5. आँसू ; 6. सपना, 7. पहाड़ ; 8. समुद्र, सागर ; 9. भीतर, अन्दर ; 10. आकाश ; 11. ज़मीन, 12. साँस ; 13. अंत की ओर आना ; 14. ख़ुद ; 15. सुबह ; 16. दिन ; 17. महीना ; 18. मौसम (2 माह की एक ऋतु बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमंत, शिशिर) ; 19. साल ; 20. पुराणों के अनुसार काल का दीर्घ परिणाम कल्प के चार उप विभागों में से एक (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग, कलियुग) ।

07.03.2009
बुलन्दशहर

श्रीमती कुसुम चौधरी

एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत), बी० एड०
प्रधानाध्यापिका, श्रीराम जूनियर हाईस्कूल, मवाना

विजय कुमार सिंह

एम० ए० (हिन्दी), एल एल० बी०
श्रम प्रवर्तन अधिकारी, श्रम विभाग, उत्तर प्रदेश

$Au. 12/-
Rs. 100/-

design@akhil#+91-9412744467